ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ॐ
श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

15 दिसम्बर 2002

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 23 अंक 2

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सदगुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

नववर्ष 2003 की



आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

संत वाणी

यह 'संतवाणी'' सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित राजस्थान पत्रिका में प्रत्येक बुधवार संयुक्त संस्करण में प्रकाशित होती है। राजस्थान पत्रिका, राजस्थान- बैंगलोर- अहमदाबाद आदि स्थानों पर प्रकाशित होती है।

प्रत्येक बुधवार राजस्थान पत्रिका के पेज नं. ४ पर ''संत वाणी'' पढ़ना न भूलें।

'महिमा ज्ञानी सन्त की, कहूं सुनो चित्त लाय। कह टेऊँ तिहँ संग कर, परमानन्द को पाय।।

सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज का कहना है कि संतों की महिमा अपार है। सांसारिक भवसागर को पार लगाने के लिए संतों का संग ही लाभ दे सकता है। संत परमपिता परमेश्वर के बीच सेतु का काम करता है। व्यक्ति को चाहिए कि वो सांसारिक जीवन को जीते हुए भी संतों की वाणी को सुने और उसे मन में धारण करें। उसने उसे धारण कर लिया तो कोई कारण नहीं कि वो परमानन्द को पा सकता है। संतों की महिमा की तो कोई थाह ही नहीं है। वो तो अनन्त है। उनका संग तो लेगा कुछ नहीं बल्कि कुछ ना कुछ देकर ही जाएगा। यही कारण है कि जब भी जिसने संतों का आसरा लिया है अथवा जिनका संग किया है। उसने अपना इह लोक और परलोक दोनों सुधार लिया है। संतों से ही सही मायने में परमपिता का ज्ञान होता है। परमपिता तक पहुंचने के लिए मार्ग भी वह ही बता सकते हैं। उस मार्ग में प्रभु के नाम को धारण करने का नाम ही सत्नाम साक्षी है। संतों में भी ज्ञानी संतों के संग की बात है। कोरा संतों का वेश धारण कर संतों से विपरीत आचरण करने वालों से दूर रहने में ही भलाई है। परमानन्द को पाने के लिए ज्ञानी संतों की महिमा का गान जीवन को आनन्द मय बना सकता है।

-मंत्राक्षर

सत्संग समागम

प्रेम प्रकाश मन्दिर खार मुम्बई में

1 जनवरी से 5 जनवरी, 2003 तक

*समस्त धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश मन्दिर, खार का वार्षिकोत्सव बुधवार १ जनवरी से ५ जनवरी २००३ रविवार तक वर्तमान श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया जाएगा। इस महोत्सव में **आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज,** सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पवित्र जीवन कथाओं का वर्णन किया जाएगा।*

आप सब इस विराट महोत्सव में आकर महापुरुषों की गुण गाथा श्रवण कर अपने जीवन को सफल बनाएं।

कार्यक्रम

1 जनवरी 2003
प्रातः काल सत्संग, हवन व ध्वजा-वन्दन

1 जनवरी से 5 जनवरी
प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग प्रेम प्रकाश मन्दिर, खार

1 जनवरी से 5 जनवरी
सांय ६ से ८ बजे तक सत्संग लोकहित कुटीर १६ नं. रोड़, खार वेस्ट, मुम्बई

5 जनवरी रविवार सायं 8 बजे पल्लव उत्सव की समाप्ति

सेवामें : प्रेम प्रकाश मण्डली, मुम्बई
e-mail : amrapur@vsnl.com
website :premprakashpanth.com

पता : श्री प्रेम प्रकाश मन्दिर, प्रेम सागर रोड नं. 19 वेस्ट, मुम्बई
फोन : 022-6057579, 6057711

ाख्या

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कृत सोलह शिक्षायें

टी-सिख्या

समय का अति कदर करना, खोइये न कुसंग में।
जो बचे व्यवहार से, सो सफल कर सत्संग में।।

सत्‌गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जिनि जे सोरहनि ाख्याउनि में टी सिख्या खे समझण वास्ते पहिरीं सत्संग फ़ज़ जो अर्थ समझणो पवंदो। सत्संग जो लाफ़िज़क अर्थ आहे च जो संग। सचु इहो आहे त हिन सृष्टिअ जी रचना कंहिं क मूल तत्व मां थी आहे। मूल तत्व खे परमात्मा, ईश्वर, ालिक, कुंदरत कुझ बि समझी सघजे थो।

इंसान जी संगत टिन नमूननि झी थींदी आहे–मन, चन एं कर्म सां। अगर इंसान जे मन में इहा पक्की आस्था ऐं श्वास आहे त सबकुझ हिकई परमात्मा जो रचियल आहे त हू न सां कंहिंजो बि बुरो कोन सोचींदो, वचन (वाणी) सां कंहिंखे रो कोन चवंदो ऐं कम (कृत्य) को बुरो कोन कंदो।

सचजो संग करण वास्ते ज़रूरी आहे त इंसान द्वैत ाव (मां ऐं तूं जो विचार) त्यागे ऐं इहो पक्को विश्वास करे कि बकुझ हिक ही परमात्मा जो रचियल आहे, उन परमात्मा खे ाहे केरु भगवान चवे, चाहे अल्ला, चाहे गॉड, चाहे बुध, चाहे ाहिगुरु या बिये कहिं बि नाले सां सदे, इनसा को फ़र्कु कोन ो पवे।

जीअं हर भाषा में हिक ही शइ खे अलग–अलग ालनि सां पुकारियो वञे थो, उदाहरण सिन्धीअ में पाणी, हेन्दीअ में पानी, अंग्रेजी में वाटर ऐं संस्कृत में आप, जो अर्थ ागियो आहे, अहिड़ोअ तरह अलग–अलग मज़हबनि में परमात्मा बे अलग–अलग नालनि सां सदियो वञे थो।

मन में मालिक लाइ पक्को विश्वास ऐं आस्था थियण ां पोइ इसान न त बुरा बोल चवंदो ऐं न बुधंधो, बस हुनजी त इकई लार रहन्दी पंहिंजो पाणखे कीअं सुञाणा ऐं इनलाइ चा वचन बुधण या सच जो रस्तो गोल्हण लाई हू दरबार ऐं टकाणे में वींदो ऐं इहा शुरुआत थींदी सत्संग जी।

सचा वचन बुधण खां पोइ हू सचो कर्म करण शुरु दो जीअं त हुनजो सच सां साक्षात्कार (परिचय) थी सघे। चे कर्म जो अर्थ आहे संग्रह प्रवृति–यानि माल मेरण जी ावना जो त्याग करण। गीता में भगवान श्री कृष्ण चयो आहे त सान न त कुझ खणी आयो ऐं न खणी वींदो, जेकी अजु आहे ो सुभाण बिए कंहिंजे नाले थींदो, पोइ मोह छाजो ?

हिन सिख्या खे समझण वास्ते हाण व्यवहार लफ़्ज़ जो अर्थ समझणो पवंदो। जीअं त गीता में भगवान श्री कृष्ण बुधायो त पंहिंजो कुझ नाहे त पोइ इंसान खे सोचण घुरजे त असीं महिल–माड़ियूं, घोड़ा–गादियूं, माल–असबाब कठा करण में ही सजो वक्तु छो गुज़ारे रहिया आहियूं ? छा असांखे मनुष जी जूण इन वास्ते मिली आहे त असीं मान अपमान रूपी अहंकार में हिक–बिए खां वधीक भौतिक साधन कठा कयूं ऐं इन वास्ते बुरे कर्मनि (कुसंग) जो सहारो वठूं ? न, असांखे पंहिंजे लाइ फक्त ऐतिरो करण घुरिजे जीअं शरीर सघो स्वस्थ रखण वास्ते बिन वक्तनि जो भोजन मिली वञे पर इन लाइ बि बुरो कर्म कोन करणो आहे, चाहे भुख ही छो न मरी वञू। हक़ीक़त इहा आहे त जेको इंसान मन वचन ऐं कर्म सां सच जो संगु कंदो आहे उहो आहिस्ते आहिस्ते उन मंज़िल ते पहुचंदो आहे जित न त कुझ पैदा थींदो आहे ऐं न समाप्त थींदो आहे, इनकरे हू कमाए केतिरो बि पर पाण एतिरो ही पंहिंजे कम आणीदो आहे जेतिरो बिल्कुल ज़रुरी हूंदो आहे, बाकी परिवार, समाज ऐं जगत जे कल्याण वास्ते दींदो आहे। इनसां साफ थी वियो त व्यवहार जो अर्थ आहे फ़र्जु यानि कर्तव्य।

हाण हिन सिख्या जो अर्थ समझण सवलो थींदों इंसान खे जेको वक्तु मिलियो आहे पाण खे सुञाणण वास्ते, आत्म साक्षात्कार वास्ते कमु आणण घुरिजे ऐं मान अपमान रूपी कुसंग, बुड़नि कर्मनि में फासी करे पंहिंजो जीवन (हयाती) अजायो न विञाइण घुरिजे बल्कि व्यवहार यानि फ़र्जु पूरो करण घुरिजे उनखां पोइ जेको वक्तु मिले सच जी खोज सत्संग में लगाइण घुरिजे। हिन सिख्या में इहा समझाणी बि आहे त इंसान खे पंहिंजा ज़रुरी कम यानि पंहिंजा फर्ज़ कर्तव्य छदे करे रुगो सत्संग जो नाटक न करण घुरिजे, पंहिंजो फ़र्जु पहिरीं पूरो कयो ऐं उनखां पोइ जेको वक्तु बचे उहो कुसंग में न लगाए सत्संग में लगायो। भगवान श्री कृष्ण बि पंहिंजा सभेई फ़र्ज़ पूरा कया हुआ ऐं पाण योगेश्वर बि हो। इन समझाणीअ खे समझण खां पोइ आलस सुस्ती छदे पंहिंजे परिवार जे–समाज जे राष्ट्र ऐं मानवता जे प्रति जेकी फ़र्ज़ हुजनि तिनिखे पूरो करियो ऐं जेकी वक्तु बचे सो सत्संग में लगायो।

गोविन्दराम 'माया' जयपुर

कथा शिखरध्वज चूड़ाला

धारावाहिक 24

आत्म तत्व की व्यापकता

महापुरुषों के लिए एक बड़ी तकलीफ है जो बात शब्दों में नहीं कही जा सकती वो ही बात उनको शब्दों में कहनी पड़ती है। हम संसारी जीवों के लिए जो बात अनुभव करने की है उसे अनुभव में किस प्रकार उतारें ये समझाने के लिए संत–महापुरुषों के पास एक ही माध्यम है "शब्द"। संत महापुरुष हमें उन बातों के द्वारा जो हमारे अनुभव की हैं जो प्रत्यक्ष है, जो व्यवहार में देखने में आती है उन्हीं के द्वारा हमें उस अगम वस्तु की उस अगम तत्व की पहचान करवाने की कोशिश करते हैं।

सूक्ष्म बुद्धिः तत्व प्राप्ति का द्वार

हमारी बुद्धि अभी इतनी सूक्ष्म नहीं है, परन्तु जैसे–जैसे इस बात को समझने का प्रयास करते हैं हमारी बुद्धि सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होती हुई तत्व को प्राप्ति की ओर अग्रसर होती है।

"बुद्धि बढ़े वेदान्त विचारे, बुद्धि घटे बहु भोजन खाइए"

अगर बुद्धि को घटाना हो तो बहु भोजन करने से घटती चली जाएगी और अगर बुद्धि को बढ़ाना है तो वेदान्त विचार से बुद्धि बढ़ती जाएगी।

जैसे जिस पदार्थ का, जिस भी वस्तु का उपयोग किया जाता है वो वस्तु चलती रहती है जिसका उपयोग बंद कर दिया जाए तो वो ठप्प हो जाती है, जाम हो जाती है। चलनी वस्तु ठीक–ठीक रहती है इसी प्रकार बिना प्रयोग बुद्धि भी स्थूल हो जाती है जबकि निरन्तर प्रयोग में लाने से बुद्धि सूक्ष्म हो जाती है।

महापुरुषों की बुद्धि सूक्ष्म इसलिए रहती है क्योंकि वे निरन्तर तत्व विचार में लगे रहते हैं और हमारी बुद्धि स्थूल इसीलिए है क्योंकि हमारा जीवन यंत्रवत हो गया है। बस उठना है, खाना है, पीना है, काम करना है, ऑफिस जाना है, वापिस आकर सोना है। अर्थात् एक यंत्र की भांति हम कार्य किए चले जाते हैं। बुद्धि लगाने की जरुरत ही नहीं पड़ती, स्वतः ही दिनचर्या के अनुसार कार्य होते रहते हैं और हम आदतन उन कार्यों को सम्पन्न करते जाते हैं।

हमारे संत गोविन्दराम थे वे सत्संग में बाजा या तबला बजाते थे, बाजा बजता रहता था, तबला बजता रहता था और वे नींद कर लेते थे। प्रत्यक्ष देखी हुई बात है।

कहने का मतलब है कि स्वभाव बन जाने से आदत बन जाने से स्वतः कार्य होता रहता है और हम बुद्धि का प्रयोग भी नहीं करते। परन्तु बुद्धि का सदुपयोग यही है कि हम बुद्धि को सूक्ष्मातिसूक्ष्म बनाकर आत्म साक्षात्कार करें।

बुद्धि से आत्मा का ज्ञान नहीं मिलेगा परन्तु यही साधन है प्राप्ति का, कि बुद्धि को सूक्ष्म करते जाऐं जिससे एकाग्रता स्वतः ही आएगी। और आत्म प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होगा।

तो जैसे गुरु संत महात्मा हमें उस आत्म तत्व के बारे में बताते हैं तो उस तत्व का विचार भी हम करें तभी सूक्ष्म बुद्धि बनेगी। गुरु राजा शिखरध्वज को बता रहे हैं कि आत्म अखंड.............स्वंय प्रकाशी यहाँ तक का प्रसंग पहले होके आया है आज के प्रसंग में वशिष्ठ जी कहते हैं– हे रामजी। याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं– हे भारद्वाज। गुरुमहाराज जी कहते हैं– हे जिज्ञासुओं मुमुक्षुओं।

कण-कण में उसका उजियारा

आत्म अखण्ड स्वयं प्रकाशी घट-घट तां उजियारा है

घट–घट में उसका प्रकाश है, घट–घट में वही बोलता है। ब्रह्माण्ड के कण–कण में उसका वास है। एक कण भी उसके बिना नहीं है।

विचार करें मिट्टी का घड़ा बना है तो घड़े में मिट्टी कहां पर है। ऐसा कोई स्थान नहीं, घड़े में जहाँ मिट्टी न हो।

सोंने के आभूषण में कोई पूछे सोना कहाँ है ? तो क्या कहेंगे– सोना ही है और कुछ तो है ही नहीं। लोहे के आभूषण बने हैं लोहे के शस्त्र बने है तो लोहा कहाँ पर है उसमें, काष्ठ के खिलौने बने है तो काष्ठ कहाँ पर है। उसके एक–एक कण में काष्ठ है। खिलौने बनते है न चीनी के तो उनमें चीनी कहाँ पर है ? खिलौना ही चीनी है तो चीनी खिलौने से अलग नहीं। मिट्टी बरतन से अलग नहीं। शस्त्र से लोहा अलग नहीं। एक ही है।

जब कहते हैं कि वो ही निरगुण निराकार साकार बन गया तो बताओ उस तत्व से अलग तत्व कहाँ है। उस ब्रह्म का ही पसारा है, उस आत्म तत्व का ही सारा पसारा है तो बताओ अलग हुआ क्या ? नहीं !

हर कण में उसका ही उजियारा है

घट-घट में राम बोले, राम बिना कहु न बोले रे

सत्गुरु महाराज जी बताते थे घट–घट में राम बोलता है, घट–घट में वो ही परमात्मा हैं। वो आत्म तत्व एक ही है। जानो तभी भी वो ही है। नहीं जानो तभी भी वो ही है। ऐसी बात नहीं है कि नहीं जानो तो वो नहीं है। आपको नहीं पता चलता तो भी वही है। पर जानना अच्छा है उसको, घट–घट में, कण–कण में, जड़ और चेतन में क्यों कि सभी उसी का रूप हैं, अलग है नहीं।

बह्म ही प्रकृति बना है, परमात्मा ही प्रकृति बना है, प्रकृति से परमात्मा अलग है ही नहीं। प्रकृति परमात्मा का ही व्यक्त रूप है। जैसे ट्यूब लाईट जलती है, पंखा चलता है ये करंट का व्यक्त रूप है। इन्हीं के द्वारा करंट की उपस्थिति का आभास होता है।

ये प्रकृति भी परमात्मा का व्यक्त रूप है, जो उससे अलग नहीं है और ये बनी ही परमात्मा से है उसमें परमात्मा का वास होगा या नहीं होगा। बताओ ? प्रकृति बनी भी परमात्मा से है और उसको बनाने वाला भी परमात्मा है अर्थात् उपादान कारण और निमित्त कारण दोनों ही परमात्मा है तो फिर घट–घट में उसी का उजियारा है अर्थात् घट–घट में वो व्यापक हैं। व्यापक है तो उसके खण्ड नहीं हो सकते।

अजर–अमर अविचल अविनाशी
साक्षी सिरजनहारा है

अजर है अर्थात् जिसको जलाया नहीं जा सकता।

आत्म तत्व की विलक्षणता

नैनं छिन्दन्ति शास्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
अर्थात् उसको आग जला नहीं सकती। वो अजर है।

जला जिसको सकते हैं, कोई वस्तु हो तो जला सके ना। हवा को क्या जला सकते हैं या आकाश को जलाया जा सकता है। जब आकाश और हवा जैसे जड़ तत्वों को ही नहीं जलाया जा सकता फिर उस आत्म तत्व को कैसे जलाया जा सकता है।

ऐसा भी नहीं कि जहाँ पर जलता है वहाँ से आकाश तत्व गुम हो जाएगा, ऐसा कभी हुआ नहीं, आकाश सदा सर्वत्र एकरूप रहता है।

विचार करें जब वो व्यापक है, सर्वत्र है, सदैव एक रस है, न तो उसका आदि है न अंत है, सत् स्वरूप है तो अमर हुआ कि नहीं हुआ।

सत्य की परिभाषा क्या है ?

नासतो विद्यते भावो। नाभावो विद्यते सत्।।

ना तो असत्य का कभी भाव (अस्तित्व) होता है और न ही सत्य का कभी अभाव होता है। सत्य सदैव एक जैसा रहता है जो तीनों काल में एक जैसा रहे वो सत्य। और जो तीनों कालों में एक जैसा रहता है वो स्वतः ही अजर, अमर, अविचल हुआ।

शंकर भगवान भी माता पार्वती को समझाते हैं

कि– **अमर आत्मा देह अनात्म आत्म रूप तुम्हारा ।**

आत्म दृष्टा देह दृश्य है आत्म सबसे न्यारा।

इन्द्रिय अगोचर आत्म है ये मन बुद्धि लखे न बानि

हे पार्वती। वो आत्मा अमर है, अजर है, अविचल है। जो चलायमान नहीं है। चलायमान तो वो होता है जो एक जगह पर होवे और दूसरी जगह पर नहीं होवे। फिर तो एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए हिलने डुलने की जरुरत हो जो सर्वत्र व्यापक है। उसको कहीं आना जाना पड़ेगा क्या ? आत्मा अविचल है। शान्त स्वरुप है वो। श्री कृष्ण ने श्री गीता में कहा है कि उसको कोई जला नहीं सकता अविचल है वो अचल है। क्यों कि व्यापक होते ही, सत्य होते ही ये बात सिद्ध हो जाती है कि वो अमर है, अविनाशी है, अचल है। व्यापक होने से उसके खण्ड नहीं हो सकते, व्यापक होने से वह अविचल हो गया और सत्य स्वरूप होने से वो अजर और अमर हैं।

अजर, अमर, अचल, अविनाशी

जिसका कभी भी नाश हो नहीं सकता। वो आत्म है।

नायम् हन्यते हन्यमाने शरीरे

गीता में भगवान कहते हैं।

नायम् हन्यतेः ये जो आत्मा है, नहीं मारा जाता है **हन्यमाने शरीरे** – शरीर के मरने से।

अर्थात शरीर के मरने के पश्चात् भी ये मरने वाला नहीं है। इसका विनाश होने वाला नहीं, तो अविनाशी है, इसलिए साक्षी सिरजनहारा है।

साक्षी है यानि चेतन है।

साक्षी अर्थात् दृष्टा। हम सभी को उस सत्ता से सब चीज पता चलती हैं और अन्दर से वो ही आवाज आती है कि ये बात करो ये बात नहीं करो।

तो वो साक्षी स्वरूप हमारे सभी कर्मो का दृष्टा, हमारे अंतर में विराजमान हमें प्रत्येक स्थिति से हमें अवगत कराता है पर हम मन के अधीन होने के कारण उसकी बात को सुनते नहीं, उस बात पर चलते नहीं और दुःख पाते हैं।

साक्षी है, सिरजनहारा हैं अर्थात् सारा को करने वाला वो ही है उससे ही सृजन हो रहा है औ जिन्होंने पहचान लिया वो ये ही कहते हैं– **''साक्ष सिरजनहार सा थई जात असांजी''** कैसा है जिन्होने जाना, जिन्होने पहचाना अपने आप को उद्घोष निकल आया कि अहम् ब्रहास्मि।

मैं ही ब्रह्म हूँ, मैं ही आत्मा हूँ। उनका उद्घो निकल आया कि साक्षी सिरजनहार तो मैं हूँ औ कोई मुझसे अलग नहीं। जिन्होने ज्ञान की पराकाष्ठ को प्राप्त किया है वो ये जानते हैं कि हमारी जात व ही है, साक्षी सिरजनहार है, हम मरने वाले नही अजर–अमर–अविनाशी है। अचल है, अविचल है सच्चिदानंद स्वरूप है, अखण्ड है, स्वयं प्रकाशी है सब जगह व्यापक हैं। हमें, ऐसा बोध हो जाता है फिर। वो कहते हैं साक्षी सिरजनहार। जो शरीर है ये पांच तत्वों से निर्मित हुआ है।

पाँच तत्वों का तन रचा है, जहाँ से ये उत्पन्न होता है फिर उसी में लीन हो जाता है। ये पांच तत्व जो बनते हैं फिर वो लीन हो जाता है। और वो आत्मतत्व सदैव एक जैसा तो साक्षी सिरजनहार वो ही मेरा स्वरूप है। राजा शिखरध्वज को गुरुदेव समझाते हुए बता रहे हैं कि वो आत्मा अखण्ड अविचल, स्वयं प्रकाशी, घट–घट व्यापक है। साक्षी सिरजनहारा है ऐसा वो आत्म तत्व है। जब ऐसा विचार करते बुद्धि सूक्ष्म होगी और जहाँ बुद्धि गुम हो गई उस तत्व की शुरुआत होती है फिर। एक रास्ता छूटेगा, एक सीढ़ी छूटेगी तभी दूसरी सीढ़ी आऐगी

हम भी जब इन बातों को समझेंगे तभी हमारे कल्याण का मार्ग खुलेगा।

दयाके समान न धर्म है, न दया के समान तप है, न दया के समान दान है और न दया के समान कोई सखा है। जो मनुष्य दुःखी जीवों का उद्धार करता है, वही संसार में सुकृती-पुण्यात्मा है।

पुरस्कृत निबन्ध

तृतीय पुरस्कार विजेता

सद्‌गुरु टेऊँराम जीवन दर्शन

उपरोक्त विषयानुसार महापुरुषों का जीवन दर्शन या जीवन चरितामृत से क्या शिक्षाऐं मिलती हैं ? या क्या समझते हैं ? महापुरुषों का जन्म धरती माता (धरा) पर क्यों होता है ? उनका अवतार का क्या उद्देश्य है ? क्यों अपने जीवन में इतने सारे कष्टों को सहन करते हैं ? आखिरकार तो कोई कारण होगा उनके अवतार का। इन जिज्ञासा पूर्ण प्रश्नों का जवाब हमें महापुरुषों के जीवन चरितामृत से मिलता है। उनके जीवन से हमें बहुत सारी शिक्षाएँ मिलती हैं जिन्हें हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए।

महापुरुष दुनियाँ में बड़े काम को आते हैं।
मिटाते हैं खौफ मरने का अमर होना सिखाते हैं।।

महापुरुषों का अवतार सत्य का प्रकाश संसार में फैलाने के लिए ही होता है। मानव मन सहज ही सांसारिक आकर्षण की तरफ खिंच जाता है। मन की दिशा को संसार से मोड़कर उस प्रभु परमात्मा की तरफ लगाने का पावन कार्य उन महापुरुषों के द्वारा किया जाता है। अपनी जीवन लीलाओं के द्वारा महापुरुष हमें सत्य की ओर चलने को प्रेरित करते हैं। मानव जीवन का लक्ष्य है परमशान्ति को प्राप्त करना। परमशान्ति की प्राप्ति तभी सम्भव है। जब सांसारिक विषयों से मन हट जाए, और मन को हटाने का उपाय है निरन्तर विचार शक्ति को जागृत करना। विचार के दीपक द्वारा मिथ्या माया के अन्धकार को दूर किया जा सकता है, और शुभ विचारों का उदय होता है। सन्त महापुरुषों के संग से, जो अपनी वाणी के द्वारा निरन्तर अज्ञान भ्रम का निवारण करते हैं। इसी पावन उद्देश्य को लेकर सन्त समागम का अवतार इस धरा पर होता है।

जब जब होइ धर्म की हानि, बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।
तब तब धर प्रभु विविध शरीरा, हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा।।

जब जब इस धरा पर धर्म का विनाश होता है। अधर्म व असुरों का प्रकोप (पाप) बढ़ता है। तब तब विभिन्न रूपों में प्रभु आकर इन पापों से धरती माता को या सज्जन लोगों को छुटकारा दिलाते हैं। धरती माता इन पापों से मुक्ति पाती है। भगवान धार्मिक मनुष्यों की रक्षा व सहायता के लिए ही अवतार लेता है। धर्म की रक्षा के लिए ही समय समय पर अवतरित होते आये हैं। धर्म की रक्षा के लिए स्वयं भगवान को इस धरातल पर आना पड़े यह कोई साधारण बात नहीं। मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के वश में पड़कर मर्यादाओं का उल्लंघन कर संसार चक्कर में भटकता फिरता है।

उपदेश सुना प्यारे, क्यों आये हो जग में तुम देखः विचारे।
यहाँ अमृत था पीना, सो तुमने नाही पिया, विष विषयों मन दीना।।

पहले से ही महाभारत, रामायण, के युग से प्रभु ने विभिन्न रूपों में (श्रीकृष्ण अवतार, श्रीराम अवतार) आकर धर्म की रक्षा की। महाभारत काल में जब कौरवों का अत्याचार बढ़ गया था। धर्म की हानि होने लगी तब श्री कृष्ण भगवान के रूप में आकर अत्याचारों का समापन किया। रामायण काल में रावण असुर का अहं बढ़ गया था और ऋषि मुनियों और महात्माओं की तपरया में विघ्न बढ़ने लगा तब श्री राम भगवान ने आकर रावण को समाप्त किया। ईश्वर विभिन्न या नाना प्रकार के रूप में आकर धर्म की रक्षा करते हैं। ऐसे कई उदाहरण है जिनसे हमें यह मालूम चलता है जब जब धर्म पर विपदा आती है। तब-तब विभिन्न रूप में आकर प्रभु हमारी रक्षा करते हैं।

हर युग या हर काल में ईश्वर (प्रभु) ने अवतार लेकर अधर्म का नाश किया और धर्म का प्रकाश फैलाया। सत्य का मार्गदर्शन किया। इन्ही महापुरुषों में आचार्य १००८ सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी का नाम अग्रणीय है।

अवतरण एवं बाल्यकाल: विश्व विख्यात भारत वर्ष का अंश विशाल सिन्धु दरिया ही जिसका हृदय है, जिसका प्रसिद्ध नाम सिंधु देश है। ऐसे रमणीय और समृद्धि सम्पन्न सिंध देश के प्रमुख नगर हैदराबाद जिले के अन्तर्गत ''खण्डू'' नामक गाँव में धनजानी कुलोत्पन्न, भाग्यवान दम्पत्ति श्री चेलाराम एवं धर्मपत्नी, श्रीमती कृष्णा देवी ऐसे पवित्र कुल में स्वामी जी का जन्म हुआ था।

परम पूजनीय स्वामी जी का जन्म ६ जुलाई सन् १८८७ में शनिवार के दिन प्रातः ५ बजे फुलवंशी, क्षत्रिय कुल में हुआ था।

निर्गुण पूरण पारब्रह्म, जो सत् चिन्त सुखधाम।
हे कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊँराम।।

स्वामी जी का जन्म हरिद्वार से आए साधु महात्माओं के आशीर्वाद से हुआ था। और माता कृष्णा के चालीस दिन तक उपवास के उपरान्त परमात्मा ने माता को स्वप्न में कहा - हे कल्याणी मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ और संकल्प शीघ्र ही पूर्ण होगा।

जन्म लहण सां थी रोशनाई, दुविधा उँधहि वयड़ी,
सूरज वांगुरू उभिरी जग में, कुलु अन्धिकार मिटायो।
जन्म लही अजु जोगी आया, टेऊँराम आ नालो जंहिजो
सभजे मन खे भायो।

उपर्युक्त पक्तियाँ जो कि (सिन्धी) में संकलित है। अर्थात :- स्वामी जी के जन्म से चारों तरफ प्रकाश फैल गया। दुविधा का समापन हो गया। स्वामी जी सूर्य के समान तेजस्वी थे। जैसे सूर्य की किरणों के आगमन से अन्धकार दूर हो जाता है उसी प्रकार से स्वामी जी के आगमन से आस-पड़ौस के व्यक्ति, सम्बंधी एवं सत्संगी बालक का सौम्य एवं हंसमुख चेहरा देखकर तथा प्यारी तोतली बोली सुनते थे तो उनका चिंतारूपी अंधकार निवृत हो जाता था। सब ऐसा महसूस करते थे कि हमारे घर में साक्षात् वैकुण्ठनाथ अवतार लेकर आये हैं। सबका ह्रदय गुलाब के फूल के समान खिल उठता था।

स्वामी जी का छठवे दिन नामकरण संस्कार हुआ। स्वामी जी का नाम ''टेऊँराम सुखदायी'' रखा गया। स्वामी जी का नाम सुनते ही सबने स्वामी जी की जय जयकार की।

जब स्वामी जी ने बोलना आरम्भ किया था तो सबसे पहले माता ने राम का नाम बोलना सिखाया। फिर धीरे-धीरे और शब्दों का परिचय कराया। जब माता कृष्णा प्रातः काल, चार बजे उठकर चक्की पीसते हुए स्वामी जी को कबीरदास का भजन गाकर सुनाती थी।

''लागी लागी शब्द की चोट तन में''।
चार बरस में चानण होया, जैसे चाँद सितारों में,
दादाजी की वाणी सुनकर गद् गद् गफ्तारों में।
और सुना अब और सुना कह अम्मा को इशारों में।।

स्वामी जी ने चार वर्ष की आयु में चलना सीखा था। माता कृष्णा को अपनी भाषा में कहते थे अम्मा (माता) मुझे यह भजन और सुना। इस प्रकार बाल्यकाल से ही स्वामी जी राम नाम का ही स्मरण करते थे।

स्वामी जी के बाल्यकाल अवस्था में ही ऐसी चमत्कारिक शक्तियाँ थी जिनसे यह बोध होता था कि यह कोई साधारण बालक नहीं है। यह तो स्वयं भगवान का अवतार लेकर सिन्धु प्रदेश को पापों से छुटकारा दिलाने के लिए आए हैं। ऐसी अनेक घटनाऐं हैं जिनसे हमें यह बोध होता है कि वास्तव में ही कोई ईश्वरीय शक्ति काम कर रही है। जहाँ पर सत्संग होता था वहाँ सब बच्चों को अपने साथ लेकर जाते थे। बचपन से ही ईश्वर की लगन लगी हुई थी।

ऐसी ही एक घटना है। स्वामी जी ८-६ वर्ष की आयु में सब साथियों को साथ लेकर नदी के किनारे खेलने के लिए गए। सब बच्चों ने मिलकर रेत से अपना अपना घर बनाया। और स्वामी जी ने भी अपना घर बनाया। फिर सब बच्चों से कहने लगे कि अपने-अपने घर के पास बैठकर समाधी लगाओ और ''राम'' नाम का स्मरण करो। करीब आधे घण्टे (३० मिनट) पश्चात् सब बच्चों से कहा कि अब नदी में नहाकर सब घर चलेंगे। रीझू नामक बालक ने कहा हम कपड़े उतारकर रखें और कोई ले जाये तो तब स्वामी जी कहने लगे पहले आप नहाकर आओ हम बाद में नहायेंगे। आप लोगों के कपड़ों की देखभाल करेंगे। एक खिल्लू नामक बच्चा पानी में चला गया और डूबने लगा। यह देखकर सब बच्चे चिल्लाने लगे, बच्चों का शोर सुनकर स्वामी जी वहाँ आ पहुँचे, तब स्वामी जी ने कहा चिल्लाओ मत ऐसा कहकर नदी में कपड़ो सहित कूद पड़े और अन्दर चले गये। यह देखकर बच्चे और अधिक रोने लगे। लेकिन सात आठ मिनट पश्चात् स्वामी जी खिल्लू को हाथ से पकड़कर बाहर निकल आये।

खिल्लू को जब ले चली, प्रबल सिंधु की धार।
सत्‌गुरू टेऊँराम ने, तत्‌क्षण लिया उबार।।

सब बच्चों ने खिल्लू व स्वामी जी को देखकर प्रसन्नता से तालियाँ बजाई, बच्चों ने स्वामी जी से पूछा आपने खिल्लू को कैसे बाहर निकाला ? तब स्वामी जी कहने लगे, खिल्लू से पूछो। खिल्लू कहने लगा - जब मैं गोते खा रहा था उसी समय एक देवता ने मुझे हाथ से पकड़कर अपनी गोद में बैठाया, इतने में स्वामी जी वहाँ आ

हुंचे, तब स्वामी जी और वह देवता परस्पर प्रेम पूर्वक मिले और वह देवता कहने लगा कि मेरे बड़े भाग्य है जो आपका र्शन पाया है। इस वक्त मैं आपकी क्या सेवा करूं ? हमारी रफ से यही आपसे कहना है कि जब भी कार्य हो तो हमें ाद करके सेवा करने का अवसर प्रदान करें। आपसे बहुत समय पश्चात् मिलाप हुआ है। इतना सुनकर वह देवता वामी जी से मिलकर अर्न्तध्यान हो गया।

अब बालक पूछने लगे, स्वामी जी वह देवता कौन ा ? इस पर स्वामी जी हँसकर कहने लगे वे हमारे प्रियतम मित्र ''वरुण देवता'' थे। खिल्लू व अन्य बालकों घर जाकर अपने माता पिता को यह बात बताई जिसे सुनकर सब आश्चर्य में पड़ गये। इस प्रकार स्वामी जी कभी नहर के किनारे, कभी नदी के किनारे, कभी उद्यानों रामनाम की धुनि लगाते थे।

उल्लेखनीय घटना से यह सम्बोधन होता है कि वामी जी कोई साधारण नहीं थे। वो तो कोई ईश्वरीय का रूप का अवतार लेकर आए थे। इस घटना के पश्चात् पिता चेलाराम भक्त जी ने ८-६ वर्ष की आयु में स्वामी जी को पाठशाला में पढ़ने के लिऐ भेजा। पहले दिन अध्यापक स्वामी जी को पट्टी पर कुछ अक्षर लिखकर दिये और कहा कि ये अक्षर याद करो। गुरु महाराज जी (स्वामी जी) पट्टी लेकर एकान्त स्थान में जाकर पट्टी अलग रखकर अपनी मौज में आकर भजन गाने लगे। भजन सुनकर पाठशाला के विद्यार्थी और अध्यापक इकट्ठे हो गये और भजन सुनने लगे। अध्यापक प्रेम में इतने तन्मय हो गये कि बच्चों को पढ़ाना ही भूल गये।

दूसरे दिन भी अध्यापक ने पट्टी लिखकर दी और याद करने के लिए कहा। स्वामी जी ने पट्टी लेकर एकान्त में जाकर कुछ लड़कों को बुलाकर पूछा कि आप लोगों ने या क्या पढ़ा है ? उन्होने जो कुछ पढ़ा था वो पढ़कर सुनाया तब गुरू महाराज जी (स्वामी जी) हँसकर कहने लगे, आपने बहुत अच्छा पढ़ा है। पर एक शब्द अभी तक नहीं सीखे हैं, इस पर विद्यार्थी पूछने लगे कि वो अक्षर कौन-सा है ?

जितनी विद्या जगत की, सो सब अविद्या रूप।
तांको तज इक ओम् का, स्मरण करो अनूप।।

वही एक आदि अक्षर जीव को पढ़ना चाहिए, जिससे यह संसार पैदा हुआ है इस परिपूर्ण परमात्मा से ही यह जगत् उत्पन्न हुआ है। चौरासी लाख योनियाँ और आश्चर्यजनक यह प्रकृति पैदा हुई है। स्वामी जी ने कहा यह वही अक्षर है, जिसका चारों दिशाओं में चमत्कार दिखाई देता है।

जब स्वामी जी भजन गाने लगे तो फिर वही पहले जैसा हाल हुआ। यह वार्ता पूरे शहर में फैल गई कि दो दिन से अध्यापक पाठशाला में बच्चों को पढ़ाते ही नहीं हैं। इस पर गाँव के तीन-चार आदमी सरपंच के साथ पाठशाला में आये और अध्यापकों को कहने लगे कि यह बात उचित नहीं है कि सारा दिन पाठशाला में सत्संग होता रहे और बच्चों की पढ़ाई में बाधा बनी रहे। बच्चों को अच्छी तरह शिक्षा दी जाय तो ठीक है। वरना हम अफसरों को पत्र लिखकर अन्य अध्यापकों को बुलायेगे। अध्यापकों ने कहा कि आप कोई विचार न करें आज से हम बच्चों को अच्छी तरह से पढ़ायेंगे, इस विश्वास कर सब लोग वापिस अपने घर चले गए।

तीसरे दिन अध्यापक ने पट्टी लिखकर दी। स्वामी जी पट्टी लेकर पाठशाला से निकलकर ठाकुर गिरिजी के बाग में पहुँचकर वहाँ पर आँखें बदं कर प्रभु के ध्यान में बैठ गए। स्वामी जी शाम तक वापिस घर नहीं आए। माता कृष्णा ने भक्त जी को बताया कि स्वामी जी घर पर नहीं आए हैं आप पाठशाला जाकर पूछ कर आएं। अध्यापक ने भक्त जी से कहा कि हमने पट्टी लिखकर दी थी उसके उपरान्त मुझे मालूम नहीं है कि बालक कहाँ चला गया। ऐसा जवाब सुनकर भक्तजी स्वामी जी को ढूँढने के लिए चल पड़े। नदी के किनारे, बगीचों में ढूँढते हुए लोगों से पूछने लगे, तब एक सज्जन ने बताया कि आपका बालक बाग में आम के वृक्ष के नीचे आँखें बंद करके बैठा है। भक्त जी उसी स्थान पर गए जहाँ पर स्वामी जी बैठे थे। पिता जी को देखकर स्वामी जी ने प्रणाम किया। भक्त जी स्वामी जी से पूछने लगे कि पाठशाला छोड़कर यहाँ बैठकर क्या कर रहे थे ? दिन में भोजन करने क्यों नहीं आए ? तब स्वामी जी ने नम्रतापूर्वक जवाब दिया कि पाठशाला में बहुत शोर था। इसलिए यहाँ एकान्त में आकर बैठा हूँ। बाद में समय का ध्यान नहीं रहा। भक्त जी स्वामी जी को घर लेकर आए। माता कृष्णा ने स्वामी को बड़े प्यार से गले लगाया और गोद में ले कर प्यार से पूछने लगी। स्वामी जी ने वही जवाब दिया जो पिता जी को दिया था।

अगले दिन भक्त जी बालक को साथ लेकर स्वयं पाठशाला गए। अध्यापक से कहा मेरे बालक का ध्यान रखना। अध्यापक महोदय ने फिर पट्टी लिखकर दी और स्वामी जी पट्टी लेकर नदी के किनारे आ पहुँचे और पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान में लीन हो गए। किसी समय स्वामी जी भजन गाते थे और किसी समय भगवत् ध्यान में लीन रहते थे इसी प्रकार पूरा दिन वहीं बैठे रहे।

माता कृष्णा आज फिर स्वामी जी की राह देखती रही, स्वामी जी आज भी घर नहीं आए इस पर माता जी ने दुकान पर जाकर टहलराम से कहा (स्वामी जी के बड़े भ्राता) स्वामी जी अभी तक घर नहीं आया है। टहलराम जी ढूँढने चले गए परन्तु स्वामी जी का मालूम नहीं चला। शाम को भक्त जी घर आये सबको चिन्तित देख कारण पूछने लगे कि माता कृष्णा ने रोते हुए कहा कि बालक (स्वामी जी) घर पर नहीं आया है।

भक्त जी दो चार सत्संगियों को लेकर ढूँढने के लिए चल पड़े नदी के किनारे, बगीचों में, नहर के किनारे, शमशानों में, परन्तु स्वामी जी का कुछ पता नहीं चला। भक्त जी ढूँढते हुए सालारे गाँव के प्रेम नगर दरबार में पहुँचे वहाँ भक्त आयलदास जी रहते थे। चेलाराम जी ने सारा वृतांत उन्हें कह सुनाया। सन्त जी ने कहा कि आप चिन्ता मत कीजिए बालक स्वयं घर आ जायेगा। रात तक स्वामी जी घर वापिस नहीं आए माता कृष्णा बिना भोजन किए पूरी रात जागती रही।

अगले दिन भक्त जी ढूँढने के लिए नहर के किनारे चल पड़े वहाँ पर एक ग्वाले को खड़े पाया उससे पूछने पर मालूम चला कि संध्या के समय आपका बालक (मन जीव) पीपल के वृक्ष के नीचे गाते हुए देखा था। भक्त जी वहीं पहुँच गए वहाँ पाया कि बालक ध्यान ग्रस्त है। भक्त जी पास आकर पुत्र (स्वामी जी) को पुकारा– स्वामी जी ने विनम्र भाव से प्रणाम किया। भक्त जी बालक को (स्वामी जी) घर वापिस लेकर आया। माता कृष्णा ने बालक से प्यार से पूछा तुम सारे दिन व रात कहाँ थे। स्वामी जी ने जवाब दिया कि माता मैं अविनाशी घर को सुधारने में लगा हुआ हूँ आप मुझे मत रोकिए कब किस समय काल का घेरा आ जाए कुछ पता नहीं है। माता आप मुझे अपना अविनाशी घर सुधारने दीजिए।

बारह बरस में भोग ज्वाला, उमड़ पड़ी थी, आहो में।
कब गांवों में, कब राहों में, कब दरखत की छांवों में।
कब मरघट में, कब कब्रस्तान, कब गिरकी बैठ गुफाओं में,
भूल गए सब खाना पीना, ज्ञान सुबह नहीं शाम का।
नगर नगर में नाद बजाया था, साखी सतनाम का।।

भक्त जी ने बालक को (स्वामी जी) आज्ञा दी कि तुम घर पर ही रहकर सन्त महापुरुषों की सेवा करो और घर का पानी भरो। पिताजी की आज्ञानुसार स्वामी जी घर पर ही सन्त महापुरुषों की सेवा में लगे रहे, और कुएं से पानी भरते रहे। कोई भी पानी भरने के लिए आता था स्वामी जी रहट चलाकर स्वयं भरकर देते थे। बाद में स्व अपना भरते थे। इस प्रकार स्वामी जी ध्यानपूर्वक से सं महात्माओं की प्रेम व श्रद्धा के साथ सेवा करते थे। ज स्वामी जी की १० वर्ष आयु थी तब ग्वालानन्द जी सिन्ध आषाढ़ चन्द्र की १३ तारीख तद्नुसार आषाढ़ शुक्ल प पूर्णिमा सन् १८६७ पाँचवे पुत्र के रूप में हुआ था।

बालक ग्वाललाल भी स्वामी जी की तरह निर्म और शान्त स्वभाव के थे। इस प्रकार पूरा घर स्वर्ग ब गया था। स्वामी टैऊँराम जी का जन्म इस धरती पर सत का प्रकाश फैलाने के लिए हुआ था। मानव मन को प्र भक्ति में लगाने के लिए हुआ था। जो इस जग के दाता उस परमात्मा को सबको याद करवाने के लिए हुआ था स्वामी जी ने भजन व सत्संग के माध्यम से मानव को सह मार्ग दर्शन करवाया। जन मानस को अधर्म व अंधविश्वास से दूर रहने को कहा। स्वामी जी का अवतार जगत क सत्य का मार्ग दर्शन देने के लिए हुआ था।''

चाह नहीं चिन्ता नहीं मनवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिए, सो शाहन का शाह।

ऐसे हमारे परम पूजनीय स्वामी टेऊँराम जी थे जिन किसी बात की चिंता नहीं रहती थी। स्वामी जी का विश्वा था कि सब कुछ वही परमपिता परमेश्वर ही करते हैं वे स कुछ जानने वाले हैं। जो भी वो करते हैं सबके भलाई के लि ही कार्य करते हैं। स्वामी जी सत्संग में हमेशा कहते थे कि प्र सब जगह व्यापक हैं। सदैव ईश्वर से यही प्रार्थना करते कि सभी को सद्बुद्धि दो, ताकि मानव सत्यधर्म पर चलते हु सच्चे कर्त्तव्यों का पालन करते हुए अपने निश्चित जीवन क सफर शान्ति से पूर्ण कर सके।

दीक्षा एवं गुरु सेवा :– स्वामी जी १३-१४ वर्ष के थे तो स्वामी आसूराम जी खण्डू गाँव में पाठशाला के

प्रधानाध्यापक बनकर आये थे। भक्त चेलाराम जी की सेवा एवं प्रशंसा सुनकर घर पहुँचे। भक्त ने आदरपूर्वक उनको आसन पर बैठाया और प्रेम तथा श्रद्धा के साथ सेवा में तल्लीन हो गये। स्वामी आसूराम जी ने शाम के समय बड़े प्रेम से सत्संग किया। उनका प्रेम और अनुभवी सत्संग सुनकर भक्त चेलाराम जी ने प्रार्थना की भगवन् ! कृपया प्रतिदिन यहाँ पर आकर अपने मधुर वचनामृत के द्वारा हम लोगों को कृतार्थ करें जिससे हमें और सत्संगियों को बड़ा आनन्द मिल सके। स्वामी जी बड़े प्रेम तथा आदरपूर्वक सत्संग सुनते थे।

दैवयोग से एक दिन सद्‌गुरु करने की आवश्यकता पर सत्संग हुआ। इस विषय से सन्तों ने कहा कि बिना गुरु के आत्मा का साक्षात्कार नहीं होता है। स्वामी जी के ऊपर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। क्योंकि स्वामी जी को बचपन से ही ईश्वर भक्ति सम्बन्धी वातावरण प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप स्वामी जी ने चौदह वर्ष (१४ वर्ष) की आयु में विधिपूर्वक स्वामी आसूराम जी को अपना गुरु बनाया। माता कृष्णा और भक्त चेलाराम जी बड़े प्रसन्न हुए।

जागो माता कृष्णा जो पूर्व जन्म
वरितो स्वामी टेऊँराम गुरुअ जो नालो

स्वामी जी गुरुजी के सानिध्य में रहकर भूख-प्यास दुःख-सुख, सर्दी-गर्मी आदि कष्टों को सहन करते हुए प्रभु भक्ति में लीन रहे। गुरु को ही वो अपना प्रभु परमात्मा मानते थे।

युवावस्था :- स्वामी जी १६ वर्ष की आयु तक सन्तों व महात्माओं की सेवा करते रहे। जब स्वामी जी की १६ वर्ष की आयु थी तब भक्त चेलाराम जी का शरीर ढीला g k s p y k F k 11 को (सन् १६०३) में भक्त जी ने सब सत्संगियों और प्रेमियों को बुलाकर कहा कि प्रिय सज्जनों सिन्धी 17 (१७) को प्रातः ४ बजे इस नाशवान शरीर रूपी चोले को त्याग कर अपने अविनाशी घर में जाकर बसेंगे। सब सज्जन प्रेमी भक्त जी से कहने लगे कि अपने बदले किसी का सहारा दे जाओ जिसका आश्रय लेकर हम भवसागर से पार हो जाएं। सब प्रेमियों के आँखों में आँसू थे।

प्रेमियों की विनती सुनकर चेलाराम भक्त जी अपने समीप बैठे स्वामी जी का हाथ पकड़ कर बोले कि मेरे स्थान की पूर्ति यह बालक करेगा। यह आप लोगों की मन की इच्छाऐं पूरी करेगा। भक्त जी ने स्वामी जी को भजन गाने को कहा। स्वामी जी ने निम्न लिखित भजन गाया :-

रही राम नाम खा न्यारो तूँ
छो जनमु विञाई सारो तूँ
चवे "चेलो" सुन्दर वेलो अथी
मिलो मनुष जनमु सुहेलो अथी।
हिकि घड़ी पलक जो मेलो अथी,
वठु साध संगति जो लारो तूं।।

उपर्युक्त भजन स्वामी जी ने अपने पिताजी को सम्मानित करने के लिए उनका नाम लेकर जब समाप्त किया तो सब सत्संगी प्रसन्न हुए। इसके उपरान्त भक्त जी सब प्रेमियों से विदा माँगने लगे तथा शिवोऽहम्" की धुनि लगाते हुए ठीक चार बजे देवलोक पधार गए। विधिपूर्वक भक्त जी का दाह संस्कार किया गया। अब स्वामी जी के ऊपर कार्य का भार आ गया। स्वामी जी दुकान का कार्य सम्भालते थे। टहलराम (स्वामी जी के बड़े भ्राता) बगीचे और खेती बाड़ी का कार्य देखते थे। स्वामी ग्याललाल जी सन्तों की सेवा करते थे। स्वामी जी अब खुलकर सत्संग करते थे।

भरे पीउ प्रेम जो प्यालो, रही संसार खां निरालो।
हरीअ साँ हेत लाए वठु, भली तूँ मस्त मतवालो।।

उपर्युक्त पक्तियाँ सिन्धी में संकलित है। इसका अर्थ है कि संसार से हटकर एक प्रेम का प्याला पीकर प्रभु परमात्मा से ही अपना ह्रदय लगाओ। प्रभु भक्ति में इतने लीन हो जाओ कि तुम्हें संसार का कोई भी ध्यान ही न रहे।

जब स्वामी जी इकतारा लेकर गाते थे तो नागरिकगण अपना अपना कार्य छोड़कर स्वामी जी के भजन में मस्त होकर1 झूमने लगते मानव तो क्या पशु पक्षी भी आकर उनका भजन सुनने लगते थे।

स्वामी जी अपने सत्संग में मानव को यही शिक्षा देते थे कि मानवता से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। कुदरत ने इस पृथ्वी पर करोड़ों जीव जन्तु पैदा किए हैं। केवल मनुष्य ही अलग-अलग धर्म में बहा है। क्या पेड़ पौधे, पशु पक्षियों में धर्म का विभाजन हुआ है ? फिर मनुष्य को ही क्यों अलग धर्म में बाँटा गया है।

स्वामी जी के ऐसे सच्चे धर्म के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि उनके अनुयायियों में हिन्दु मुस्लिम आपस में प्रेम पूर्वक रहने लगे। जब खण्डू में लोगों का प्रेम बढ़ने लगा

था। तब स्वामी जी ने इस जगह को छोड़कर दूसरी एकान्त जगह जाने की सोची। स्वामीजी हर गांव हर कस्बे व हर शहर मे जाकर सब प्रमियों को मानवता धर्म का उपदेश देते थे, इस धर्म से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नही है।

स्वामी जी का वैराग्य दिनों दिन बढ़ने लगा। वह एकान्त स्थान की खोज करने के लिए जंगलों की तरफ निकल पड़े। दिन गुजर जाता था रात गुजर जाती थी स्वामी जी अपनी प्रभु भक्ति मे हमेशा ही लीन रहते थे।

इस प्रकार स्वामी जी अपने शरीर को अधिक कष्ट देते हुए नाम स्मरण मे मग्न रहते थे। सब जीवों में उस प्रभु परमात्मा की ही झलक पाते थे।

कई प्रेमियों ने स्वामी जी से विधि पूर्वक दीक्षा ली चाहे वो मुस्लिम हो चाहे वो हिन्दु हो या ब्राह्मण किसी भी जाति का हो।

एक दिन सब प्रेमियों ने मिलकर स्वामी जी से प्रार्थना की कि सत्संग का चबूतरा थोड़ा छोटा है। आपकी आज्ञा हो तो इसे बड़ा करें स्वामी जी ने कहा जैसी आपकी इच्छा हो इसे बढ़ा सकते हो। रात के १० बजे चबुतरा निर्माण कार्य आरम्भ किया गया। ३०-४० प्रेमी मिलकर चबूतरा बनाने लगे। प्रेमियों ने स्वामी जी से कहा आप आराम करें हम कार्य पूर्ण कर आपको जगा देंगे। प्रातः ५ बजे तक कार्य पूर्ण हुआ प्रातः काल नया चबूतरा देखकर शहर के सब आदमी आश्चर्य में डूब गए। गुरूमुख श्रद्धालु प्रेमी प्रसन्न हुए परन्तु मनमुख पुरूषों को ईर्ष्या होने लगी इन्होंने जाकर शहर के सरपंच से शिकायत की और मनमुखी पुरूषों ने चबूतरा तुड़वा दिया। स्वामी जी ने जगह को साफ करवाकर सत्संग किया। स्वामी जी ने कहा प्रभु परमात्मा अपने भक्त की हर तरह से परीक्षा लेते हैं उनके द्वारा ही अनेक क्रियाओ द्वारा खेल खेल रहे है। आखिरकार चबूतरा का निर्माण पुनः हुआ।

अमरापुर स्थान की स्थापना :- (२२ फाल्गुन १९७८) सत्य मार्ग पर लोगो को राह दिखाने हेतु स्वामी जी ने सन्त मण्डल की स्थापना की जिसका नाम 'प्रेम प्रकाश मण्डल' रखा। अपनी सन्त मण्डली के साथ देशाटन करते स्वामी जी सिन्ध प्रांत के नवाबशाह जिले में टण्डा आदम शहर के दक्षिण में एक घने जंगल में आकर रूके। इस घने जंगल में जगह जगह रेत के टीले थे यहीं पर स्वामी जी अपनी सन्त मण्डली के साथ सेवा कर के २०-२५ झोपड़ियों व कुएं का निर्माण किया। कुएँ का पानी गंगा के समान शीतल,निर्मला,मीठा निकला। साधुओं ने मिलकर दो चार एकड़ भूमि पर बगीचा तैयार किया। और सब्जियां बोई उधर ईर्ष्यालू प्रवृति के लोग यह सब कुछ देख जलने लगे। उन लोगों ने स्वामी जी की शिकायत मजिस्ट्रेट पुलिस वालों से की परन्तु वे स्वामी जी के पास आकर भेंट चढ़ाकर चले गए। स्वामी जी प्रारम्भ से ही दयालू स्वभाव के थे कोई भी आता, चाहे गरीब या अमीर पहले उसे 'ढोढा चटणी' खिलाकर बाद में उससे समाचार पूछते थे। वे स्वामीजी के दर्शन पाकर निहाल हो जाते थे। उनके मुख से केवल इतना ही निकलता था पहुँचे हुए दरवेश है।

परन्तु ईर्ष्यालु प्रवृति के लोग कैसे चुप रहते उन्होंने पुलिस वालों से मिलकर सब में आग लगा दी कुएं का रहट तोड़कर उसे कुएं में डाल दिया। गाय भैसों को ले गए और बगीचो को उखाड़ दिया अर्थात् उस समय का दृश्य काफी भयानक था। जिसका वर्णन नही किया जा सकता है। कलम अपना कार्य छोड़ देती है।

जल रही थी जब कुटियाएँ।
तो भी जिसको दी न दुहाई।।
गम खाकर हँसते रहते।
कहते थे राम रजाई।।
हो इक मन इक मस्ती में।
गाया खूब लेकर इकतारा।।
शुद्ध बह्म स्वरूप ज्ञानी था।
हरदम बाग बहारा।।

उस समय अग्निशिखा पचास साठ फुट ऊपर जा रही थी आसपास के लोग भी डर गए थे स्वामी जी और अन्य साघुओं ने पूरी रात अभ्यास और ध्यान में बिताई। जो जनता आ रही थी वो भी शीश झुकाकर नीचे बैठ जाती थी तीन दिन तक अग्नि जलती रही। यह समाचार विद्युत गति से पूरे सिंध प्रांत में फैल गया।

स्वामीजी का विश्वास :- परमात्मा प्रत्येक युग में भक्तों, दासों के दुख दूर करते आये हैं, और उनकी लाज बनाये रखते हैं। अगर ये साखियाँ सच्ची हैं, कथाएँ सच्ची हैं तो फिर भगवान स्वयं यहाँ आकर अपने कार्य परिपूर्ण करेंगे।

करीब एक सप्ताह उपरांत प्रभात के चार बजे

त्गुरु महाराज (स्वामी जी) और सभी सन्त उठकर नाम मरण और ध्यान में बैठे थे। प्रातः काल ५ बजे के समय क यूरोपीय साहब और उनकी मैडम ऊपर ''डिब्'' पर ा पहुँचे।

लक्ष्मी नारायण खड़े धर अंग्रेजी भेष।
किसने आग लगाई है, कहो हमें दरवेश।।

इसे पर स्वामी जी ने कहा आपने जलाया है। यह ुनकर यूरोपियन दम्पती हँसने लगे। हम ही आपकी यवस्था करते हैं इतना कहकर वे लोग चले गए। इसके उपरांत साधु पूछने लगे भगवन् ! ये लोग कौन थे ? स्वामी जी ने कहा यह ''लक्ष्मी नारायण'' थे।

पन्द्रह बीस दिन के उपरांत सेवाधारियों ने मिलकर क्के कोठे व भण्डार गृह, मण्डप पहले जैसा ही बनाकर तैयार किया। जो मनमुखी लोग थे वो अपनी गलती पर श्चाताप करने लगे, और स्वामी जी से आकर क्षमा माँगी। दयालू स्वामी जी ने उनको यह कहकर माफ कर दिया कि यह भी एक प्रभु की लीला थी।

एक दिन साधु महात्माओं ने मिलकर स्वामी जी से ार्थना करी कि इस जगह का कोई नाम होना चाहिए। इस र स्वामी जी ने कहा पूर्व में अखण्डपुरी, पश्चिम में कुन्दनपुरी, उत्तर में गुजरानपुरी है यह स्थान दक्षिण में है। यहाँ पर कोई भी आयेगा। जन्म मरण के चक्कर से दूर हो जायेगा। अपने स्वरूप को पहचानकर अमर हो जायेगा। इसलिए इस स्थान का नाम अमरापुर स्थान रखते हैं।

श्री अमरापुर स्थान की ख्याति दिनोदिन बढ़ने लगी। स्वामी जी ने अपने मूलमंत्र ''सतनाम साक्षी'' प्रेमियों को प्रणाम मंत्र के रूप में आत्म सात करने की दीक्षा दी। ''सत्नाम साक्षी'' महामंत्र आज भी पूरे विश्व में अपनी खुशबू बिखेर रहा है। प्रेम प्रकाशी एक दूसरे का अभिवादन सतनाम साक्षी के संबोधन से ही करते हैं।

अब तो अमरापुर बनी, अद्भुत अलीशान।
जाकां दर्शन करत ही, आनन्द होय महान।।

स्वाध्याय एवं शास्त्र प्रकाशन :- सद्गुरु स्वामी जी स्वयं स्वाध्याय करते थे तथा औरों को भी शास्त्राध्ययन के लिए प्रेरित करते थे। स्वामी जी ने अपने उपदेशों के ाध्यम से अनेक रचनाएँ रची जिनमें से ''प्रेम प्रकाश ंथ'' सवोच्चनीय है। जिसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली, छन्दावली आदि है। स्वामी जी द्वारा रचित भजन अमरापुर वाणी में संकलित है जो आज भी पूरे विश्व में अनन्त जीवों का मार्ग दर्शन कर रहा है।

मेले का आयोजन :-

मिलो मिलाओ मिल रहो, मिलो तो मेला होय।
अन्तर आत्मा जे मिले, मेला कहिये सोय।।

स्वामी जी ने टण्डे आदम दरबार में मेले का आयोजन किया उनका मुख्य उद्देश्य था मानव को सही दिशा का मार्ग दर्शन करना। दिनांक बारह चैत सम्वत् १९८० (सन् १८२३) में मेले का आयोजन किया गया। सब प्रेमियों और सन्त महात्माओं ने बड़े जोर-शोर से मेले की तैयारियाँ की, सब जगह पर पत्रे भेज दिए गये थे। पहले समय में सन्देश भेज देते थे कि इस तारीख को यह कार्य होगा। महात्माओं और सन्तों की सेवा का उत्तरदायित्व दरबार के सन्तों को सौंपा गया। भण्डार गृह का कार्य खण्डू वासियों को दिया गया। इस प्रकार से विभिन्न सेवाएँ बाँटी गई थीं।

प्रातः काल हवन करने के पश्चात् ''प्रेम प्रकाश मण्डल'' का ''ध्वजारोहण'' किया गया। तीन बजे जुलूस निकाला गया जिससे विभिन्न गाँवों की मण्डलियाँ गाते बजाते हुए सम्मिलित थी। सांय ६ बजे स्वामी जी सत्संग मण्डप में आकर विराजमान हुए। स्वामी जी ने पल्लव पाकर सत्संग का प्रारम्भ किया। स्वामी जी ने सत्संग में कहा कि सन्तों का समागम पूर्व जन्म के पुण्यों से ही मिलता है। भगवान की कृपा बिना सन्त लोग नहीं मिलते हैं। यह जो मेला रखा गया है वह विशेष रूप से जिज्ञासुओं और मुमुक्षुओं के लिए है ताकि सभी सत्संगी प्रेमी आकर सन्तों से आध्यात्मिक परिचर्चा कर अपनी आत्मा का साक्षात्कार करें।

साध संगत की सेवा करके हरि से हेत लगाओ।
राम नाम जो पल पल सुमर सकले पाप मिटाओ।।

अंतिम यात्रा :- स्वामी जी सब लोगों से यही कहते थे कि सबको अपने अविनाशी घर में जाना होता है।

अमर लोक से अमर बनाने, जोगी जग में आते हैं।
प्रेम के सागर जाम प्रेम का पीते और पिलाते हैं।।

स्वामी जी ने अपनी कुटिया में आकर सभी सन्त महात्माओं को अपने पास बुलाकर कहा हमने अपनी अमरलोक जाने की तैयारी कर ली है। हमारी कुटिया का द्वार बंद करके एक साधु को बाहर बिठा दो। किसी को भी

अन्दर मत आने दो। प्रातः चार बजे कुटिया का द्वार खोलना।

स्वामी जी के यह वचन सुनकर सब सन्तगण घबरा गए और आँखों में अश्रु धारा लाकर हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि हे त्रिलोकीनाथ ! ये आप क्या कर रहे हैं ? हे भगवान ! आपके यहाँ रहने की अत्यन्त ही आवश्यकता है। हम बच्चो को छोड़कर आप कहाँ जा रहे हैं या फिर हमें भी साथ ले जाईए रात भर किसी को भी नींद नहीं आई। दूसरे दिन प्रातःकाल चार बजे आकर देखा कि स्वामी जी निर्विकल्प समाधि में स्थित हैं। सभी चुप होकर बैठे रहे। करीब एक घण्टे के पश्चात् साधुओं ने विचार किया कि अगर स्वामी जी को जगाया जाए तो ठीक होगा। ऐसा विचार मन में धारण कर अन्दर आकर उन्होंने धीरे से आवाज दी- हे भगवन् ! परन्तु कोई जवाब नहीं दिया और न ही उनकी समाधी खुली। आखिरकार साधुओं ने स्वामी जी की बाँह को हाथ लगाकर देखा तो पाया कि नाड़ियाँ नहीं चल रही थीं परन्तु शरीर अभी तक गर्म था। उसी समय डॉक्टर को बुलाया गया। उन्होंने अच्छी तरह से जाँच कर बतलाया कि स्वामी जी की वृति ब्रह्मा में लीन हो गयी है। अन्दर प्राण गुप्त रूप से चल रहे हैं। जिस प्रकार योगी अपने प्राण दशम द्वार में चढ़ा देते हैं उसी प्रकार स्वामी जी के प्राण चल रहे थे। डॉक्टरों का कहना था कि हमने सन्त और महात्माओं का अन्त समय देखा है परन्तु ऐसी ब्रह्माकार वृति किसी महात्मा की नहीं देखी है। अब स्वामी जी का शरीर नहीं रहेगा।

उसी समय एकाएक स्वामी जी की आँखें खुली और बिजली की तरह प्रकाश झलक दिखा कर नयनों से निकला और आकाश मण्डल में लीन हो गया। यह देखकर सभी प्रेमी और सन्त आश्चर्यचकित रह गए। वह दिन शनिवार, दिनांक चार, मास पुरूषोत्तम, पहला ज्येष्ठ सम्वत् १९९९ (सन् १९४२) था।

स्वामी जी ने प्रेम प्रकाश आश्रम हैदराबाद जिले में आसन मुद्रा में अपना नश्वर शरीर छोड़ा, उनकी आत्मा ज्योति पारब्रह्म की महाज्योति में समा गयी। पर उनका दिव्य आलोक आज भी प्रेम प्रकाशियों का प्रथ प्रदर्शन कर रहा है। पूरे विश्व में लाखों प्रेम प्रकाशीगण अनेक शहर, कस्बों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों में नित्य-प्रतिदिन सत्संगों के माध्यम से स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उपदेशों का श्रवण कर अपना जीवन सफल बना रहे हैं।

सभी साधुओं ने सर्वसम्मति से, एकमत हो[kar] स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को मण्डल कार्य संचालन [हेतु] अपना अध्यक्ष बनाया। अतं में स्वामी जी ने स्वामी टेऊँ[राम] जी के बारहंवी की समाप्ति का पल्लव पाया। सभी स[न्त] महात्मा वहाँ पर उपस्थित थे। सद्गुरु महाराज जी [की] पावन स्मृति में सभी के नेत्र अश्रुपूरित हो गये। उस[के] पश्चात् स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ही दरबार का का[र्य] संचालन करते थे। स्वामी जी ने सद्गुरू टेऊँराम [जी] महाराज के बारे में कहा है।

विश्व व्यापक होय रहा, तुम पूर्ण चराचर मोहि
साक्षी चेतन अमर ज्योति तुम्हारी है हर जाए जग[न]
सद्गूरु टेऊँराम तेरी मैंने देखी महान शक्ति

भजन

सिंध देश में इक था योगी, सद्गुरु टेऊँराम जी
अमर है उसका अभी तक नाम जी
अवतार आये दातार आये,
अरु भक्ति का भण्डार आये।
कृष्णा की गोदी में मानो करतार आये,
जन्म भूमि खण्डू गाँव जी।।
वैराग्य मिला सब छोड़ दिया,
संसार को जिसने त्याग किया।
सद्गुरु की सेवा करके ऊँचा सौभाग्य किया,
मिला गुरु पूरण आसूराम जी।।
ध्यान लगाकर नाम जपाकर,
''अमरापुर स्थान'' जमाकर।
प्रेम प्रकाशी मण्डल बनाकर,
साक्षी जपाया सत्नाम जी।।
जहाँ से आये वहां समाये,
बैठ आत्मधाम बसाये।
सारा जग कहे में शीश नवाये,
करता हूँ प्रणाम जी।।

विनीत–नीलम कुमारी एडवोके[ट]
(अलवर, राजस्था[न])

सयानापन इसी में है कि जब नाव में पानी भर गया हो और घर में दौलत बढ़ गयी हो तो पानी को हाथ से बाहर उलीच देना चाहिये और दौलत को बाँट देना चाहिये, नहीं तो नाव डूब जायेगी और स्वसुखाय दौलत भी नहीं बचेगी।

ी शान्ति प्रकाश अमृतवाणी

प्रवचन स्थल :
श्री अमरापुर स्थान जयपुर
चैत्र मेला आरम्भ दिवस

दो साधन - प्रार्थना व सुमिरन

★ परम श्रद्धेय सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज ★

प्रस्तुत प्रवचन पूज्य महाराज श्री द्वारा, चैत्र मेले के शुभ अवसर श्री अमरापुर स्थान जयपुर में दिये गये प्रवचनो ा अंश है। चैत्र मेले के प्रथम दिवस पर प्रार्थना से प्रारम्भ यह प्रवचन अत्यत मार्मिक व सरल है। आशा है कि हम भी इस प्रवचन से लाभ लेंगे।

ाचरणः

ओऽमंकारं बिंदू संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव ओऽमकाराय नमो नमः
सर्व स्वरुपं आदि अनूपं भूमि भूपं भयभाना
अंत न ऊपं छाय न धूपं काढ़त कूपं धर ध्याना
रहस्यारामं दायकधामं नित निष्कामं निर्बानी
पाद न मामं निशिदिन शामं श्री टेऊँरामं गुरु ज्ञानी
सभई चओ ह ऽऽऽऽ री, ओ ऽऽऽ म्–३
शांति शांति शांति

हाणे प्यार सां अै वदे आवाज़ सां भगवान अैं हाराज अैं संतन जी जय चओ बोल राम कृष्ण न की जय, शंकर भगवान की जय, श्री गुरुनानक की जय, सत्गुरु टेऊँराम महाराज की जय, रु सर्वानन्द महाराज की जय, सभिनी संतन य, भारत मण्डल की जय।

धुनिः गोविंद जय जय, गोपाल जय जय।
राधा रमण हरी, गोविन्द जय जय।।

त्र :–

आशवन्दी गुरु तो दर आई,
तो बिन वाह न कई राम।
तूं हरि दाता तूं हरि माता,
मेरी आश पुज़ाईं राम।।
तन मन धन अरदास करें मैं,
ांगत नाम सनेही राम।
ाम तुम्हारा साबुन करसां,
ासां पाप सभेई राम।।
हे टेऊँ गुरु लोक तीन में,
ावा गमन मिटाईं राम।
शवन्दी गुरु तो दरआई,
तो बिन................।।
आशवंदी गुरु तो दर आई
तुम बिन वाह न काई राम

यह हमारे बड़ों की मर्यादा है कि अमृत वेले जागते ही प्रभु परमात्मा और गुरुदेव से प्रार्थना करते हैं कि "हे गुरु महाराज !" हमारे अन्दर इतनी शक्ति और बुद्धि नहीं हैं कि हम आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करके आप का मान बढ़ा सकें। इसलिए आप स्वयं ही हम सभी के हृदय और मन मन्दिर में विराजमान होकर अपनी इच्छा के अनुसार कोई ऐसा उत्साह और उमंग उत्पन्न करें जो आप के शान से भी ऊँचा हो। यह प्रभु परमात्मा की आशीर्वाद है कि यह जो हम प्रार्थना के स्वरूप में वाणी उचार रहे हैं। यह एक मंगल और कल्याण रूप है। किसी भी कार्य को करने से पहले कल्याणकारी और मंगलमय मंत्रों का उच्चारण किया जाता है, जिससे हमारे सारे विध्न दूर हो जाते हैं और हमारा कार्य र्निविध्न सम्पन्न होता हैं।

गुरु महाराज के इस मंत्र में इतनी शक्ति है कि आज कल जहाँ कहीं भी जितनी भी संस्थाएँ बनी है वे इस मंत्र का सच्ची श्रद्धा और विश्वास से उच्चारण करने के कारण सफल हो रही है।

इसलिए आप सभी प्रेमी जन भी प्रेम, श्रद्धा और विश्वास से गुरु महाराज के इस मं... उच्चारण (गायें) करें। जिससे आप अपना पूरा ...न आनन्द और उत्साह से व्यतीत कर सकें। आओ सभी प्रेम से ऐसे कहें –

तूं हरि दाता, तूं हरि माता-मेरी आश पुज़ाईं राम।

गुरु महाराज जी हमें ईश्वर से प्रार्थना करन का एक तरीका (रीत) सिखाते हैं कि यदि हम सन्तों,

महात्माओं, गुरु, ईश्वर और देवताओं के द्वार पर चलकर श्रद्धापूर्वक और सच्चे विश्वास से प्रार्थना करेंगे और उनके चरण स्पर्श करेंगे तो इन सभी को हम पर दया और करुणा आएगी।

देखो भाई इस संसार में माता-पिता, भाई-बहिन-मित्र आदि स्नेही और सम्बन्धी हैं। पर तु हमारे गुरु महाराज जी कहते हैं कि ''नाम'' जैसा हमारे लिए कोई सच्चा स्नेही और मित्र नहीं है। ''नाम'' ही है ज़ो हमारा सच्चा मित्र है, नाम के जपने से हमारे इस मनुष्य जीवन का उद्धार होगा। इसलिए यदि हम भी अपने गुरु और ईश्वर से कुछ प्राप्त करने की इच्छा करें तो उनसे यही कहें कि हे गुरु महाराज ! आप हम से उठते–बैठते, सोते–जागते अपना नाम सिमरन करवाईए।

तन मन धन अरदास करे मैं-मांगत नाम सनेहीराम।
नाम तुम्हारा साबुन करसां धोसां पाप सभेईराम।।

हमें गुरुदेव और सन्तों को यही प्रार्थना करनी चाहिए कि हे गुरु महाराज हम आप की शरण में आए हैं, आप के अलावा हमारा दूसरा कोई आश्रय नहीं है, इसलिए आप अपनी कृपा करके हमारे हृदय में ऐसा प्रेम और उमंग उत्पन्न करो जिससे हमारे रोम, रोम में आप के नाम का सिमरन हो।

नाम का जाप करने से क्या-क्या लाभ होते हैं।

नाम तुम्हारा साबुन करसां, धोसां पाप सभेईराम।

गुरु महाराज का नाम इतना पवित्र और निर्मल है कि नाम का जाप करने से हमारे कई जन्मों से लेकर किए हुए पापों से मुक्ति मिलती है। नाम के सिमरन से हमारी बुद्धि रूपी कपड़े पर जो मैल है वह धुल जाती है, जिससे हमारी बुद्धि निर्मल होकर प्रभु परमात्मा में स्थित होने लगती है। गुरु के नाम की महिमा अपरंपार है, जिसकी कोई सीमा नहीं है। इसलिए हम सभी को भी गुरु महाराज, सन्तों, महात्माओं और ईश्वर से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि **हे गुरु महाराज ! हमें और किसी चीज की इच्छा नहीं है, केवल आप अपनी कृपा और दया करके अपने नाम का जाप हम से करवाएँ।**

''जिनी नाम ध्याइया, गए मस्कत घाल।''

गुरु साहिबों ने भी अपनी गुरुवाणी में कहा है जिन्होंने भी नाम का सिमरन किया है उन्होंने सारे के सारे साधन कर दिए हैं, उन्होंने जैसे तीर्थ, उपाय और कर्म कर लिये हैं। इसलिए सभी को भी अपने मनुष्य जीवन को कृतार्थ करने लिए गुरु महाराज के नाम का जाप करना चाहि एक सन्त महात्मा की कथा आती है, ''भगवान विष्णु'' जी ने स्वयं ही उस महात्मा को अपना द दिया, और कहा कि आप को क्या चाहिए ? जैसा चाहें वैसा वर माँगें। महात्मा ने भगवान कहा – प्रभु ! आप भले ही माता लक्ष्मी जी के वैकुण्ठ में रहे और शेषनाग की सेजा पर सोए परन्तु आप मुझ पर अपनी कृपा करें कि मैं हर आप के नाम का सिमरन करूँ। मुझे आप की आवश्यकता नहीं है, मैं केवल आप के नाम की इ करता हूँ, मुझे केवल आप का नाम चाहिए।

भगवान ''श्री विष्णु'' जी ने महात्मा से क ऐसा कैसे होगा ? महात्मा ने भगवान को उत्तर कि प्रभु मुझे यह निश्चय है कि नाम में इतनी श है और वह ऐसी लोहे की डोर है जो आपके म वश में करती है। जहाँ पर भी आप के नाम सिमरन करूँगा, आप स्वयं ही वहाँ प्रकट होंगे। **किसी व्यक्ति को उसका नाम लेकर बुल (पुकारेंगे) तो वह एकदम ही हमारी आवाज सु वैसे ही हम भगवान का नाम सिमरन करेंगे सच्ची श्रद्धा से उन्हें पुकारेंगे तो वे जहाँ क होंगे निर्गुण, सगुण होकर, वैकुण्ठ से भी दौड़ शीघ्र ही हमारे पास आ पहुँचेंगे।**

कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाईं

इसलिए हम सभी मनुष्यों को प्रभु परमा नाम में प्रीत, सच्चा विश्वास और श्रद्धा रखनी च शुद्ध हृदय से उनके नाम का जाप करना च ईश्वर और सन्तों का संग करके यह मनुष्य कृतार्थ करना चाहिए।

संकलन–**कु. पिन्की लालवाणी**, बड़ौ

श्री सदगरू परम्परा का पबधात्मक वर्णन

(वन्दे बोधमयं नित्यं गुरूं शङ्कररूपिणम्)

अनन्त श्री विभूषित श्री प्रेमप्रकाश मण्डल सम्प्रदायाचार्य सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने देश में और समाज में फैल रहे अधर्म को दूर करने एवं स्वधर्म की रक्षा व जन जागृति के लिए इस धरा धाम पर दिनांक ४ (चार) शनिवार माह आषाढ़ शुक्ल षष्ठी सम्वत् (१६४४) अंग्रेजी सन्१८८७ ईश्वर प्रेमी पिता श्री चेलाराम एवं माता कृष्णादेवी के यहाँ सिन्ध देश के ग्राम खण्डू में शिव–स्वरूप स्वामी जी ने अवतार लिया। आप बचपन से ही प्रभू परमात्मा की प्राप्ति में लग गये। आपने समाज में जागृति लाने के लिए **श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की स्थापना** की एवं प्रेमप्रकाशियों को **महामंत्र ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी** नाम दिया, उन्होंने जन जागृति लाने के लिए **आध्यात्मिक ग्रंथ श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ की रचना** की और जीवो के उद्धार के लिए **सत्र मेला (दिव्य ज्ञान मेला) का शुभारम्भ** किया, प्रेम प्रकाश मण्डल के तीर्थ स्थान श्री अमरापुर दरबार को केन्द्र (गुरू स्थान) बनाया, सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के बनाये हुए पावन मार्ग पर चलने वाले इस भवसागर रूपी सरिता **चढ़ि पिपीलिकउ लघु बिन श्रम पार रहि जाहिं** "मानस", जिस प्रकार परमलघु चीटियां नदी के ऊपर बने पुल से बिना परिश्रम के ही पार जाती है उसी प्रकार जो श्री अमरापुर दरबार द्वारा बनाये हुए पंथ मे श्रद्धा और विश्वास रखते है वह भी सहज में ही भव सागर से पार हो जाते हैं, वही सद्‌गुरू टेऊँराम जी महाराज को प्राप्त कर सकते हैं वही सच्चे प्रेम प्रकाशी है। दिनांक ४ शनिवार माह ज्येष्ठ सम्बत् १६६६ सन् १६४२ मे सिन्ध देश हैदराबाद शहर में श्री माधवदास जी महाराज के आश्रम पर परमधाम (ब्रह्मलीनता) को प्राप्त हुए। आपके शिष्य सद्‌गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज आयु में आपसे १० वर्ष छोटे थे। जिनका जन्म सिन्ध देश के ग्राम भिट्‌टशाह में पिताश्री श्री सेवकराम एवं माता ईश्वरीदेवी के यहाँ पर दिनांक १२ बृहस्पतिवार माह असू सम्बत् १६५४ (सन्१८६७) में हुआ सद्‌गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर ४५ वर्ष की आयु में दिनाक १२ सम्बत् १६६६ सन् १६४२ में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के महामण्डलेश्वर बने आपके द्वारा ही **प्रेमप्रकाशियों के तीर्थ स्थान जयपुर में श्री अमरापुर दरबार का निर्माण हुआ, सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन चरित्र (प्रबंधात्मक) ग्रंथ की रचना हुई** आपने ३५ वर्ष तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का संचालन किया, जीवन पर्यन्त सनातन धर्म का प्रचार प्रसार किया दिनांक ४ बृहस्पतिवार माह श्रावण सम्बत् २०३४ सन् १६७७ में ८० वर्ष की आयु में अमरापुर दरबार पर ब्रह्मलीनता को प्राप्त हुए। आपके उपरांत सद्‌गुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज श्री प्रेमप्रकाश मण्डल के महामण्डलेश्वर बने। आप सिन्ध देश के ग्राम चक में पिता श्री आसूदाराम जी माता जोगल बाई के यहाँ पर दिनांक १३ मंगलवार रक्षाबन्धन सम्बत् १६६४ सन् १६०७ में जन्म लेकर आपने अपने सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्‌गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का सानिध्य प्राप्त किया था। आप ७० वर्ष की आयु में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के महामण्डलेश्वर बने आपने हरिद्वार मे **सद्‌गुरू स्वामी सर्वानन्द घाट का निर्माण कराया** एवं अस्पताल, विद्यालय, वृद्धाश्रम, गोशाला आदि का निर्माण कराया। आप दिनांक १५ माह अगस्त सन् १६६२ सम्बत् २०४६ में विदेश यात्रा करते समय ब्रह्मलीनता को प्राप्त हुए। सद्‌गुरू शांतिप्रकाश जी महाराज के उपरांत सद्‌गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज १६६२ में ६२ वर्ष की आयु में श्री प्रेमप्रकाश मण्डल के महामण्डलेश्वर बने आपका जन्म दिनांक ३० माह मार्च सन् १६३० सम्वत् १६८७ में सिन्ध प्रान्त के ग्राम ठोड़न में पिता श्री हीरानन्द माता श्री मोतिलदेवी के यहाँ हुआ आपने जीवनभर सद्‌गुरू

टेऊँराम जी महाराज के मार्ग का अनुसरण किया, आपने कई प्रेम प्रकाश आश्रमों का निर्माण कराया। दिनांक २६ अगस्त सन् २००० सम्बत् २०५७ में ७० वर्ष की आयु में आप विदेश यात्रा करते समय स्पेन में ब्रह्मलीनता को प्राप्त हुए। वर्तमान में श्री प्रेमप्रकाश मण्डल के महामण्डलेश्वर सदगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज है जो ४० वर्ष की आयु में जयपुर में प्रेमप्रकाश मंडल के संचालक बने। २२ अक्टूबर सन् १९६० सवत् २०१६ में भारत वर्ष की पावन भूमि छत्रपति शिवाजी की कर्मभूमि महाराष्ट्र के शहर मुम्बई में पिता श्री टीकमदास माता कौशल्यादेवी के यहाँ आपका जन्म हुआ। आपको सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज एवं सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज का विशेष सानिध्य प्राप्त हुआ, उनके सानिध्य में रहकर आपने जयपुर, हरिद्वार, इन्दौर, मुम्बई के आश्रमों पर रहकर निष्काम भाव से सेवा की। श्री प्रेमप्रकाश मण्डल के महामण्डलेश्वर बनने के बाद आपने देश और विदेश के शहरों में पदार्पण किया। वहाँ पर सनातन धर्म, आध्यात्मिक धर्म शास्त्र का अपनी सारगर्भित वाणी से अमृतपान कराया और जन जागृति पैदा की। आपकी धर्म यात्रा का वर्णन निम्न है।

जयपुर, हरिद्वार, उल्हास नगर, बड़ौदा, अजमेर, दिल्ली, अहमदाबाद, फरीदाबाद, आगरा, पलवल, पिनगंवा, खैरथल, कोटा, इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ, वाराणसी, फैजाबाद, बहराइच, ग्वालियर, मुरैना, डबरा, दतिया, अलीगढ़, नागपुर, सिवनी, बालाघाट, गोदिया, वृन्दावन, राजनांदगांव, दुर्ग भिलाई, बेमेतरा, भाटापारा, धमतरी, भानुप्रतापपुर, रायपुर, कोरबा, शहडोल, उज्जैन, इन्दौर, रतलाम, समालखा, टोंक, भीलवाड़ा, बेंगलोर, मद्रास, कलकत्ता, मुम्बई, हिसार, ब्यावर, हथीन, पूना, पिम्परी, नासिक, कामठी, बिलासपुर, रांची, बरगढ़, राजिम, दल्लीराजहरा, भण्डारा, बालाघाट, यवतमाल, आर्वी, अमरावती, धुलिया, जलगांव, रावेर, बुरहानपुर, भुसावल, खण्डवा, जबलपुर, कटनी, रीवा, सीधी, सतना, बैरागढ़, मन्दसौर, देवास, भरतपुर, फिरोजाबाद। विदेश :– न्यूयार्क, लॉस एंजिल्स, फ्रीमोन्ट, बेल्जी, पलामा, जमैका, टेम्पा, मलामा, स्युटा, लॉसपालमास, फुरले विन्तुरा लेजार्ट, तनरीफ, मैड्रीड, दुबई, नीला, जाकरता, बेकांक, हागकांग, सिंगापुर।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की
आदरणीय महान विभूतियाँ एवं प्रमुख प्रचारक

स्वामी स्वयंप्रकाश जी महाराज, स्वामी रामकृष्णजी महाराज पूना, स्वामी देव प्रकाश जी महाराज उल्हास नगर, स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज अजमेर, स्वामी अशोकलाल जी महाराज बड़ौदा, स्वामी मनोहरलाल जी महाराज कोटा, स्वामी अनन्त प्रकाश जी महाराज पूना, स्वामी जयदेवलाल जी महाराज दिल्ली, स्वामी नामदेव जी हांगकांग, सन्त वेदप्रकाश जी अहमदाबाद, संत दयाप्रकाश जी जयपुर, संत राजूरामजी बड़ौदा, सन्त मोनूराम जी जयपुर, सन्त हरिओम लाल जी ग्वालियर, सन्त चन्दनप्रकाश जी अजमेर, सन्त किशोरलाल जी फरीदाबाद, सन्त नन्दूलालजी हरिद्वार, सन्त राजूराम अजमेर, सन्त मुरलीधर खैरथल, सन्त प्रतापराय मुरैना, संत श्यामलाल कोटा, सन्त शंभूलाल इन्दौर, सन्त नरेशलाल इन्दौर, सन्त रमेशलाल कटनी, सन्त लालूराम दिल्ली, सन्त भगतप्रकाश आगरा, सन्त रमेशलाल हरिद्वार, सन्त शंकरलाल धुलिया, सन्त घनश्यामदास कानपुर, सन्त हंस प्रकाश, सन्त झामनदास भीलवाड़ा, सन्त संजय बड़ौदा, सन्त दिलीप कुमार बड़ौदा, सन्त मोहनलाल बड़ौदा, सन्त चरणदास बड़ौदा, सन्त नरेशलाल, सन्त नवीन, सन्त लक्ष्मणदास, सन्त परसराम, सन्त जीतू, सन्त हरीश कुमार, सन्त शंकरलाल सभी जयपुर, सन्त प्रभूदयाल हरिद्वार सन्त रामदास जी, सन्त रामप्रकाश जी, भगत मूलचन्द जी, भगत श्रीमुक्त जी, भगत श्री महादेव जी, भगत श्री वीरभान जी सभी जयपुर, आदि।

संकलक सहयोगी :– भगत मूलचन्द जी (जयपुर)

प्रेषक :– सुरेश (सॉंवल) प्रेमप्रकाशी
प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना (म.प्र.)

जीवन का लक्ष्य क्या है ?

संसार सागर अति विशाल है। जहाँ अनेक नुष्य आते और जाते रहते हैं। मनुष्य के जीवन में क बार ऐसा समय अवश्य ही आता है। जब वह नदी कनारे बैठकर या आकाश की ओर देखकर तारों के टमटिमाने पर आश्चर्य करता है। वह सोचता है कि ह सारा संसार किसने बनाया है ? ऐसी कौनसी ावश्यकता थी, जो इसका निर्माण करना पड़ा है ? ौर फिर प्रश्न आता है कि मुझे इस जगत में पैदा रने का क्या कारण था ? अगर मैंने जन्म भी लिया । मेरा उद्देश्य क्या है ? क्या संसार के सम्बन्धियों के ाथ रहकर उनसे प्रेम करना ही लक्ष्य है। सारा समय पने परिवार वालों के लिए धन जुटाना अपने स्वार्थ अपने ही हित की तरफ ही क्या मुझे देखना है? गर हम अपने मन से इसका उत्तर पूछेंगे तो इसका वाब हमें नहीं मिलेगा। तो फिर क्या किया जाये ? मने सन्त महापुरुषों की शरण ली और उनकी सेवा रत रहने लगे। क्या मन में परिवर्तन हुआ ? नहीं ! न उन्हीं बातों को सोचता रहा मेरे परिवार वाले सदा ुखी रहें। सन्तों से ज्ञान प्राप्त हुआ की हमें गुरु रना चाहिए। हमारे मन में सन्तों के आदेशानुसार रु करने की इच्छा जागृत हुई। हम गुरु के लिये नेक मन्दिरों में पूजा स्थानों पर भटके गुरु की राह हीं मिली। फिर किसी स्थान पर सुना एक सन्त ने मत्कार दिखाया और उसके अनेक शिष्य हैं, इतने क्षर सुनते ही हम २ किलो फल लेकर उस सन्त के स पहुँच गये और कहने लगे, कि महाराज हमें नाम न दीजिये और सन्त ने झटपट नाम दान दे दिया। या कभी मन ने सोचा सही कि वह सन्त कौन है ? जसको मैने गुरु बनाया वह मुझे इस संसार से पार तार सकेगा। अगर वह स्वयं इस संसार के झूठे पंच में फंसा हुआ है तो हमें कैसे छुड़ा सकता है। दाहरण – जैसे कोई चूहा स्वयं पिंजरे में बन्द हो ौर हम उसे अपना जाल काटने को कहें तो यह मारी महान अज्ञानता है। हमें तो सहायता उससे लेनी चाहिए जो स्वयं समर्थ हो। अगर कोई खरगोश बकरी से जाकर कहे कि तुम मुझे शेर से बचा लो तो लोग हंसने लगेंगे, क्योंकि बकरी तो स्वयं शेर से डरती है ! इसी कारण ऐसे सच्चे गुरु की शरण लेनी चाहिए जो हमें काल रूपी शेर से अभय दान दिला सके। सन्तों महात्माओं का कथन है :–

पानी पीजिये छानकर, गुरु कीजिये जानकर

जिस प्रकार व्यक्ति हीरा लेता है तो उसकी अनेक बार परख करता है कहीं यह हीरा झूठा तो नहीं और मैं जिस दुकानदार से हीरा लेने जा रहा हूँ वह दुकानदार सच्चा है ? या वह झूठा है ? उसी प्रकार यह गुरु नाम भी एक अमूल्य हीरा है और उसे लेने से पूर्व अनेक विश्वास योग्य व्यक्तियों अर्थात् गुरुमुख भक्तों से जानकारी लेने चाहिए, और अगर गुरु से नाम लिया जिसे अपना गुरु बनाया तो फिर उस गुरु की भूलवश भी बुराई नहीं करनी चाहिए, अगर किसीसे भूलवश बुराई हो गई तो हमारी दशा भी महर्षि नारद जैसी हो जायेगी।

यह कथा आप सब महानुभावों की सुनी सुनाई हुई होगी और हमें सच्चे गुरुवर मिले हमें नाम दान दिया और गुरुवर ने हमसे क्या मांगा **यह मन और बुद्धि मुझे दे दो** लेकिन हमारे मन में विचार जागृत हुआ "मन" यह तो शरीर से निकालकर देने वाली वस्तु नहीं है और गुरु की प्रथम आज्ञा से मुकर गये तो हमें गुरुवर क्या आशीर्वाद करेंगे। आशीष तो उसे दी जाती है जो आज्ञा पालन करे। गुरु के शब्द पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर दे। ऐसे भक्त ही अपनी मंजिल को प्राप्त करते हैं। मैं फिर अपने प्रश्न पर लौट रहा हूँ कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? तो इसका जवाब है कि गुरु आशीर्वाद से ही **हमें परमात्मा दर्श प्राप्त होगा अर्थात् आत्म साक्षात्कार होगा।** "यह ही अपने जीवन का लक्ष्य है।"

प्रेम प्रकाशी जीतू
अमरापुर, जयपुर

भूली बिसरी यादें

प्रेम प्रकाश संदेश के विभिन्न विशेषांकों एवं सामान्य अंकों में सभी सन्तों एवं प्रेमियों के दिल का जो वर्णन प्रकाशित होता रहा है वह सब पढ़ने के बाद मेरे मन में उथल–पुथल सी होने लगी मुझे भी अपने दिल का हाल अपने भाईयों–बहनों प्रेम प्रकाशी परिवार को सुनाने की इच्छा उत्पन्न हुई। इसके बाद मेरे दिमाग में एक बात उठने लगी कि हम हीरे की पहचान हीरे के रहते ही क्यों नहीं करते। जब हमारे हाथ में हीरा रहता है तो हम उसे तुच्छ समझते है न ही उसकी कद्र होती है न ही उसका मूल्य जानते हैं फिर जब वो हीरा हमारे हाथ से निकल जाता है तब हम उसे याद करके पछतावा करते हैं हाय हमने ये क्या कर दिया उसी प्रकार हमारे सत्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी तो हमें उस हीरे से भी बढ़कर थे पर हमने उन्हें क्यों नहीं जाना क्यों नहीं परखा, कि हमें भगवान ने वो नजर क्यों नहीं दी उनको देखने की। हम यह जान ही नहीं पाये कि हमें उनसे क्या–क्या पाना है अभी तो हम धीरे–धीरे उनके प्यार को समझ रहे थे। कि हमने सोचा ही नहीं था कि इतनी जल्दी हमें छोड़कर चले जायेंगे। मानाकि वो कहीं गए नहीं हैं वो यहीं हमारे पास हैं हम सच्चे दिल से अगर उन्हें पुकारें तो वो हमेशा हमारे साथ ही है फिर भी जब वो सर्गुण रूप में हमारे सामने थे तो हमें उन्हें पहचानने की वो आँखें नहीं थी अब मेरी सद्‌गुरु महाराज से यही विनती है कि हमारे स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज को सच्चे मन सच्चे भाव से जिस रूप में देखना चाहेंगे वो हमें उस हर रूप में दिखलाई देंगे। हमें मन में सिर्फ यही भाव रखना है कि वो हमारी उस गद्‌दी के मालिक हैं जिस गद्‌दी के सिरताज स्वामी टेऊँराम जी महाराज थे, स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज, स्वामी हरिदासराम जी महाराज अब हर रूप में स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज हैं हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि उनका आशीर्वाद उनका प्यार हम सभी प्रेम प्रकाशियों पर बना रहे। मैने स्वामी टेऊँराम जी को तो देखा नहीं स्वामी सर्वानन्द महाराज जी की कुछ धुंधली यादें हैं उनका सत्संग मैने बचपन में कई बार सुना फिर स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज को नजदीक से देखने का सौभाग्य कई बार प्राप्त हुआ। मेरे फूफा जी श्री उधवदास जी (ग्वा.) जो उनके अनन्य प्रेमी थे, स्वामी जी के बगैर कोई कार्य नहीं करते थे। उनका स्वामी जी में बड़ा विश्वास था। हमें अपने फूफा जी के यहाँ हर कार्य में स्वामी जी के इतने नजदीक से मिलने का अवसर प्राप्त होता था, पर तब उन्हें देखने समझने की आँखें समझ कहाँ थी वो दिल में उनके लिये प्यार कहां था। गुरुदेव का प्यार क्या होता है यह तो तब ही मैने जाना जब मैने नाम दीक्षा ली। कभी–कभी मेरे दिल में ख्याल आता है कि मैं भाग्यहीन थी जो ऐसे गुरुदेव भगवान मुझे इतनी देर से क्यों मिले। लेकिन नहीं यह भी मेरा सौभाग्य ही था कि मुझे सत्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज से नाम दान प्राप्त हुआ। बस उसके बाद उनके दर्शन नसीब नहीं हुआ। बस जल्द ही हमें छोड़कर अमरापुर धाम चले गये। उनकी महिमा के गुणगान सुनती तो मेरे मन में बस तड़प सी उठती थी कि मेरे सत्गुरू ने जो मुझे अपने से दूर रखा। मेरे फूफा के लड़के श्रीचन्द पंजवानी की शादी में स्वामी जी के स्वागत में मैंने एक गीत गाया था उन्होंने मुझे आशीर्वाद भी दिया था। ऐसे कई मौके आये जब स्वामी जी के करीब आने का सौभाग्य मिला पर मन से तो मैं उनसे बहुत ही दूर थी। वो प्यार में सत्गुरू स्वामी हरिदासराम जी से पाने की लालसा मन में लिये बैठी और वो प्यार धीरे–धीरे हमें मिलने लगा। अभी तो हम लोग स्वामी जी के करीब आए। क्या खबर थी कि साँईं हमें इतनी

जल्दी छोड़कर चले जायेंगे। मुझे वो नजारा बार–बार आँखों के आगे छा जाता है जब स्वामी जी १९६६ में जनवरी में गोंदिया आए थे। साल में १ बार स्वामी जी के दर्शन प्राप्त होते थे। इस साल भी स्वामी जी जनवरी में आए तब सत्संग में स्वामी जी जी बार–बार यही कह रहे थे कि **कौन चलेगा अमरापुर किसे मोक्ष चाहिए।** शमशान में मरे हुए को छोड़कर आते हैं। जो जिंदा जाते हैं वो वापस आते हैं या नहीं। पूरा सत्संग स्वामी जी ने वो ही किया, हम लोग अपने मन में यही सोच रहे थे कि आज हमारी (राजी) जो हमारे दरबार में सेवाधारी थी। उसका स्वर्गवास हो गया है इसलिये स्वामी जी ऐसी बातें कर रहे हैं। कौन चलेगा हमारे साथ अमरापुर वो हाथ ऊपर करे। हमारे दादा (रामचन्द जी) जो हमारी दरबार के अध्यक्ष थे। उन्होने झट से अपना हाथ ऊपर किया। दूसरे दिन हमारे यहाँ आम भण्डारा था। जब भी स्वामी जी गोंदिया आते थे तो हमारे यहाँ आखरी दिन आम भण्डारा होता था। सबेरे सत्संग में स्वामी जी मंच पर बैठे थे। दरबार के बाहर मण्डप बना हुआ था। वहाँ स्वामी जी ध्यान में मग्न बैठे थे। दूसरी संत मण्डली सत्संग कर रही थी। अचानक स्वामी जी मंच पर पीछे गिर पड़े। संत मण्डली जो साथ बैठे थे उन्होंने संभाल लिया। सभी प्रेमियों के चेहरे उतरे हुए थे लेकिन स्वामी जी ने हंसकर इतनी सरलता से कहा कि हमें नींद आ गई थी। उसके बाद आम भण्डारा सुख पूर्वक हुआ फिर रात को हम सभी प्रेमी दरबार में बैठे थे। ६ बजे के बाद स्वामी जी बार–बार पूछने लगे कि खाना सबको खिला दिया है हमने कहा स्वामी जी आप खाओ बाद में हम खायेंगे। तब स्वामी जी ने कहा नहीं हम बाद में खायेंगे। पहले सबको खिला दो। स्वामी जी जब भी आते हम सभी प्रेमी वहीं दरबार में एकसाथ भोजन बनाते सभी वहीं सेवा भी करते वहीं खाते। साढ़े दस बजे स्वामी जी ने फिर पूछा सबने भोजन कर लिया, सो भोजन सारे प्रेमियों ने कर लिया था। बाकी रायपुर में जो प्रेमी स्वामी जी को लेने के लिये आने वाले थे। बस उनके आने का इन्तजार हो रहा था कि वो प्रेमी आए तो भोजन करें, माता लाजवंती जो सबको खाना परोसने का कार्य करती थी वो अभी अपने लिये परोस कर बैठी तो जैसे ही निवाला मुंह में डाला तो मेने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा देखो दादा को क्या हो रहा है। हमारे दादा रामचन्द्र जी जो अध्यक्ष तो थे पर सच्चे सेवाधारी थे। सारा कार्य पता नहीं कैसे कर लेते थे। उनके जैसे सेवाधारी कोई निराला ही बन पाएगा। अचानक दादा ऊपर से नीचे छाती मसलने लगे। पूरा शरीर पसीने से तर था। कुछ देर पहले सभी प्रेमी स्वामी जी के पास बैठे बातें कर रहे थे क्योंकि स्वामी जी सबेरे हमसे विदा होकर जाने वाले थे और अचानक दादा की तबियत बहुत बिगड़ने लगी सभी प्रेमी घबरा गए। डॉक्टर को बुलाया गया जब तक डॉक्टर आए हालत बहुत ही खराब हो गई है, डॉक्टर आया और कहा, इन्हें बड़े डॉक्टर के पास ले जाओ। वैन में उन्हें ले जाया गया। कुछ प्रेमी भी साथ गए। इधर एक बहन ऊपर स्वामी जी के रूम में आकर कहा साँई पलव पाओ तो दादा जल्दी ठीक हो जाऐंगे। स्वामी जी ने कहा तुम जाओ हम पलव पा रहे हैं हम सभी स्वामी जी के लिये मन में सोच रहे थे कि स्वामी जी ऊपर बैठे हैं और दादा की हालत इतनी खराब हो गई सभी प्रेमी भागदौड़ कर रहे हैं पर स्वामी जी नीचे भी देखने नहीं आए हमें क्या पता था कि उन्हें सब पहले ही मालूम था कि अभी क्या होने वाला है न दादा को जैसे ही डॉक्टर के पास ले गए तो स्वामी जी ने कहलवाकर भेजा सभी अपने–अपने घर जाओ यहाँ कोई नहीं रुकेगा। एक बात और हमें स्वामी जी ने कही थी कि सबेरे सभी प्रेमी प्रकाशियों को इकट्ठा होना है हम सोच रहे थे शायद स्वामी जी हम प्रेम प्रकाशियों को काई ऐसी बात बताने वाले है

जो सभी इकट्ठे होकर सुनेंगे हमें क्या पता था कि होनी कुछ और ही है। बस हम घर तक पहुँचे ही कि फौरन दुबारा सूचना मिली कि हमारे प्यारे दादा रामचन्द्र जी हमें छोड़कर अमरापुर धाम स्वामी जी से जा मिले, सभी प्रेमियों के दुख का अंत ही नहीं था। सबेरे स्वामी जी दो सन्तों को छोड़कर रायपुर के लिए रवाना हो गए। हम सभी प्रेम प्रकाशी दादा के यहाँ इकट्ठे हुए तो ये है संतों की गति संत ही जाने हमें इशारों में पहले से ही बता देते हैं कि लेकिन हम ही रहस्य को समझ नहीं पाते। ये सब स्वामी जी की कितनी कृपा थी कि सब कुछ हो जाने के बाद में घटना घटी सब अच्छी तरह से भण्डारा हुआ। फिर शाम का सत्संग सब कार्य हो गया। क्या पता ये सारा कष्ट स्वामी जी ने अपने ऊपर ले लिया था क्या पता ये घटना पहले घटित होती लेकिन स्वामी जी की कृपा से यह सब बाद में हुआ। संतों की बातें ही बेअंत है। उनका अंत भला कौन जान सकता है। एक बात और हमें स्वामी जी बार–बार कह रहे थे।हम अगले साल गोंदिया नहीं आयेंगे। हम समझ रहे थे शायद स्वामी जी हम से नाराज हैं इसलिये ऐसा कह रहे हैं उन्होने संकेत में हमें पहले ही बता दिया था लेकिन हम ही कुछ जान न सके। कलम तो अभी रुक नहीं रही बाकी फिर कभी।

ओ जय जय टेऊँराम बाबा ओ जय जय टेऊँराम बाबा
तुहिंजो नालो आ टेऊँराम
दि॒यो था टिन्ही लोकन खे आराम
ओ जय जय टेऊँराम बाबा ओ जय जय सर्वानन्द बाबा
तुहिंजो नालो आ सर्वानन्द
दि॒यो सभखे था आनन्द
ओ जय जय सर्वानन्द बाबा जय जय शांति प्रकाश बाबा
तुहिंजो नालो आ शांति प्रकाश
सभ जे दिल खे करे शांति [illegible] प्रकाश
ओ जय जय शांति प्रकाश बाबा ओ जय जय हरदासराम बाबा
तुहिंजो नालो आ हरदासराम
दियो हर दास खे था आराम
ओ जय जय हरदासराम बाबा ओ जय जय भगतप्रकाश बाबा
तुहिंजों नालो आ भगत प्रकाश
दि॒यो था सभखे भगती ज्ञान जो प्रकाश
ओ जय जय टेऊँराम बाबा जय जय टेऊँराम बाबा
वधे सदा पथुं हीउ प्रेम प्रकाशी
चवे थी तव्हां जी मीरा दासी
ओ जय जय टेऊँराम बाबा ओ जय जय टेऊँराम बाबा

श्रीमती मीरा अंदानी 'गोंदिया'

भजन

तर्ज - ओह रे ताल मिले नदी के जल में

हो जी ज्ञान मिले गुरु के मुख से । टेक।
गुरु मिले सत्संग से
सत्संग मिले प्रेम लगन से कोई जाने ना...हो........२

१. मन से बुद्धि से परे, बुद्धि से आत्मा–२
तेरे ही अंदर बैठा, तेरा परमात्मा–२
हो मनवा रे ऽऽऽ तेरे ही अन्दर बैठा तेरा परमात्मा
मन से बुद्धि से इसे कोई जाने ना हो जी............

२. सागर के तट पे खड़ा पानी तू पाये ना–२
मुक्ति की राह में खड़ा, मुक्ति तू पाये ना–२
हो मनवारे ऽऽऽ मुक्ति की रात......
सत्गुरु तुझको रोज बुलाए, तु ही जाए ना हो जी.....

३. तेरी धड़कन कहती, सांसों की कीमत है–२
जीवन की पूंजी खाए, माया की दीमक ये'२
हो मनवारे ऽऽऽ जीवन की पूँजी............
जीवन ये दो दिन चार तु ही जाने ना हो जी..........

४. अनजाने लोगों से तेरी ये प्रीत है–२
तेरे ही अन्दर बैठा तेरा ही मीत है–२
मनवा रे ऽऽऽ तेरे ही अंदर.............
सच और झूठ को पगले तु ही जाने ना होजी........

प्रेम प्रकाशी राखी वेडवानी (गोंदिया)

पावन नाम "टेऊँराम"

सब मंगल का मूल है टेऊँराम शुभ नाम।
जाके स्मरण ध्यान से नाशत विघ्न तमाम।।

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का (पावन नाम "टेऊँराम") स्मरण करने से कार्य में उत्पन्न सभी विपत्तियों का नाश हो जाता है और कार्य पूर्णरीति से सम्पूर्ण हो जाता है।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का नाम "टेऊँराम" यह अक्षर कोई साधारण अक्षर नहीं है। यह एक ब्रह्म शब्द है। स्वामी जी का नाम (१०८ माला) के अन्तर्गत आता है, इसे पूर्णांक भी मान सकते हैं।

नाम "टेऊँराम" "टे" सिंधी भाषा में "टे" का मतलब तीन "ॐ" का मतलब है "ओम्"।

"टेऊँराम"

इसमें सात अक्षर होते हैं।

अक्षर	वर्णमाला क्रमांक
ट	११
ए	८
ओ	१०
म	२५
र	२७
आ	२
म	२५
कुल	१०८

इस प्रकार आचार्य श्री का नाम "टेऊँराम" १०८ पूर्णांकों से परिपूर्ण है ! इस नाम के स्मरण से स्वतः ही ईश्वर का पूर्ण साक्षात्कार हो जाता है।,

आचार्य सद्गुरु "टेऊँराम" जी महाराज के स्वरूप का वर्णन इस प्रकार है–

'टे' त्रिगुण स्वरुपाय 'ॐ' निर्गुण निरूपणे।
'टेऊँ' ब्रह्माभिधानाय, नमस्तस्मै नमो नमः।

अर्थात् – 'टे' तीन गुणों का स्वरूप है, ओम तीन गुणों से ऊपर, पर न्यारा है ! निर्गुण निराकार है। ऐसे ब्रह्म स्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को हमारा शत्–शत् बार प्रणाम है।

विनीत–**मीना कलवानी,** जयपुर (राजस्थान)

(भजन के माध्यम से "आचार्य श्री" का संक्षिप्त जीवन परिचय)

टेक :– भक्तों को दर्शन दे गये रे,
मेरे जयपुर वाले बाबा।
जयपुर वाले बाबा, मेरे खण्डू वाल बाबा।।

१. भक्तों ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है ?
टेऊँराम बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
२. भक्तों ने पूछा तुम्हारा जन्म स्थान कहाँ है ?
खण्डू गांव बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
३. भक्तों ने पूछा तुम्हारा मंत्र क्या है ?
सत्नाम साक्षी बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
४. भक्तों ने पूछा तेरा पंथ क्या है ?
प्रेम प्रकाश बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
५. भक्तों ने पूछा तुम्हारा प्रसाद क्या है ?
ढोढा चटनी बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
६. भक्तों ने पूछा तुम्हारा दिवस प्यारा क्या है ?
शनिवार बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
७. भक्तों ने पूछा तुम्हारा ग्रन्थ क्या है ?
प्रेम प्रकाश ग्रन्थ बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
८. भक्तों ने पूछा तुम्हें वस्त्र प्यारा क्या है ?
घघा–टोपी बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
६. भक्तों ने पूछा तुम्हारी प्रिय वस्तु क्या है ?
डण्डा चिप्पी बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
१०. भक्तों ने पूछा तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है ?
अमरापुर बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
११. भक्तों ने पूछा तुम्हारे गुरुदेव कौन हैं ?
आसुराम बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................
१२. भक्तों ने पूछा तुम्हें तिथि प्यारी क्या है ?
चौथ तिथि बता गये रे।। मेरे टेऊँराम..................

संकलित–**जय प्रेग प्रकाशी,** अमरापुर स्थान–जयपुर

जयपुर में ''पूज्य महाराज श्री'' के नाम की पावन स्मृतियाँ''

१. सद्‌गुरु टेऊँराम मार्ग
(नायला हाऊस रोड से जवाहर नगर बाई पास तक)
२. स्वामी टेऊँराम महिला सत्संग भवन
(अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर)
३. स्वामी टेऊँराम पॉली क्लीनिक
(विजयपथ – अग्रवाल फार्म, जयपुर)
४. स्वामी टेऊँराम मंदिर
(सेक्टर नं. १, मालवीय नगर, जयपुर)
५. स्वामी टेऊँराम महिला सत्संग भवन
(गोविन्द नगर, आमेर रोड, जयपुर)
६. स्वामी टेऊँराम महिला सत्संग भवन
(सेक्टर नं. १, मालवीय नगर, जयपुर)
७. स्वामी टेऊँराम महिला सत्संग भवन
(खवास जी का रास्ता, हवा महल रोड, जयपुर)
८. स्वामी सर्वानन्द पार्क
(सिन्धी कॉलोनी, राजापार्क)
६. स्वामी सर्वानन्द पब्लिक स्कूल
(विद्याधर नगर, जयपुर)
१०. स्वामी सर्वानन्द पार्क
(जवाहर नगर, सिन्धी कॉलोनी)
११. स्वामी सर्वानन्द बाजार
(सिन्धी कॉलोनी, राजापार्क)
१२. स्वामी सर्वानन्द मैरिज हाल
(नाहरी का नाका, सिन्धु नगर)
१३. स्वामी सर्वानन्द डिस्पेन्सरी
(अमरापुर स्थान, एम. आई. रोड़)
१४. स्वामी सर्वानन्द जल मन्दिर
(इन्दिरा बाजार)
१५. स्वामी शांति प्रकाश पब्लिक स्कूल
(आदर्श नगर, सिन्धी कॉलोनी)
१६. स्वामी हरिदासराम कम्प्यूटर प्रशिक्षण संस्थान
(सिन्धी कॉलोनी, साँगानेर)
१७. स्वामी हरिदासराम कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र
(रूप विहार कॉलोनी, सौडाला)
१८. प्रेम प्रकाश सत्संग भवन
(सिन्धी कॉलोनी, साँगानेर)

संकलन–**श्याम गुरुनानी, जयपुर**

भजन

तर्ज–जरा सामने तो आओ छलिये

(१) इस जमाने ने दिल बहुत दुखाया है।
नही रास मुझे कोई आया है।।
सिर्फ चरणों में तेरा ही ध्यान है।
बाकी दुनिया बड़ी बेईमान है।।
थोड़ी उनकी बना थोड़ी मेरी बना।
टेऊँराम जी सब बन जायें मेरे काम जी।।

(२) कुछ समझ ना आये परमात्मा।
आपका कहना है सबमें एक आत्मा।
किस किस से कहूँ किस्सा किसका कहूँ
तुम तो सब कुछ जानत हो मेरे राम जी।
मेरे प्यारे गुरूदेव टेऊँराम जी
मेरे दिल को दे दो आराम जी।
थोड़ी उनकी बना थोड़ी मेरी बना।
टेऊँराम सब बन जायें मेरे काम जी।

(३) इन्सा इतना क्यों छोटा दिल दास है।
जबकि सबमें ही आप का वास है।
मन क्यों ना डरे दर्शन तेरा करे।
इतना तू ही बता दे मेरे राम जी।
आगे कैसा करूँ मैं काम जी। मेरे प्यारे गुरूदेव।
टेऊँराम जी मेरे दिल को बना दे मेरे राम जी।
थोड़ी उनकी बना थोड़ी मेरी बना।
टेऊँराम जी सब बन जायें मेरे काम जी।

(४) अवगुण मेरे हरो दिल को साफ करो।
इतनी विनती सुनो टेऊँराम जी।
किससे कुछ ना कहू तेरे चरणों में रहूँ।
इतना थोड़ा दे मुझे अधिकार जी।
सिर्फ ध्यान धरूँ ऐसा काम करूँ।
जिसमें रह जाये तेरा भी नाम जी।
मेरे सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी।
मेरे बिगड़े बना दे सब काम जी।
थोड़ा दिल को हो जाये आराम जी।
मेरे प्यारे गुरूदेव टेऊँराम जी।
थोड़ी उनकी बना थोड़ी मेरी बना।
टेऊँराम जी सब बन जायें मेरे काम जी।

मुरलीधर खूबचंदानी, गोदिया

क्रांतदर्शी ही कालरूपी घोड़े पर सवारी कर सकते हैं

कालो अश्वोवहति सप्तरश्मिः सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमाहोरन्ति कवयोविपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।। (अथर्ववेद १६/५३/१)

अर्थ :– सात रस्सियों वाला हजारों धुरों को चलाने वाला कभी भी जीर्ण बूढ़ा न होने वाला महा बली समय रूपी घोड़ा चल रहा है, संसार को खींच रहा है। सब उत्पन्न वस्तुएं उसके द्वारा चक्रवत घूम रही हैं। उस घोड़े पर ज्ञानी और क्रांतदर्शी लोग ही सवारी कर सकते हैं।

भावार्थ :– वेद का यह मन्त्र हमें यह शिक्षा दे रहा है कि समयरूपी घोड़ा बड़ी तेजी से अपना कार्य कर रहा है। संसार में समय से तेज कुछ भी नहीं है। समय सभी पदार्थों से अधिक बलवान है। समय सब कुछ बदल देता है इस कारण हमें समय का विशेष ध्यान रखना चाहिए किसी कवि ने कहा है :– **''गाफिल तुझे घडियाल ये देता है मुनादी। गई ने घड़ी उम्र की इक और घटा दी है।''** इस कारण हमेशा यह याद रखो कि बढ़ते हुए पल हमारी जिन्दगी को धीरे–धीरे कम कर रहे हैं। मन्त्र में समय की तुलना घोड़े से की गई है क्योंकि घोड़ा धरती पर तीव्रतम धावक है जैसे– कोई मनुष्य भागते हुए घोड़े की बराबरी नहीं कर सकता उसी तरह कोई मनुष्य समय को पकड़ नहीं सकता।

ये वेद का मन्त्र हमें यह शिक्षा दे रहा है कि अगर हम जीवन में सफल होना चाहते हैं तो हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम इस समयरूपी घोड़े पर बैठने की कोशिश करें। इस समयरूपी घोड़े पर बैठने के क्या उपाय हैं ? इस के दो उपाय हैं। पहला कि मनुष्य अपने अन्दर ज्ञान को उत्पन्न करे और दूसरा कि वह क्रान्तदर्शी अर्थात् दूरदर्शी बने। इन दो उपायों को अपना कर मनुष्य समयरूपी घोड़े को साध सकता है। वैसे तो संसार में बहुत से पुरुष–स्त्री समय–अश्व पर बैठने की कोशिश करते हैं, लेकिन अपने आलस्य, प्रमाद अज्ञानता, द्वेष, ईर्ष्या, आसक्ति और मोह के कारण इस काल अश्व से गिर जाते हैं। इस पर वही सवारी कर सकते हैं जो ज्ञानी और दूरदर्शी हों। जैसे योगिराज श्री कृष्ण। उन्होंने अपने ज्ञान का इस प्रकार उपयोग किया कि थोड़े से पांडवों ने थोड़ी सी सेना के द्वारा विशाल कौरव कुल और सेना का समूल नाश कर दिया। यह श्री कृष्ण की दूरदर्शिता ही थी जो वह युद्ध की भीषणता को जान कर कौरवों से सन्धि करने के लिए गये। दुर्योधन को समझाया। कृष्ण ने अपने ज्ञान के द्वारा ही कंस और जरासंध जैसे महाबलशाली राजाओं को समाप्त किया और देश में शांति की स्थापना की। कृष्ण का ज्ञान हम महाभारत में पद–पद पर देख सकते हैं। उन्होंने हर समय यह कोशिश की कि ''धर्म की स्थापना हो और अधर्म का नाश हो''। कृष्ण का जीवन ज्ञान और वैराग्य की अद्भुत मिसाल है, उन्होंने १२ वर्ष तक पत्नी रुकमणी के साथ ब्रह्मचर्य का पालन करके प्रद्युम्न नाम का एक ही पुत्र पैदा किया था जो बल–पराक्रम और ज्ञान में श्री कृष्ण के सदृश था। उनके इस गुण को देखकर भीष्मपितामाह ने कहा था।

''यतोधर्मरस्ततः कृष्णः यत कृष्णरस्ततोजयः।''
अर्थात् जहाँ धर्म है, वहाँ कृष्ण हैं और जहाँ कृष्ण हैं वहाँ विजय अवश्यम्भावी है, क्योंकि कृष्ण की नीतिमत्ता और रण कुशलता का कोई उपमान नहीं था।

श्री कृष्ण ने अपने ज्ञान का परिचय महाभारत के स्थलों पर कई बार दिया है। चाहे वह विदुर का सत्कारग्रहण हो, सुदामा से मित्रता हो, द्वारका के लिए प्रस्थान हो, जरासंध व कंस का वध हो, दुर्योधन और भीम की लड़ाई हो या फिर अर्जुन का सारथि बन कर उसका युद्ध संचालन करना हो। कृष्ण ने नीतिमत्ता से सभी को अचभिंत कर दिया था। कृष्ण ने कहा था :–

यथा मनुष्य जीर्ण वस्त्रों को तज, नवीन धारण करता।
तथैव आत्मा यह शरीर तज नूतन तन को है धरता।।

हम कृष्ण के इस उपदेश का पालन करेंगे तो हम जीवन में अवश्य सफल होगें।

–दीपक कन्फेक्शनरी, आगरा

गीता जयती पर विशेष

श्रीमद् भगवद् गीता का अद्भुत ज्ञान

(सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के प्रवचनों से)

एक बार की बात है कि भगवान श्री विष्णु के दूत एक अजनबी आदमी को लेकर स्वर्ग में पहुँचे। उन्हें देखकर इन्द्र चकित सा रह गया। और उनके तेज के प्रभाव से इन्द्र हतप्रभ होकर इन्द्रासन से उठ खड़ा हो गया। तब श्री विष्णू के दूतों ने उस आगंतुक को इन्द्रासन पर बिठाकर राजतिलक कर दिया और उन्हें इन्द्रपद दे दिया। जब श्री विष्णु के दूत जाने लगे तो इन्द्र ने दूतों से पूछा तो श्री विष्णु के दूतों ने कहा कि अब इन्द्र पद यही संभालेंगे। इनके पुण्य इतने बढ़ गये हैं कि ये इन्द्रपद के अधिकारी हो गये हैं।

इन्द्र ने सोचा उसके पास ऐसा क्या है, उसने ऐसा क्या किया है जिससे मेरा पद उसे दिया जा रहा है ? इन्द्र ने अपनी दैवीय शक्ति से उस आगन्तुक का सारा भूतकाल देख लिया। इन्द्र दंग रह गया और भगवान विष्णु के पास गया और पूछा– प्रभु ! सौ सौ अश्वमेध यज्ञ करने के बाद भी कोई विरला ही इन्द्र पद को पाता है। इस आदमी ने न तो अश्वमेध यज्ञ किये, न दान दिया न पुण्य किया, न ही लाख–दो लाख पेड़ पौधे लगाये, न व्रत उपवास किये, न हजारों भूखों को भोजन कराया है फिर यह इन्द्र पद का अधिकारी कैसे हो गया ?"

श्री भगवान बोले– "यह व्यक्ति न तो अश्वमेध यज्ञ से, न तो दान पुण्य से और न ही भूख व्यक्तियों को भोजन कराया है। यह व्यक्ति तो नित्य प्रति गीता के ज्ञान में नित्य रमण करता था। तुमने तो वस्तुओं का उपयोग करके पुण्य पाया था और उन पुण्यों के बल से इन्द्र बने थे। लेकिन इसने तो 'सब' का अनुसंधान करके निज आत्मा के ज्ञान में रत रहकर परमात्मा का सामर्थ्य पाया है। इसके तो महापुण्य हैं। इन्द्र का पद भी इसके लिये तो तुच्छ ही है। इन्द्र ! स्वर्ग के भोग भोगने से तुम्हारे पुण्य क्षीण हो गये, तुम हतप्रभ हो गये हो। अगर तुम फिर से अपना प्रभाव जगाना चाहते हो, आत्म बल बढ़ाना चाहते हो तो तुम्हें मृत्युलोक में जाना चाहिए और "गीता का ज्ञान सुनकर ध्यान रूप होना चाहिए।"

श्री भगवान के बताने पर इन्द्र भारत–भूमि में कालिका ग्राम के निकट गोदावरी नदी के किनारे ब्राह्मण का रूप लेकर इन्द्र एक छोटी सी कुटिया में रहने लगा। वहाँ श्री गीता का अध्ययन करते–करते गीता के ज्ञान के अनुसार उसने अपनी इन्द्रियों को मन में, मन को बुद्धि में और बुद्धि को आत्मा–परमात्मा सोऽमं स्वभाग में लीन किया। ज्यों–ज्यों ध्यान को, उस अकाल स्वरूप के रस का चस्का लगता गया, त्यों–त्यों इन्द्र के चित में बाहर का आकर्षण कम होता गया। धीरे–धीरे चित शांत हो गया, वृतियाँ पावन होती गयीं और चित्त में छुपे हुए चैतन्य का प्रसाद प्रकट होने लगा। गीता के ज्ञान के अनुसार इसी अभ्यास में सतत संलग्न रह कर उसने श्री विष्णु का सायुज्य प्राप्त कर लिया।

संकलन–**भोलाराम प्रेम प्रकाशी,** जयपुर

भजन

"स्वामी टेऊँराम खण्डू वाला"

स्वामी टेऊँराम खण्डू वाला तू ही मेरा रखवाला
साईं तू ही मेरा रखवाला।

१. सिर तेरे पे टोप सोहे, गल फूलां दी माला सोहे,
पीले पीले चोले वाला, तू ही मेरा रखवाला........

२. दवार तेरे जो आता है मन की मुरादें पाता है
झोलीयां भर ले जाता है, दुखड़े तू मिटाने वाला
तू ही मेरा.................

३. साईं तेरे खेल निराले ने डूबदे जीव उभारे ने,
मैं वी तेरी शरण आया, तू मेरा.....................

४. योगी यती वैरागी हो, अमरापुर दे वासी हो
कटदे सब दी चौरासी हो, दास तेरी शरण आया
तू ही मेरा रखवाला, स्वामी टेऊँराम डण्डे वाला

श्रीमती शकुन्तला तनेजा, पलवल

स्वामी हरिदास - सन्देश

७१. ''संकल्प करने वाला व्यक्ति चाहे धर्मात्मा हो या पापी, करता तो वह मन से ही है। ऐसा तो होता नहीं कि मन केवल पापी के पास होता है, धर्मात्मा के पास नहीं ? भक्ति हमारे मन के संकल्प को परमात्मा से जोड़ती है।''

७२. ''जीव किसका है? परमात्मा का मन भी उसी का, माया भी उसी की, तो उसकी शरण में जाये कौन ? भगवान कहते हैं – तीनों मेरे हैं, तो फिर चौथा व्यक्ति है कहा जो उसकी शरण मे जाये? इसका अर्थ क्या हुआ? हमें सबका भरोसा छोड़कर केवल एक उसकी शरण में जाना होगा।''

७३. 'संसार का अर्थ है माया' । जो सभी भरोसे छोड़ देगा वही माया रूपी संसार को पार कर जायेगा।

७४. ''निन्दा–स्तुति(यानि साराहना) जो दोनों का परित्याग करता है भगवान कहते हैं वह है मेरा भक्त। वहीं है आत्म ज्ञानी ।''

७५. ''अन्न के सूक्ष्म भाग से बनता है मन, जल(रस) के सूक्ष्म भाग से बनती है वाणी, चिकनाई, घी. मक्खन से बनते है प्राण। विचार करते हैं मन से, बोलते हैं वाणी से और सांस लेते हैं प्राण से । तीनों अंश जड़ ही हैं तो फिर आत्मा क्या है ? सभी तत्वों का आधार क्या है ? यही जानने की जिज्ञासा से नचिकेता ने भी यमराज जी से पूछा था ।''

७६. ''जब तक हमारा ज्ञान, हमारी क्रियाओं में नहीं बदलता तब तक हमारा प्राप्त ज्ञान बिना आत्मा वाला शरीर है । ''

७७. भगवान न प्रसन्न होते है पाठ पढ़ने से , न यज्ञ से, न दान से, न पुण्य से, किसी भी सत्य कर्म, शुभ कर्म के द्वारा वे प्रसन्न होने वाले नहीं। भगवान प्रसन्न होते है भक्ति से ।''

प्रस्तुति–**प्रीतम प्रेम प्रकाशी,** जयपुर

कबीर वाणी

कबीर के जन्म के सम्बन्ध में तो सभी जानते हैं। हम यहाँ कबीर के विचारों के सम्बन्ध में कुछ विचार करेंगे। कबीर निराकार परमात्मा के उपासक थे। वे सर्वव्यापक परमात्मा को मन्दिरों और मस्जिदों में कैद नहीं करना चाहते थे।

जैसे– **पाथर पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहाड़।**
ताते तो चाकी भली पीस खाय संसार।।

उन्होंने सभी क्षेत्रों में फैले अंधविश्वास को अपना निशाना बनाया था।

जैसे– **पत्थर चूना जोड़कर मस्जिद लयी चिनाय**
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय

कबीर ने ईश्वर को पाने के लिए बाहरी आडम्बरों की जगह अपने भीतर की शुद्धता पर ध्यान देने को कहा।

जैसे– **कबिरा मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर।**
पाछे लागा हरि फिरत कहत कबीर कबीर।।

कबीर ने परमात्मा को अपने अन्दर ढूँढने के लिए उपदेश किया था। वे चाहते थे कि लोग पहले अपने मन से लालच, ईर्ष्या, घृणा, अहंकार इत्यादि की कीचड़ को निकाल फेंके तभी हमें परमात्मा के दर्शन होंगे। जैसे मैले शीशे में चेहरा साफ नहीं दिखता वैसे ही गंदे मन में परमात्मा के दर्शन नहीं होते।

औरों का पिया परदेश बसत हैं,
लिख–लिख भेजे पाती।
मेरा पिया मेरे हृदय बसत है,
गूँज करूँ दिन राती।।

(संकलित)

श्री अमरापुर समाचार दर्शन

कातिकात्सव म उमडा जनसलाब

बालकृष्ण रूप ने मनमोहा, पद्यात्री श्री अमरापुर धाम पहुँचे

कार्तिक मास में प्रेमियों का जीवन क्षण भर भगवान के नाम जपने से कृतार्थ्य हो जाता है। हिन्दू धर्म में कार्तिक मास का बड़ा ही महत्व है। यह मास पुण्यकारी मास के नाम से भी जाना जाता है। वेदानुसार इस महीने में अगर कोई मनुष्य प्रातःकाल स्नान व श्रद्धा से नाम जपे और शुद्ध मन से अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान करे तो उसके पाप नाश हो जाते हैं।

ऐसे पुण्यकारी मास को श्री दरबार में भी बड़े हर्षो उमंग के साथ मनाया गया। इस महान पुण्यकारी उत्सव की शुरुआत ६ नवम्बर पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में पाठों का शुभारम्भ करके की गई, और इस दिन ७ नवम्बर से १६ नवम्बर तक चलने वाली मधुर संकीर्तन फेरी की सूचना श्रद्धालुओं को दी गई।

७ नवम्बर :– आज था मधुर संकीर्तन "प्रभात फेरी" का प्रथम दिन, वह दिन जिस दिन का इन्तजार होता है हर जयपुर वासी को। जैसे ही घड़ी ने ५:३० बजाऐ श्री दरबार का नीरस व शांत वातावरण प्रेमियों के प्रार्थना स्वर से गुंजित हो उठा। आज सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के पावन अवतरण का दिन गुरुवार था इस पुनीत मास में, प्रेमीगण श्री दरबार आने का अवसर गंवाना नहीं चाहते थे।

इसलिये श्री दरबार को प्रातः ५:३० बजे देखकर लग रहा था कि आज श्री दरबार में कोई खास उत्सव है। प्रेमीगण अतिशीघ्र ही श्री दरबार के मन्दिर परिसर में माथा टेकने में व्यस्त हो गए थे। वही सन्तों के कक्ष के नजदीक श्रद्धालुगण एकत्रित थे। सेवाधारीयों द्वारा चौपहिया वाहन की सजावट का काम चल रहा था। चौपहिया वाहन जिसके चारों ओर रंग–बिरंगी झालरें व पताकाओं से मनोहरकारी सजावट उसके अग्र भाग में छोटा सा मंच, जिसमें आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की छोटी संगमरमर की प्रतिमा जिसके मुखमण्डल की आभा देखते ही बनती थी। वहीं बड़ी मरकरी लाइट का प्रकाश जैसे ही गुरु महाराज के श्री मुख पर पड़ रहा था तो उनके चेहरे की आभा और ज्यादा चित्ताकर्षक लग रही थी। चौपहिया वाहन के आगे ध्वनि विस्तारक यंत्र लगाया गया था।

घड़ी की सुई ने जैसे ही ६:०० बजाये, सम्पूर्ण प्रेमीगण सुशोभित चौपहिया वाहन के आगे एकत्रित हो गये और गुरु महाराज की जय–जयकार के साथ महान संकीर्तन फेरी शुरू हुई। आगे–आगे प्रेमीगण बीच में चौपहिया वाहन जिसके आगे ध्वनि विस्तारक यंत्र हाथ में लिये संत मोनूराम जी व दादा तीर्थदास

खास बातें

१. मालवीय नगर, सिन्धी कॉलोनी, शास्त्री नगर आदि स्थानों से पद्यात्री प्रातःकाल श्री अमरापुर धाम प्रभात फेरी में शामिल हुये।
२. एकादशी के दिन (झाँकियों) बालकृष्ण रूप व ग्वालों ने मन मोहा।
३. एकादशी, गोपाष्टमी व आंवला नवमी व कार्तिक पूर्णिमा पर अपार प्रेमी।
४. इन्टरनेट पर प्रभात फेरी का प्रसारण हुआ।
५. प्रभात फेरी में बच्चों ने भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया।
६. रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ।
७. प्रभात फेरी में भगवत कीर्तन में हजारों श्रद्धालु झूमे।
८. जयपुर शहर के कोने-कोने से प्रेमीगण श्री दरबार आये।

जी चल रहे थे। वहीं अमरापुर के विद्यार्थी व युवा प्रेमी ढोलक व झांझ लिये मधुर धनि के स्वर को और ज्यादा मधुरकारी बना रहे थे। चौपहिया रथ के ठीक पीछे मधुरकारी धुनियों में मंत्रमुग्ध होकर करताल के साथ चली चल रहीं थीं मातायें व बहनें।

''जय-जय राधारमण हरि बोल'' की मधुर धुनि जैसे ही शुरु हुई प्रेमीगण मधुर संकीर्तन के स्वर में सम्मोहित होकर धुनि लगा रहे थे। सम्पूर्ण श्री दरबार अमृत वेला में अमृत धुनि से गुंजयमान हो उठा, मधुर धुनि के साथ चौपहिया रथ आगे सरका एवं गुरुमुखद्वार पर आकर पहली परिक्रमा शुरु हुई। **''धन बाबा टेऊँराम सारा जग तारिया''** की मधुर धुनि शुरु हुई तो प्रेमीगण हाथों से करतल करते हुये इस मधुर धुनि का उच्चारण कर रहे थे। धीरे–धीरे मधुर धुनि का स्वर तीव्र होता गया और प्रेमीगण हाथों से करतल करने के साथ–साथ पैरों से नृत्य भी करने लगे। धीरे–धीरे तीव्र होते हुये अन्त में धीरे–धीरे धुनि स्वर धीमा हो कर शिवोऽम का उच्चारण करके फेरी आगे बढ़ी।

प्रेमीगण अपना सब कुछ भूलकर मधुर धुनि के प्रेम प्रवाह में आगे बढ़ते जा रहे थे। गौशाला के निकट आकर यह प्रेम के प्रवाह में बढ़ता काफिला रुका और शुरु हुई मधुर धुनि **''राधा-राधे गोविन्द राधे''** में प्रेमीगण गोविन्द के गुणगान में मस्त होकर इस महाआनन्द को लूटने लगे लगभग ५ मिनट तक भगवान कृष्ण के गुणगान होने के पश्चात् शिवोऽम का उच्चारण कर यह फेरी आगे बढ़ी। गौशाला से निकल कर प्रेमीगण व सन्तों का यह समूह श्री दरबार के पृष्ठ भाग के विशाल परिसर में एकत्रित हुआ यहाँ पहुंचकर प्रेमीयों की संख्या पहले से दुगुनी हो गई थी इतने विशाल परिसर में प्रेमीगण भंवरे के रूप में परिणित होकर दिव्यकारी हरि रस पान के लिये आतुर हो गए फिर जैसे ही संत श्री ने गुरु महाराज के लिये यह मंगल दोहा उच्चारित किया।

''मंगलमय गुरु रूप है, मंगलमय गुरु धाम।
मंगलमय गुरु नाम है, धन गुरु टेऊँराम।।''

सभी प्रेमी मंगलमूर्ति आचार्य श्री टेऊँराम जी महाराज की जय–जयकार करने लगे। **''जय टेऊँराम, दर्श दिखाना''** मधुर संकीर्तन उच्चारित करते हुये हाथों से करतल व मुख से आचार्य श्री का स्वर उच्चारण करने लगे धीरे–धीरे हरि रस का पान करते हुये यह जुलूस आगे बढ़ते हुये ''महाराज श्री'' के कक्ष के आगे आकर रुका और शुरु हुआ पुनः मधुर संकीर्तन जिसके प्रवाह में डूबने को आतुर थे प्रेमीगण। जैसे ही सन्त श्री ने **''सत्नाम साक्षी सदा बोल प्यारा''** की धुनि को उच्चारित किया। प्रेमीगण मन मोहित होकर अपने को भूलकर इस दिव्यकारी

संकीर्तन में उच्चारित धुनियाँ

१. जय टेऊँरामा–दर्श दिखाना।
अनरापुर बसिया रे – मेरे मन बसिया रे।।
२. चलते चलो – चलते चलो।
सत्नाम साक्षी कहते चलो।।
३. स्वामी टेऊँराम दर्श मोहे दिना।
दर्श मोहे दिना– दर्श मोहे दिना।।
४. श्री मन नारायण–नारायण हरि हरि।।
५. भज गोविन्द बालमुकुन्दं।
सर्वानन्दं हरे हरे।।
६. एक–दो–तीन–चार।
स्वामी जी की जय जयकार।।
७. झूले–झूले–झूलेलाल आयो लाल।।
८. टेऊँराम बाबा मेरा है।
तेरा नहीं वो मेरा है।।
९. राधे–राधे गोविन्द–गोविन्द राधे।।
१०. मन मोह लिया मुरली वाले ने।।
११. गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो।।
१२. सत्नाम साक्षी सदा बोल प्यारा।
सदा बोल प्यारा, मुख खोल प्यारा।।

महामंत्र का उच्चारण करने लगे।

जैसे–जैसे प्रथम फेरी पूरी होने वाली थी वैसे–वैसे ही प्रेमीयों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी। सभी प्रेमीगण मधुर धुनि को सुनकर अपने आप को रोक नहीं पा रहे थे ऐसा कोई विरला ही होगा जो इस मधुर धुनि में महान् संकीर्तन का उच्चारण न कर रहा हो। धीरे–धीरे हरि का गान व प्रेम का पान करते हुए यह मधुर प्रभात फेरी सन्तों के कक्ष के समीप होते हुऐ भण्डार गृह तक पहुँची। प्रेमियों के प्रेम का प्रवाह बढ़ता ही जा रहा था। आगे ढोलक व झांझ का मधुर स्वर भी तीव्र हो रहा था। प्रेमियों का मधुर स्वर व विभिन्न वाद्य यंत्रों का स्वर मिलकर एक विचित्र प्रकार के ब्रह्मानन्द की रचना कर रहा था।

जिसका अनुभव तो उन्हें ही हो सकता है। जिसने इस दिव्यकारी प्रभात फेरी में शामिल होकर अपने को कृतार्थ किया हो। समय की सीमा को ध्यान में रखते हुये प्रेमियों का जुलूस आगे बढ़ने लगा और श्री दरबार के बाहरी परिसर में बने अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर के बाहर आकर रुका और वहाँ ''दादा तीर्थदास जी'' द्वारा **''हरि ओम नमो शिवाय सदा शिव हरि ओम नमो शिवाय''** का स्वर जैसे ही उच्चारित हुआ, सभी प्रेमी नीलकण्ठ महादेव के मधुर स्वर का गुंजयमान करने लगे।

इस प्रकार मधुर धुनि का उच्चारण करते हुये गुरुमुख द्वार पर आकर इस अमृत फेरी की प्रथम परिक्रमा समाप्त हुई। वहाँ दादा तीर्थदास जी ने यह दोहा बोलकर प्रेमीयों को मंत्र मोहित सा कर दिया।

''भई गजब की बांसुरी तो बजती थी वृन्दावन बसैईया की,
करुं तारीफ करुं उस मुरलीधर बजईया की।
चलता न था जोर जहाँ ब्रज की तीर और तलवारों से,
विजय होती थी जहाँ नटवर की तानों से''

इतना मधुर संकीर्तन सुनकर प्रेमी शरीर की सुध–बुध भूलकर हरि रस का पान करने लगे सम्पूर्ण गुरुमुख द्वार के चारों कोने प्रेमीयों से लबालब भर गये, सभी प्रेमीगण नृत्य में व्यस्त थे और उनके साथ व्यस्त थे अमरापुर के नन्हे–नन्हे सन्तगण। सफेद, उज्ज्वल वस्त्र और कमर में लाल पताका बाँधे अपने नन्हे हाथों को ऊपर उठाकर वह इतना मधुर नृत्य कर रहे थे, कि अगर कोई प्रेमीगण उन्हें देखता था तो वह भी नृत्य करने से नहीं रुक रहा था।

अहा! नन्हे–नन्हे सन्तगणों का यह रूप देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। धीरे–धीरे संकीर्तन जुलूस आगे सरकता रहा और प्रेमीगण हरि नाम के रस का पान कर रहे थे समय का पता ही नहीं था आखिर तक तीनों परिक्रमा गुरुमुख द्वार पर आकर समाप्त हुई श्री दरबार के चारों कोनों से श्रद्धालुगण सत्संग हाल के मध्य में एकत्रित हुये।

सत्संग हाल के मध्य में प्रवेश करते ही दर्शन हुये महाराज श्री की मधुरकारी छवि के, सत्संग हाल

प्रभात फेरी में उच्चारित दोहे

१. मंगलमय गुरु रूप है, मंगलमय गुरु धाम।
मंगलमय गुरु नाम है, धन गुरु टेऊँराम।।
२. ब्रज मण्डल सम रास है, परम मनोहर जान।
वृन्दावन सम धाम है, अमरापुर स्थान।।
३. वृन्दावन में श्याम है, अयोध्या में श्री राम।
अमरापुर मांहि बसे, सद्गुरु टेऊँराम।।
४. सद्गुरु टेऊँराम का अमरापुर स्थान।
सत्नाम साक्षी मंत्र का करो यहाँ गुणगान।।
५. सद्गुरु टेऊँराम की महिमा कहि न जाय।
कठिन समय में होते है सर्वानन्द सहाय।।
६. चलो सखी वहाँ जाइये, जहाँ बसे ब्रजराज।
माखन बेचन हरि मिले, तो एक पंथ दो काज।।
७. भई गजब की बांसुरी तो बजती थी वृन्दावन बसैईया की,
करुँ तारीफ करुँ उस मुरलीधर बजईया की।
चलता न था जोर जहाँ ब्रज की तीर और तलवारों से,
विजय होती थी, जहाँ नटवर की तानों से।।

के मध्य में सुसज्जित प्रकोष्ठ जिसके चारों और सजावट की गई रंग–बिरंगी मालाओं और पताकाओं से। जिसमें विराजमान थे हमारे इष्टदेव लक्ष्मीनारायण भगवान, आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज व सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज की चिन्ताकर्षक प्रतिमायें। जिसके मुखमण्डल की आभा आज सूर्य देव की आभा से भी बढ़कर लग रही थी। श्री दरबार के भीतरी भाग में श्री मन्दिर व समाधि स्थल की सजावट भी कम नहीं थी।

सम्पूर्ण सत्संग परिसर प्रेमियों से व सत्संग मंच सन्तगणों से शोभयमान हो रहा था। सन्त श्री ने सत्संग मंच पर आकर महाराज श्री की महिमा के गुणगान का यह दोहा गाया।

''सद्गुरू टेऊँराम की, महिमा कही न जाय।
कठिन समय में होत है, सर्वानन्द सहाय।।

इतना मधुर संकीर्तन वो भी आचार्य श्री के गुणगान का जिसको सुनकर प्रेमियों का हृदय अधीर होकर छटपटाने लगा। जैसे ही सन्त श्री ने **''टेऊँराम बाबा किसका है''** का मधुर संकीर्तन उच्चारित किया। प्रेमियों का हृदय आचार्य श्री को अपना बनाने के लिये अधीर हो उठा और बोल पड़े **''तेरा नहीं वो मेरा है, टेऊँराम बाबा मेरा है''** सन्तगण ऊँचे स्वर में कहते **''टेऊँराम बाबा मेरा है''** पर प्रेमीगण भी कहाँ पीछे रहने वाले थे वह हाथों से करतल व पैरों से नृत्य करते हुये तेज वेग में कहने लगे **''टेऊँराम बाबा मेरा है।''** ढोलक व झांझ का स्वर तेज होते हुये आखिरकार धीमा हो गया पर प्रेमीगण तो अपने ''बाबा'' को अपनाये बिना रुकने वाले नहीं थे।

अंत में सन्ती श्री के यह कहने पर **''अच्छा बाबा सबका है''** तब सभी अपने बाबा को अपना बनाकर उत्साहित हो उठे और फिर जैसे ही सन्त जी ने जैसे ही यह दोहा बोला कि :–

वृन्दावन में श्याम है, अयोध्या में श्री राम।
अमरापुर माहि बसे सद्गुरु टेऊँराम।।

प्रेमीगण अपनी सुधबुध भूलकर ''मुहिजों सद्गुरू **टेऊँराम दण्डे वारो......................दण्डे वारो, जहिंजो नालो टेऊँराम आ ....दण्डे वारो**

का संकीर्तन उच्चारित करने लगे और हाथों में करतल करते हुये उत्साहित होकर दण्डे वारे की जय–जयकार करने में इतने व्यस्त हो गये कि समय का ध्यान न रहा, आखिर ७:२० बजे प्रेम प्रकाशियों के महामंत्र ''सत्नाम साक्षी'' का १०८ बार जाप किया गया और अन्त में अंगुली को उठाकर ''शिवोऽम'' का उच्चारण कर प्रभात फेरी का विसर्जन हुआ।

हर रोज श्रद्धालु इस महान दिव्यकारी प्रभात फेरी में आकर अपने जीवन को कृतार्थ कर रहे थे। इसका अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि पहिले दिन की अपेक्षा दूसरे व तीसरे दिन श्रद्धालुओं की संख्या हजारों में हो गई थी। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष दिन जैसे **१२ नवम्बर गोपाष्टमी** आज का दिन श्री दरबार में प्रतिदिन की भाँति प्रातःकाल की पावन बेला में गुरु दरबार की परिक्रमा शुरु हुई। प्रति दिन की अपेक्षा आज भक्तजनों में उल्लास एवं संख्या में वृद्धि दिखाई दे रही थी। आज प्रातः काल ''मालवीय नगर'' से कई श्रद्धालुगण पैदल चलकर श्री दरबार आये।

आज प्रतिदिन की भाँति गुरुमुख द्वार से फेरी शुरु हुई पर जैसे ही गौशाला के निकट यह विशाल हरिनाम संकीर्तन फेरी पहुँची तो नेत्रों को सुखानन्द की प्राप्ति हुई। सम्पूर्ण ''गौशाला'' के बाहरी व आन्तरिक भाग को ''गौपालक'' गोपाल की विभिन्न मुद्राओं के चित्रों से सजाया गया था। पुष्पों व लताओं से आकर्षक सजावट की गई थी। प्रातःकालीन प्रभात फेरी के पश्चात् सायंकाल ४ बजे ''अमरापुर गौशाला'' में गौ माता का पूजन किया गया। जिसमें सन्तगण व श्रद्धालुओं ने गौ की पूजा अर्चना करके श्रद्धापूर्वक ''गोपाष्टमी'' मनाई।

१३ नवम्बर :– आज आंवला नवमीं के दिन प्रभात फेरी के पश्चात् सत्संग की समाप्ति हुई। उसके पश्चात् श्री दरबार के बाहरी परिसर में स्थित "ऑवला वृक्ष" के नीचे सभी सन्तगण व प्रेमी इकट्ठे हुये और प्रसाद ग्रहण किया।

शुक्रवार १५ नवम्बर :– आज "एकादशी" का महान पवित्रतम दिन था। आज श्री दरबार में प्रेमीयों का जन सैलाब ही आ गया था। आज शहर के प्रत्येक कोने से श्रद्धालुगण अटूट श्रद्धाधारण कर श्री दरबार में श्री कृष्ण की जय–जयकार करते हुये आने लगे। दिव्य हरि नाम के रस का पान करते हुऐ समय अपनी गति से बढ़ता जा रहा था।

१७ नवम्बर :– आज श्री दरबार में **"रक्तदान शिविर"** का आयोजन किया गया। आखिर धीरे–धीरे प्रेम रस का पान करते हुये १६ नवम्बर प्रभात फेरी का अन्तिम दिन ही आ गया।

१६ नवम्बर मंगलवार प्रतिदिन की भाँति प्रभात फेरी का आयोजन हुआ। जिसमें आज श्रद्धालुओं की संख्या अनगिनत थी। जिसकी गणना करना मुश्किल है। इसका अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि मुख्यद्वार के बाहर वाहनों का काफिला लगा पड़ा था। शहर का व्यस्ततम एम.आई. रोड वाहनों के कतारों से भरा पड़ा था और अन्दर श्री दरबार प्रेमियों से भरा हुआ था। प्रातः ५:३० बजे से शहर के कोने–कोने से हरि सुमरण के लिये प्रेमियों का जनसैलाब उमड़ पड़ा।

आचार्य की जयकार के साथ यह प्रभात फेरी गतिमान हुई। **"श्री मन नारायण-नारायण नारायण"** की मधुर धुनियों का स्वर प्रेमियों के स्वर से मिलकर और भी तेज हो रहा था। जैसे–जैसे फेरी आगे बढ़ रही थी प्रेमियों की संख्या दुगुनी होती जा रही थी। इसका अनुमान तो इस बात से ही लगाया जा सकता है कि जहाँ चौपहिया रथ गुरुमुख द्वार पर आकर रुका वहीं उसके पीछे माताएँ बहनें श्री दरबार के पृष्ठ भाग में स्थित विशाल परिसर में खड़ी थी।

सभी भक्तजन संकीर्तन में तल्लीन थे। श्री दरबार का ऐसा कोई भी कोना न था जहाँ कि भक्तगण मधुर संकीर्तन के स्वर में तन्मय होकर करताल न कर रहे हों। आज प्रभात फेरी का नजारा भी हृदय को आलोकित न कर रहा हो आगे प्रेमी हरिनाम की मस्ती में चले जा रहे थे। बीचों–बीच सन्त मण्डल भक्तगणों के बीच शोभा पा रहे थे। पीछे माताऐं बहनें नृत्य में तल्लीन थीं।

क्या बूढ़े क्या बच्चे सभी तन्मयता के साथ सुध–बुध खोकर नाच गा रहे थे। कैमरामैन व मूवी मैन इन दुर्लभ दृश्यों को कैद करने में व्यस्त हो गये। धीरे–धीरे हरि रस का पान करते हुये समय अपनी गति से बढ़ता चला जा रहा था। समय के साथ–साथ श्रद्धालुओं की संख्या ने भी विशाल रूप धारण कर लिया था। सेवाधारी चौपहिया रथ के चारों और अनियंत्रित भीड़ को संभालने में असमर्थ हो रहे थे। बड़ी कठिनाई से ७:०० बजे तीन परिक्रमा गुरुमुख द्वार पर आकर पूर्ण हुईं।

अन्दर पूरा सत्संग परिसर प्रेमियों से भरा हुआ था। प्रेमीयों का मन अधीर हो रहा था। हरिनाम का सुमरण करने के लिये सन्त श्री मोनूराम जी ने पुनः पिलाया प्रेमियों को हरि रस का पान जिसका पान कर प्रेमीगण मोहित हो उठे और हरि के अनुराग में रंगकर नृत्य करने लगे।

आखिर ७:३० तक हरि का जाप करके "सत्नाम साक्षी" मंत्र का उच्चरण कर प्रेमी मस्त थे। पर जैसे ही सन्त श्री ने "शिवोऽम" का उच्चारण कर इस प्रभात फेरी का विसर्जन किया तो प्रेमियों के हृदय छटपटा उठे कि पुनः ऐसे सुखद क्षण की अनुभूति कब होगी। जिसके आनन्द का वर्णन लेखनी के बस की बात ही नहीं है।

आज प्रभात फेरी की समाप्ति के पश्चात् सत्संग गंगा शुरु हुई जिसमें ७ से ११ बजे तक प्रार्थना व

सन्तों द्वारा सत्संग प्रवचन किये गये। सभी सन्तगणों ने अपने अमृत प्रवचनों की वर्खा कर प्रेमियों को लाभान्वित किया तत्पश्चात् सन्त श्री मोनूराम जी ने अपने प्रवचन में बताया कि–

''गुरुदेव मिठा मनठार, मुहिजा सद्‌गुरु टेऊँराम''

उन्होने बताया कि हमारी आँखों की पवित्रता तब होगी जब हम भगवान के दर्शन करें। पैरों से पवित्र अमरापुर धाम में जाऐं, कानों से परमात्मा के वचनों का श्रवण करें मुख से भगवान का नाम जपें, मन सदैव परमात्मा में लगा रहे, हाथों से दान पुण्य सेवा आदि करें तभी मानव चोला सार्थक होगा, अन्यथा मनुष्य जीवन का कुछ भी लाभ नहीं। इसके पश्चात् पाठों के भोग डाले गये और संत श्री रमेशलाल जी द्वारा सत्यनारायण भगवान की कथा की गई, अन्त में विशाल आम भण्डारा हुआ जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

गुड़िया प्रेम प्रकाशी, जयपुर से

वाराणसी में कार्तिकोत्सव

प्रेम प्रकाश मंदिर वाराणसी मे कार्तिक महीने का रांगारंग धार्मिक आयोजन एकादशी से पूर्णमासी तक हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी धूमधाम से मनाया गया। एकादशी को ग्यारह आरतीयों का आयोजन किया गया था। रोजना सुबह ५–३० से ७–३० तक प्रार्थना,सत्संग, और ध्यान योग,परिक्रमा का आयोजन किया गया। मन्दिर को बड़े आकर्षक ढंग से सजाया गया था पूर्णिमा के दिन सामूहिक आरती का आयोजन किया गया था। पूर्णिमा के दिन सत्गुरू टेऊँराम, सत्गुरू, सर्वानन्द, सत्गुरू शांती प्रकाश सत्गुरू हरिदासराम जी के रूपो में चार बच्चो को सजाया गया था। राधा–कृष्ण और मीराबाई के रूप में भी बच्चो को सजाया गया। माता कृष्णा से सन्तो का भिक्षा माँगना, राधा–कृष्ण का नृत्य और मीरा बाई का नृत्य और भजन से स्वामी जी महाराज के चार रूपो का दर्शन से ऐसा मालूम होता था जैसे अमरापुर धाम सिन्धू नगर में प्रकट हो गया है। सारे प्रेमी माई–भाई, बच्चे–बूढ़े इतने आनंद मग्न थे कि अपनी सुध–बुध भी भूल गये थे। स्वामी जी का लोगो को परिचय देते हुये ये भजन लता प्रेम प्रकाशी के द्वारा गाया गया।

नन्हा-मुन्ना बनके आया (तर्ज ये जिन्दगी)

सत्गुरू टेऊँराम जी सर्वानन्द सुखधाम जी
माते माते कृष्णा माते, सत्गुरू टेऊँराम राम मिलादे
माते माते ईश्वरी माते, सत्गुरू सर्वानन्द मिलादे
माते माते जुगल माते, सत्गुरू शांती प्रकाश मिलादे
माते माते मोतिल माते, सत्गुरू हरिदास राम मिलादे

भजन

तर्ज–अम्बे मैया की जो मेहरबानी रहे,
फिर तो दुख की ना नामों निशानी रहे..........
सद्‌गुरु टेऊँराम जी की जो मेहरबानी रहे,
फिर तो दुख की ना नामों निशानी रहे,
निशानी रहे।
सद्‌गुरुओ मेरे सद्‌गरु....................२
सद्‌गुरु टेऊँराम २
करते कण-कण में सद्‌गुरु वास, तेरा पंथ है सबसे निराला-२
सुनले दासी की पुकार, आई मैं तेरे द्वार २
जग में नाम मंत्र तेरा सत्‌नाम साक्षी रहे,
सत्‌नाम साक्षी रहे।
सद्‌गुरुओ मेरे सद्‌गुरु.....................२
सद्‌गुरु टेऊँराम............................२
तेरे नैनों में तेज निराला, दुनिया कहती है बाबा खण्डूवाला-२
तेरी शक्ति अपार, कोई पाय न पाए..................२
नूर सदा तेरा नूरानी रहे, नूरानी रहे।
सद्‌गुरु ओ मेरे सद्‌गुरु...................२
सद्‌गुरु टेऊँराम............................२
तेरे दर्शन को अखियाँ है तरसी–२
जगमग तेरा अमरापुर दरबार, तेरा पाने को प्यार.....२
अखियाँ तेरे दरस की दीवानी रहे, दीवानी रहे।
सद्‌गुरुओ मेरे सद्‌गुरु...................२
सद्‌गुरु टेऊँराम............................२

पद्‌मा शिवनानी, अजमेर

सत्संग ज्ञान चर्चा

यात्रा दर्शन

सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में पूना में कार्तिक महोत्सव मनाया गया

दिनांक ६–११–०२ जयपुर में दीपावली महोत्सव मनाकर सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली समेत (बम्बई सुपर फास्ट ट्रेन) के द्वारा प्रातः ८ बजे मुम्बई सेन्ट्रल स्टेशन पर पहुँचे। जहाँ पर स्वामी जी का स्वागत किया गया, उसके बाद प्रेम प्रकाश आश्रम, खार पहुँच कर वहाँ से प्रेमियों सहित नासिक की ओर प्रस्थान किया जहाँ पूज्य स्वामी जी के आगमन पर भव्य सत्संग समागम रखा गया था, स्वामी जी व सन्तों के प्रवचनों का प्रेमियों ने भरपूर आनन्द लिया।

नासिक में प्रवचन कर प्रेमियों को आशीर्वाद देकर पूज्य स्वामी जी ने सड़क मार्ग द्वारा नासिक से पूना की ओर प्रस्थान किया। सायं ५ बजे पूना पहुँचे। जहाँ पर सन्त अनन्त प्रकाश जी ने स्वामी जी का स्वागत किया। दिनांक ६–११–०२ को सायंकालीन सत्संग का आयोजन रखा गया। ६ से ८ बजे तक पहले सब सन्तों ने भजन व प्रवचन सुनाये, तत्पश्चात् सत्गुरु महाराज जी ने प्रवचन के शुरुआत में राम नाम की धुनि लगाई और बताया कि हमारे हृदय में तो अन्धकार भरा हुआ है, परन्तु बाहर बहुत रोशनी है, रोशनी का अर्थ है कि परिवार का सुख विषय वासनारुपी रोशनी ये सब पदार्थ प्राप्त हैं, परन्तु अन्दर अभी तक हमारा कोयले की खान की तरह काला पड़ा हुआ है। इन संसार के पदार्थों से हमें शक्ति प्राप्त होने वाली नहीं भले ही हम कितना प्रयास करें जन्म से लेकर मृत्यु तक दुख ही दुख है। क्योंकि इस संसार का नाम ही दुखालय है तो फिर सुख कहाँ मिलने वाला है। श्री कृष्ण चन्द्र भगवान भी अर्जुन को कहते हैं। **''दुखालयम् अशाश्वतं,** पल्लव (प्रार्थना करके) पाकर सत्संग का समापन किया।

दिनांक १०–११–०२ को प्रेमियों के घर प्रातःकालीन सत्संग के पश्चात् पूज्य स्वामी जी ने पूज्य दादा जश्न वासवानी जी से भेंट की कुछ समय ज्ञान वार्तालाप कर स्वामी जी पुनः आश्रम पधारे। सायंकालीन सत्संग में सन्तों के प्रवचनों के पश्चात् पूज्य सत्गुरु महाराज जी ने अपनी अमृतमय वाणी में समझाया।

दोहा– गुरु बिन रंग न लागही, गुरु बिन ज्ञान न होई।
कहे टेऊँ सत्गुरु बिना मुक्ति न पावे कोई।

भजन– स्वामी टेऊँराम वञां तोतां सदा बलिहारी।
छो त तुहिंजी आ मिठा सूरत प्यारी–प्यारी।

१. तूं निमाणनि जो धणी को न ड॒िठो ब॒ियो रखवालो
सारी दुनिया थी जपे नाथ सदा तुहिंजो नालो
तुहिंजी वाणी थी दिये दिल खे सदा दिलदारी

२. तुहिंजे दर्शन सां मिठा, ज्ञान मिले मुक्ति मिले
शील संतोष मिले ध्यान मिले शक्ति मिले
तुहिंजी दरबार दिठमि देह सजे खां न्यारी

३. तुहिंजो उपदेश बुधी दिल में हीअ तार लगी
''परमानन्द'' नाम संदी जीअ में झंकार वगी
भुलियनि खे तो मिठा राह सची देखारी

मनुष्य के मन के ऊपर संसार रूपी रंग अति शीघ्रता से चढ़ते हैं, परन्तु परमात्मा के नाम का रंग हृदय पर नहीं चढ़ता। पर जिसे एक बार परमात्मा के नाम के नशे का आनन्द आ गया फिर उसके लिए संसार के पदार्थ और नशे सब फीके लगने लगते हैं।

दोहाः– **भांग तम्बाकू सुरा पान-उतर जात प्रभात।**
नाम खुमारी नानका-चढ़ी रहे दिन रात।।

इसलिए सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने संसार की अन्य बातों की तरफ ध्यान न देकर परमात्मा के नाम में इस तरह अपने मन को लगाया कि वह स्वयं परमात्मा के रूप बन गये। हम भी अपने मन को संसार की वस्तुओं से हटाकर परमात्मा

के नाम से जोड़ें तो मनुष्य जन्म जिस महत्वपूर्ण कार्य को करने के लिये मिला है। समझें कि हमें अपने लक्ष्य का ज्ञान हुआ और जब हमें सही लक्ष्य का ज्ञान होगा तभी हम उस मार्ग पर चल सकते हैं। इतना बताकर स्वामी जी ने सत्संग का समापन किया।

पिम्परी में सद्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव

दिनांक ११ नवम्बर को पूना प्रेमियों को आर्शीवाद देकर पूज्य सत्गुरु महाराज जी ने मध्यान्ह १ बजे पिम्परी के लिए प्रस्थान किया। यहाँ के प्रेमियों ने स्वामीजी का आतिशबाजी जलाकर भव्य स्वागत किया।

दिनांक ११–११–०२ को सांयकालीन सत्संग का कार्यक्रम ६ से ८ बजे तक रखा गया पहले अमरापुर के विद्यार्थियों ने भजन गाये, भक्त श्री मुक्त तथा वीरभानदास जी ने नये–नये भजन सुनाकर प्रेमियों को आनन्दित किया उनके पश्चात् सन्त जयदेव महाराज जी ने अपने प्रवचनों में प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ये जो मनुष्य चोला मिला है ये फखत खाने पीने और सोने के लिये नहीं मिला। ये सारे कर्म तो पशु पक्षी भी करते हैं।

दोहाः– **चार गँवाऐ हंड के चार गँवाऐ सुम।**
लेखा रब मंगेसिया तू आये कहते कम।।

तदोपरान्त गुरु महाराज जी ने अपने प्रवचनों में बताया कि :–

दोहाः– **कहे टेऊँ मन चेतले अब कुछ बिगड़ी नाहिं।**
दया धर्म शुभ कर्म कर हरि सुमरो मन माहिं।।

सन्त महात्मा हमें इतना समझाते आ रहे हैं परन्तु हम अभी तक उनकी बातों की तरफ ध्यान न देकर संसार के पदार्थों में अटके हुये हैं और हमें इतना भी पता है कि जन्म से लकर हमारे ऊपर काल रूपी चक्र फिर रहा है इन श्वासों का कोई भरोसा नहीं न जाने कब हमारी मृत्यु आ जाये। स्वामी जी ने समझाते हुए कहा कि हम बाजार से कोई वस्तु खरीदते है तो उसके ऊपर तो लिखा हुआ होता है कि यह कब Expire हो जायेगी, परन्तु इस शरीर का कोई भी दिनांक या दिन निश्चत नहीं। इसलिए अभी भी हम जाग जायें नहीं तो पशु पक्षी की जूनी में नहीं जाना पड़ जाये। पल्लव पाकर सत्संग समाप्त हुआ।

दिनांक **१२ नवम्बर** प्रातः कालीन पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली ने मिलकर पिंपरी शहर के गौशाला में **गोप अष्टमी** मनाई, जहाँ पर पूज्य सत्गुरु महाराज जी ने गऊँ माता की पूजा की एवं सभी ने मिलकर भगवान श्री कृष्ण की स्तुति की।

सांयकालीन सत्संग ६ से ८ बजे तक हुआ, जिसमें सभी सन्तों और पूज्य सद्गुरु महाराज जी ने अमृत रूपी वचनों की वर्खा की।

दिनांक **१३-११-०२** को प्रातःकालीन **लुनावाला** के प्रेमियों के निवेदन करने पर पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली समेत लुनावाला गये। जहाँ पर प्रेमियों को सत्संग वर्खा का पान कराके पुनः स्वामी जी प्रेम प्रकाश आश्रम **पिम्परी** पधारे।

सायंकालीन की मधुरवेला में **सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का १०६ वाँ जन्मोत्सव** प्रेम प्रकाश आश्रम **पिंपरी** में बड़े हर्षोल्लासके साथ पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। जिसमें १०६ दीप प्रज्वलित किये गये और केक भी काटा गया। तत्पश्चात् पूज्य स्वामी जी ने सत्संग वर्खा कर पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया। रात्रि ११ बजे पूना स्टेशन से मुम्बई की ओर प्रस्थान किया

दिनांक १४–११–०२ प्रातः ४:३० बजे पूज्य स्वामी जी खार आश्रम पर पहुँचे, जहाँ से फिर माहिम आश्रम पर सत्संग करके पुनः प्रेम प्रकाश आश्रम मुम्बई (खार) पहुँचे। सायंकालीन सत्संग करके पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली के साथ मुम्बई के अन्तर्राष्ट्रीय विमानतल से जकार्ता के लिये रवाना हुये।

नरेश प्रेम प्रकाशी, जयपुर (यात्रा) से

ज्ञान-सत्संग-चर्चा

विदेश यात्रा-दर्शन

पूज्यपाद सद्‌गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज

का जाकरता, बैकांक-मनीला में भव्य स्वागत - विशाल सत्संग सभाऐं

सद्‌गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज के प्रेमप्रकाश सम्प्रदाय के पंचम पीठाधीश्वर पूज्यपाद गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व संत मण्डली द्वारा १६ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक जाकरता, बैकांक-मनीला के प्रेमियों को भगवन्नाम का रसास्वादन कराया गया। प्रस्तुत है संक्षिप्त विवरण

आचार्य श्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आशीर्वाद से पूज्य गुरुवर स्वामी श्री भगतप्रकाश जी महाराज दिनांक १४.११.०२ मुम्बई से चलकर वायुयान द्वारा इन्डोनेशिया के जाकरता नगर पहुँचे, जहाँ सद्‌गुरु महाराज जी के प्रेमी सैकड़ों की संख्या में स्वागत हेतु एयरपोर्ट के अन्दर ही आ पहुँचे। जिसमें श्री शंकरलाल गोप सामताणी, श्री अर्जुनदास, श्री दलपति, बहिन चन्द्रा, कृपा, दीपक करनाणी, दयाल, कमलू किशू खेमलानी, दिलीप आदि प्रेमियों द्वारा जयघोष के साथ फूल—मालाओं से स्वागत किया गया। तत्पश्चात् श्री गोप सामताणी के घर पर प्रवास किया। सांयकाल एकादशी कार्तिक मास के पावन दिवस पर सत्‌नाम साक्षी मन्दिर पर सत्संग भजन किया गया, जहाँ पर कई प्रेमी दर्शक सत्संग अमृत पान हेतु पधारे, इसी पावन दिवस पर सन्त लालूराम ने भजन गाया। तत्पश्चात् सन्त हरीओमलाल जी ने नाम का महत्व बताते हुए कहा कि कार्तिक मास में नाम, दान व प्रातः स्नान का बड़ा महत्व है व इसी दिवस में रात्रि जागरण व दीप दान का बड़ा ही फल होता है। कार्तिक मास में भगवान का ध्यान स्मरण शुभ कर्मों को करने का सीजन माने अच्छा अवसर है। इसी प्रकार पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज जी ने मानुष जनम सन्त संग व गुरु महिमा का गुण गान गाते हुए बतलाया कि प्रभु की कृपा से उपरोक्त सभी प्राप्त होते हैं परन्तु एक कृपा अपने आप पर करनी है वह यह कि अपने आप को जगाना है।

सोये अविद्या नींद में कहे टेऊँ बहु काल।
अब तो गफिलत छोड़के सुमरो दीन दयाल।।

इसी प्रकार दिनांक १६.११.०२ पावन शनिवार के दिवस पर अनन्य प्रेमी गोप व शंकर सामतानी के यहाँ पर सत्संग भजन कीर्तन का कार्यक्रम रहा। जहाँ पर सन्त परसराम जी ने आचार्य जी की महिमा का भजन गाया। तत्पश्चात् सन्त श्री हरीओमलाल व सन्त श्री नामदेव तत्पश्चात् गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश महाराज जी ने अमृत वर्खा करते हुए बताया कि एक पिता ने पुत्र के लिये आज्ञा अपनी बही में लिखी कि **बेटा छाया में जाना व आना, जो उधार दो वो मत लेना व सदैव मीठा खाना** उसने उल्टा अर्थ निकाला घर से दुकान तक छपर लगवाया, खूब उधार बाँटा व खूब मीठा खाया, इस प्रकार सारे धन का व्यय कर डाला व अपना स्वास्थय भी खराब कर डाला। अतः बड़ों के शिक्षा उपदेश को समझना वीचारना, फिर करना चाहिये। **छाया में जाना आना माने जल्दी उठना दुकान को देखना व सांय काल होते घर आना, उधार देना तो विचार से क्योंकि वह वापस आवे या ना आवे, भूखे समय भोजन करना क्योंकि वह वस्तु, खाई मीठी लगती है। अमां रहिजी कीअ ईंदो ही सांगु फकीरीअ जो चओ सुरहो कीअ थीदों।** यह भजन गाकर गुरु महाराज जी ने आचार्य जी के उपदेश बताते हुए सत्संग समाप्त किया। दिनांक १७.११.०२ को सिन्धु हॉल पर व १८.११.०२ सोमवार दिवस पर श्री शंकर मन्दिर पर सत्संग अमृत वर्खा की गयी, जहाँ पर सैकड़ों भक्तों प्रेमियों ने भाग लिया दिनांक १८.११.०२ को भक्त अजर्नदास के घर पर सत्संग व श्री प्रेमप्रकाश ग्रंथ का पाठ आयोजन रखा गया, सांयकाल सत्‌नाम साक्षी मन्दिर पर सत्संग का आयोजन किया गया।

इन्डोनेशिया के प्रमुख नगर जाकरता में स्थापित सत्‌नाम साक्षी मन्दिर में पूज्य आचार्य श्री सत्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के साथ सत्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज व गुरुवर सत्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के साथ—साथ सत्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज व स्वामी माधवदास जी के स्वरूप का दर्शन सदैव मन को मोहित करने के साथ एक अपना अनुपम स्थान रखता है। जहाँ प्रति माह निश्चित दिवसों पर सत्संग का अद्‌भुत नजारा जाकरता वासी प्रेमियों को मिलता है। हमारे आचार्य जी के प्रेमी जहाँ तहाँ रहते हुए प्रेम के सूत्र में बाँधते हुए गुरुदेव के वचनों अमृत का ज्ञान प्रकाश से स्वयं रोशन होकर दूसरों को रोशनी प्रदान करते हैं। धन्य हैं ऐसे भक्त सन्त सेवी जिज्ञासु, को जो कि सूर्य स्वरूप गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के दर्शनों से आनन्द की नदी में मानो स्नान कर शीतलता का अनुभव करते हैं। प्रथम हमारे अमरापुर दरबार के विद्यार्थी सन्त श्री परसराम ने भजन गाया **सतगुरु टेऊँराम मिठा सन्त सच्चा हा संतनि में**

तत्पश्चात् सन्त जीतू ने 'हे' प्यारा बोलि मुख सां रामु 'तू' राम स्मरण जो सदा करि कामु 'तू'

इसके बाद सन्त श्री नामदेव हांगकांग निवासी ने भी आचार्य महिमा का भजन गाकर सारी संगति को आनन्दित किया। **सत्‌गुरु मुझको दान दे प्रेम भक्ति विश्वास, कहे टेऊँ नित सुमति दे संतनि मांहि निवास** जिन्दगी में अहिड़ा क्षण भाग्य सां प्राप्त थीन्दा आहिनि जो संतनि जे वेझो वेहण जो बुधण समझण जो अवसर प्राप्त थीन्दो आहे **दुख दूर कजांइ गम चूर कजांइ मुंखे कहिंजी दिजांइ न मोहथाजी स्वामी टेऊँराम,** तत्पश्चात् पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज जी ने गुरु वन्दना मंगलाचरण करते हुए राम नाम कीर्तन से सत्संग आरम्भ किया।

अभय दान मुझ दीजिए गुर देवनि के देव।
पांव पलक बिछड़ू नहीं मांगू चरननि शेव।।

भजनः **मिठो नालो स्वामी टेऊँराम जो**
जहिं जापु जपायो सत्‌नाम जो

गुरुदेव के चरणों में बैठकर उनके नाम का स्मरण करें अपने ही मन को समझावें। सबसे कठिन काम यही है। उन महान पुरुषों ने जिनका हमें संग मिला है उनकी दी हुई शिक्षाओं से मन को समझाते रहें।

मुहिजो मन विषयुनि खे छन्दे तुहिंजे ध्यान में मग्न रहे
तुहिंजे स्मरण ऐं चिन्तन जी मन में लग्न रहे
भुली सुधि तन मन जी वञे अहिड़ो प्रेम जो प्यारियो जामु
गुरुदेव मिठा मनठार मुंहिजा सत्‌गुरु टेऊँराम
इहा दया क्यों मुंते नित जपिया तव्हांजो नामु

भजन गाकर गुरुदेव जी आचार्य जी के शिक्षाओं का सार बताते हुए सत्संग समाप्त किया। दिनांक २०.११.०२ को भक्त अजर्नदास के निवास पर रखे पाठों का भोग पारायण व सत्संग भण्डारे का कार्यक्रम रहा। दिनांक २३. ११.०२ शनिवार को सत्‌गुरु महाराज के पुराने प्रेमी गोप व शंकरलाल सामताणी के निवास स्थान पर प्रातःकाल ८:३० से १० बजे तक सत्संग कीर्तन करने उपरान्त दोपहर को बैंकांक के लिये प्रस्थान किया।

बैकांक (२३ से २६ नवम्बर तक)

आचार्य सत्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम बैंकांक के प्रेमियों को उपदेश देते हुए सन्त श्री नामदेव जी महाराज ने सन्त कबीर के जीवन से सम्बन्धित बताया कि भगवान गुरु से क्या मांगे।

रिद्धि न मांगूँ सिद्धि न मांगूँ, मांगूँ निशदिन एह
निशदिन दर्शन सन्त का कह कबीर मोह देहि।

दुनिया में संग अच्छा करना चाहिये अपने मन को सन्तों के वचन याद करके समझाना चाहिए। जिससे मन पर भक्ति का रंग चढ़े व्यवहार व परमार्थ दोनों को बनाए रखें, परमात्मा से अधिक नहीं परन्तु इतना मांगे।

सांईं इतना दीजिए, यामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, सन्त न भूखा जाय।।

अपनी इच्छा व जरुरतों को कम रखें या तो शान मिलेगा या शान्ती।

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपने अमृतमयी वचनों में प्रेमियों को बताया कि मनुष्य जन्म दुलर्भ, फिर उसमें मनुष्यता के गुण लक्षण हो तीसरा मोक्ष की इच्छा, मन को बन्धनों से परे रखना अवगुणों का त्याग करते अपने आप पर नजर रखना।

मन पर साक्षी होय तुम धर विवेक वैराग।
कहे टेऊँ जे दोष है ताकां करो त्याग।।

वैराग्य धारण कर विचार द्वारा अपनी शक्ति को जगाओ, अपार शक्ति ईश्वर से प्राप्त है। बाहर की सफाई भी आवश्यक है परन्तु ज्यादा है मन की निर्मलता। तन से संसार का कार्य कर्तव्य करते हुए मन को गुरु के वचनों नाम में जोड़के रखना है।

गीता के श्लोकों आचार्य जी की वाणी के साथ वेदों उपनिषदो का सार बतलाते हुए वाणी का समापन किया।

२८ नवम्बर को विशाल सत्संग ज्ञान सभा में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए बता रहे हैं किः–

जीवन तो अमोलक है, इसे व्यर्थ ना गंवाना तुम।
स्वासों की मिली पूंजी, इसे ना मुफ्त लुटाना तुम।।
जादूहणी वया जीअ में जोगी लूंअ-लूंअ तनिखे सारे अमां
बाझ करे बानीअ ते ज्यड़ा मुअलं दिलि त जीआरे अमां
पलि-पलि पंध पुछां मा तनि जा
दे दस वञा कहि पाड़े अमां

शरीर की कीमत के साथ नाम की कीमत उन्ही महान पुरुषों ने जानी

सारी राति सुबां जागी जनि यादि क्यो
तनि जी अब्दु लतीफ चए मिट्टीअ लधो माण
किरोड़ें कनि सलाम अची आसण उन्हनि जे

एक बीज जो देखने में छोटा है उसके अन्दर डालियां, फूल, फल, पत्ते, तना सब छिपे है तब धीरे–धीरे प्रकट होते हैं जब वह अपने को मिटा देता है। जीव भी परमात्मा तक तभी पहुँच पाता है जब मैं मेरे पन को त्याग देता है। भगवान ने गीता में अजुर्न को यही उपदेश दिया है मनो बुद्धि मुझमें अपर्ण कर दे, अपना विचार निश्चय रख मुझमें, इस प्रकार आचार्य श्री के जीवन गुणों का विवेचन कर सत्संग समापन किया।

२६ नवम्बर तक बैकांक में प्रेमियों को अमृत पान कराकर बैंकांक देश को पावन करते हुए पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली के साथ **मनीला** के लिए रवाना हुए। बैंकांक अन्तर्राष्ट्रीय विमानतल पर रेनू लालचंद, ईश्वरी– दयाराम गागलानी, ज्योति प्रहलाद दादलानी, झामनदास–इन्द्रा गागलानी, मीरपुरी परिवार, जया, खुशी गान्धलानीपी, हरीश–माया मोहनानी, नीलम–मोती माखीजानी, जयवन्ती–मूलचन्द दरियानानी, दिलीप–विनीका असनानी व अनेक प्रेमियों के परिवार सहित पहुंचकर सन्त मण्डली को अश्रुपूरित विदाई दी।

मनीला (३० नवम्बर से ४ दिसम्बर २००२ तक)

पूज्य गुरुवार स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली के साथ बैंकांक यात्रा पूर्ण कर मनीला पहुंचे जहाँ हवाई अड्डे पर स्वागत हेतु कई प्रेमी पधारे जो कि काफी लम्बी अवधि के बाद दर्शन कर आनन्दित हुए, इस जगह पर जयपुर नगर के कई प्रेमी रहते व्यवसाय करते हैं। सत्गुरु महाराज के प्रेमी देव व गोपी के घर पर निवास किया, सांयकाल सत्संग कीर्तन का कार्यक्रम गीता मन्दिर पर किया गया, जहाँ पर कई पुराने प्रेमी गुरु महाराज के शिष्य दर्शन सत्संग सुनकर ऐसे प्रसन्न हुए जैसे भंवरा गुलस्तान पर पहुंचकर सुगन्धि को पाता है, जहाँ पर सन्त श्री लालूराम, परसराम व सन्त जीतू ने सारी संगति को गुरु महाराज के मधुर गीतों से आनन्दित किया। सन्त श्री हरीओमलाल व सन्त श्री नामदेव जी महाराज ने भी सत्संग अमृत का पान कराया। अन्त में पूज्यपाद सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों में बताया।

सत्गुरु जो उपकार कहिड़ो गणियां मुख सां
जहि लखायो घर में साक्षी सृजनहार
वसियो मेघु महिर जो लूट थी गुलजार
सामी सभु संसार सा्गणो स्वरूप में
जहिड़ो तहिड़ो अहियां तुहिजों तो बिन सतगुर ना को मुंहिजो
बाझ करे बाझारा पंहिजी साधु कजाइ तूं सहि जो
नाथ नजर सां निहारिजांइ
सत्गुरु मुंखे मन मां कीन विसारिजांइ
दर्शन देई दिलि ठारिजांइ
पशु ने मानुष किया मानुष से किया देव।
कहे टेऊँ गुरुदेव से कीना अलख अभेव।।

इन्सान के अन्दर इन्सानियत के लक्षण होवे यदि नहीं तो पशु व इन्सान में कोई अन्तर नहीं, निद्रा भोजन भोग भय पशु व इन्सान में समान होते है। ज्ञान होने से इन्सान कहा जायेगा। सन्तों के संग से यदि यह ज्ञान जाग्रत हो जावे अर्थात मौत को जान लेवे तो अन्ततः जीवन का कल्याण हो जावे।

तुलसी गुरु प्रसाद से ऐसी सूझ पड़ी।
नहीं भरोसा काल का आगे मौत खड़ी।।

गुरुदेव जी की कृपा यह नहीं कि तंदुरुस्ती धन वैभव पदार्थ संसार के सुख, अपितु मृत्यु को जान लें अर्थात् मृत्यु का दर्शन हो जावे। राजा परीक्षित को मृत्यु की जानकारी हो गई कि सात दिवस में मेरी मृत्यु होगी। कल्याण हेतु निकले शुकदेव मुनि मिले, हृदय का हाल सुनाया कल्याण हेतु मृत्यु भय मिटाने जीवन द्वारा आत्म अनुभव हेतु भागवत कथा का कथन करते हुए मृत्यु का भय छूटा कि मैं शरीर नहीं मेरा मृत्यु नहीं मैं आत्मा जन्म मृत्यु से परे हूँ। पांडवों ने भी अनन्त दुख देखे युधिष्टिर यक्ष संवाद में भी जब चारों भाई मूर्छित पड़े थे। राजा युधिष्टिर ने भी जल पीना चाहा यक्ष ने कहा पहिले मेरे सवालों का उतर दें अन्यथा आपकी दशा भी वैसी होगी व १३३ प्रश्न किये जिनसे एक यह था कि आश्चर्य है कि इन्सान मृत्यु को देखते होते भी निश्चय नहीं करता कि मेरा भी एक दिन यह समय आयेगा। सवालों का जवाब सुनकर यक्ष प्रसन्न हुआ और कहा ? एक भाई जो कहो उसको जिन्दा कर दें तब विचार कर कहा सहदेव को जिन्दा कर दे क्यों कि वह माधुरी का अंशज है ताकि दोनों मां के दोनों वंश रहें। इतना सुन धर्म मर्यादा को देखकर यक्ष ने सब को जिन्दा कर दिया। शरीर की क्षण भंगुरता को बताते हुए कहा कि–

जदहिं पिञरे मां थो पखी वञे
तदहि पिञिंरे खें कोई न मञे
हर कोई तहिखां करण लगे त किनारो
जदहिं पखी वञे परदेश छदे ही देश प्रीतम प्यारो
तदहिं पिञरो थे बेकारो
मृत्यु शरीरं उत्सृजम, नरु मरे नरकाम
न आवे पशु मरे दस काज संवारे

जब तक शरीर का प्रारब्ध है तब तक समय में अपनी मुक्ति का साधन कर लें।

साधो जीवन ही कर आशा मुए मुक्ति
गुरु कहे स्वार्थी जुठा दे विश्वासा

शुभ कर्मों के अर्न्तगत मन लगाये आचरण विचारों को निर्मल रखने से गुरु सन्तों की कृपा होनी है।

आकाश से पानी तो भरपूर बरसता है
बर्तन उलटा जिनका पानी को तरसता है।,
मन मोड़के माया से सत्गुरु से करले प्यार
धन यौवन यो जाइगो जैसे उड़त कपूर
नारायण गोविन्द भजु क्यों चाटे जग धूर

शरीर अनमोल स्वांसों का धन जो ईश्वर की ओर

से मिला। उसका कदर करना वृथा न खोना ही मानव की बुद्धिमता है कुड़मी ने लालों की मटकी से सब लाल उड़ाने में खत्म कर दिए फिर पछताने लगा।

जीवन खत्म हुआ तो जीने का ढंग आया

इतना कहकर जै–जै टैऊँराम स्वामी कीर्तन करके सत्संग समापन हुआ।

मनीला के हरी मन्दिर में अपार जनसमूह उपस्थित था सन्त मण्डली व गुरुवर आगमन से सारा सत्संग भवन प्रफुलित हो उठा वह प्यास व उमंग लग्न से सभी प्रेमी ध्यान पूर्वक सत्संग के आनन्द लेने में मग्न थे। जहाँ प्रथम सन्त जीतू ने **सन्त से सन्त से सन्त से** भजन हृदय की मधुर वाणी साज की आवाज को समाहित करके गाया। तत्पश्चात् सन्त श्री लालू (दिल्ली निवासी) ने भी **सत्गुरु दाता दीन दयाला। अभय दान मुझ दीजे जी** संत श्री हरीओमलाल ने भी अपनी मधुर वाणी से अमरापुर वाणी का भजन **हरी मैं तेरा हूँ तेरा** गाया व बताया कि सन्त महापुरुष मानव जीवन में उस अविनाशी तत्व को जानकर मैं मेरा को त्याग कर सब ईश्वर का पाया हुआ व ईश्वर का ही मानते हैं। वह ईश्वर सब में सब जगह सब प्राणी में हैं। जिसको अन्दर की आंखों से देखा व अनुभव किया जाता है।

सन्त श्री नामदेव जी महाराज ने कहा कि–

कहे टेऊँ संसार में बात यही है सार
भजन करो भगवान का छोड़ो विषय विकार

सभी सन्त महापुरुष यही बतलाते हैं कि संसार में कैसा जीवन जीना चाहिए। सत्गुरु महाराज ने भी बतलाया थोड़े में विषय को छोड़ना भगवान का भजन करना है सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज ने भी अपने जीवन के अन्तर स्वयं ऐसा करके अनुभव किया।

हून्दे यादि स्वामी सर्वानन्द प्यारा
तोखे की अं विसारियूं सांईं सूहारा
अमरापुर तुहिंजी अमर निशानी
वहे ज्ञान गंगा दियनि ज्ञानु ज्ञानी
जयपुर जा जोगी जीअं जा प्यारा

यह महिमा का भजन गा कर सत्संग समापन किया।

सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज द्वारा सर्व देव व गुरु महाराज की जय घोंष व मंगलाचरण करके राम नाम कीर्तन से सत्संग आरम्भ किया।

शरणि पड़ियो छाडियो नहीं बड़ी बड़न की ओट,
ज्यों प्रहलाद गिर ते गिरियो गिरत न लागी चोट,
भक सां शरणि पया जे तुहिंजी तिनिजा दर्द मिटाईं
जई जिनिजे पांद मे आहिनि रग-रग तिनिजी रचाईं
आहिनि तुहिंजे आसिरे, मोती तिनिखे मिलाईं

मुहिंजा सच्चा सांईं राम

प्रहलाद भक्त को कितने कष्ट पिता हिरण्यकश्यप ने दिये, परन्तु राम को प्रहलाद ने नहीं छोड़ा। गुरुदेव परमात्मा की शरण से दुख सुखों में परिवर्तित हो जाते हैं।

तुलसी लोहा काठ संग चलत फिरत जल मांहि
बड़े न डूबन देत है जाकी पकड़ी बाहिं

कील छोटी सी पानी में छोड़ो डूब जायेगी लेकिन मनो भर लोहा नाव में लगा रहता तैरता है।

जब तक गज अपनो बल वरतियो नेक सरियो ना काम
निर्बल के बल राम पुकारियों आये आधे नाम

चारो तरफ से निराश होकर चरन आपके आन गहे (छंद)

विषयो से विरक्त होकर मोती हीरालाल उन्होंने पाये सन्तों के संग रूपी समुद्र अर्थात प्रेम भक्ति विश्वास

दिसी दुनिया जा रंग तमाशा लोभ लहरि में मतां लुदी
दुनिया में सुख मिलिणो नाहे छोन दुनिया खां धार रही
स्मरण करि गुर मंत्र जो स्मरण कष्ट मिटाईयो
धीरज धरि मन मुंहिंजा
सत्गुरु कष्ट मिटाईदों, बेड़ा पारि लगाइंदो
दुनिया चारि दिहाड़ा चुटिको आहे ख्याल
जो खाली खुटिको, तूं तंहिते मस्तु न थीउ
पीउ तू प्यारा पीउ श्री राम नाम रसु पीउ
सुना समझा कुछ नहीं मिटिया न मन का मोह
पारस लग पहुंचा नहीं रहियो लोह का लोह
रहत सदा सत्संग में करत सदा सत्संग
तुलसी यह अचरण बड़ा मन नहीं लागो रंग
अमां रहिजी कीअ ईन्दो हीउ सांगु फकीरीअ जो
दसि कीअं सुरहो कीअ थींदों

सतुगुर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज बतलाते थे कि सत्संग में सन्तों के साथ १ बार नाम जपें और घर में १०० बार जपें। ऐसा है सत्संग में नाम जप का महत्व।

भजन का सार आचार्य जी की महिमा को कथन करते हुए सत्संग समापन किया।

मनीला यात्रा पूर्ण कर पूज्य स्वामी जी ५ दिसम्बर को दोपहर मनीला विमानतल से मुम्बई के लिए सन्त मण्डली के साथ रवाना हुए। विमानतल पर देवप्रकाश–गोपी सेजवानी, प्रकाश–ज्योति, साज्जन–लवीना थदानी, रानी–सज्जू वासवानी, पिशू–आशू मीरपुरी, लक्की–शान्ती छुगानी, मोहन–रोशन दादलानी, प्रेम–ज्योति, चन्द्रू–मनीषा, मोहन–मीना के अतिरिक्त अनेक प्रेमी स्वामी जी को विदाई देने के लिए उपस्थित थे।

(यात्रा से)

पूज्य स्वामी धर्म प्रकाश जी महाराज का ६५ वाँ जन्मोत्सव बड़ौदा एवं गोधरा में धूम-धाम से सम्पन्न

बडौदा :– प्रेम प्रकाश मण्डल के संत शिरोमणि पूज्य स्वामी धर्म प्रकाश जी महाराज का ६५ वाँ जन्मोत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा में पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

दिनांक १५.११.०२ से १६.११.०२ तक आयोजित इस महोत्सव में, अनेक सन्तों, कवियों व गुणीजनों द्वारा पूज्य स्वामी जी के पावन जीवन पर प्रकाश डाला गया। प्रातः व सांयकाल सत्संग, भजन व कीर्तन की मौज रही।

१५.११.०२ को प्रातः प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के व गीता का पाठ आरम्भ हुआ तत्पश्चात् हवन हुआ। हवन के तत्काल बाद आश्रम के भव्य प्रांगण में ध्वजा वंदन सम्पन्न हुआ। ध्वज वंदन के बाद आम भण्डारे का भी आयोजन किया गया। जिसमें हजारों की संख्या में प्रेमियों ने प्रसाद पाया, १६.११.०२ को एक विशेष कार्यक्रम में सायंकाल पूज्य स्वामी धर्म प्रकाश जी महाराज की पुष्पों से श्रृंगारित मूर्ति के समक्ष ६५ दीप प्रज्जवलित किये गये। इस अवसर पर पूज्य संत मण्डल द्वारा केक काटकर स्वामी जी के जन्म की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच बधाई दी गई। रात्रि ६ बजे पूज्य स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज द्वारा पलव पाकर उत्सव का समापन किया गया।

प्रेम प्रकाश मण्डली **गोधरा** द्वारा स्वामी शांतिप्रकाश प्लाट के खुले मैदान पर पूज्य स्वामी धर्म प्रकाश जी का ६५वाँ जन्मोत्सव स्वामी अशोक प्रकाश जी के सानिध्य में बड़े धूम-धाम से मनाया गया। दो दिवसीय कार्यक्रम में हजारों लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर ६५ दीप प्रज्जवलित कर एवं केक काटकर स्वामी जी के जन्मोत्सव की बधाई दी गई। इस उत्सव में गोधरा के सांसद व विधायक भी सम्मिलित हुये।

पुस्तक समीक्षा

गुरु पद लागो

सद्गुरु सर्वानन्द सत्संग प्रवचन का द्वितीय पुष्प

सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के ६ सत्संगों का यह अपूर्व संग्रह परमार्थी पथ के साधकों के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है। ज्ञात हो इससे पूर्व महाराज श्री के प्रवचनों की प्रथम पुस्तक-**हे मेरे मन जागो**-प्रकाशित हो चुकी है। अब जागकर करना क्या है ? तो कड़ी में आया कि जागकर गुरु की शरण में जायें। द्वितीय पुस्तक का शीर्षक है-**गुरु पद लागो**।

पुस्तक की संन्दरता देखते ही बनती है। इसका सम्पादन संत राजूराम जी ने किया है और प्रकाशन पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी ने किया है। पुस्तक का मूल्य मात्र दस रुपये रखा गया है। पुस्तक बड़ौदा व जयपुर आश्रम के बुक स्टॉलों पर मौजूद है।

प्रेम प्रकाश आश्रम रायपुर का वार्षिक उत्सव
6 से 10 जनवरी 2003 तक
कार्यक्रम

7 जनवरी 2003 .. सांय 4 बजे हावड़ा एक्सप्रेस में
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का आगमन, स्वागत
6 से 10 जनवरी 2003 तक सत्संग .. प्रतिदिन प्रातः 8 से 10
सायं 5 से 7:30 बजे तक
10 जनवरी 2003 पाठों के भोग ध्वजा वन्दन, आम भण्डारा प्रातः 8.00 बजे से
पल्लव रात्री 7:30 बजे

आयोजन स्थलः

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, पानी की टंकी के सामने, शैलेन्द्र नगर
रायपुर (छत्तीसगढ़) फोनः 0771–2424681

सद्गुरू टेऊँराम महिमा भजन संग्रह पुस्तक का प्रकाशन

श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा ''आचार्य सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज'' के महिमा संबंधी ''भजन संग्रह पुस्तक'' प्रकाशित की जा रही है जिसमें आचार्य श्री की महिमा के भजन संकलित किये जायेंगे। अतः सभी संत प्रवर, कवि, गायक, भजनीक, प्रेमी-भक्तजनों से निवेदन है कि आपके द्वारा अथवा अन्य कवियों द्वारा रचित महिमा संबंधी भजनों का संकलन करके (शुद्धि करवाकर) सुन्दर लिखावट या कम्पयूटर टाईप करवाकर शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें। सभी भजनों का संकलन कर ''सद्गुरू टेऊँराम महिमा भजन संग्रह पुस्तक'' में प्रकाशित किया जावेगा। आशा है इस पुण्य कार्य में आप सभी प्रयासरत रहकर भजन शीघ्र भेजेंगे।

आप सभी सन्तो- भक्तो -प्रेमियों से विनम्र प्रार्थना है आपके पास श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के पुराने सन्तों के चित्र हो तो वह शीघ्र ही भेजकर सहयोग करें।

भजन भेजने का पताः

भजन संग्रह पुस्तक

श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड़ जयपुर -302001
फोनः 0141–2372423, 2372424

13 मार्च से 14 मार्च	2003	तक	अलीगढ़	
15 मार्च से 18 मार्च	2003	तक	हरिद्वार	☎ 0133–2460144, 2460815
19 मार्च	2003		दिल्ली से गांधीधाम के लिये बरेली एक्सप्रेस में यात्रा	
20 मार्च से 22 मार्च	2003	तक	गांधीधाम	
23 मार्च से 24 मार्च	2003	तक	राजकोट	
25 मार्च से 26 मार्च	2003	तक	जामनगर	
27 मार्च	2003		द्वारिका	
28 मार्च	2003		सोमनाथ, जेतपुर	
29 मार्च	2003		भावनगर	
30 मार्च से 1 अप्रेल	2003	तक	अहमदाबाद	
2 अप्रेल से 3 अप्रेल	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
4 अप्रेल से 6 अप्रेल	2003	तक	पाली, जोधपुर	
7 अप्रेल से 22 अप्रेल	2003	तक	जयपुर (चैत्र मेला)	☎ 0141–2372423, 2372424
23 अप्रेल	2003		देवास	
24 अप्रेल से 29 अप्रेल	2003	तक	इन्दौर (स्वामी मुरलीधर वर्सी)	☎ 0731–2468140, 2300140
30 अप्रेल से 1 मई	2003	तक	रतलाम	
2 मई से 8 मई	2003	तक	दिल्ली (स्वामी जयप्रकाश वर्सी)	☎ 011–23969774
9 मई से 10 मई	2003	तक	लखनऊ	
11 मई से 16 मई	2003	तक	कानपुर (सद्गुरु हरिदासराम जयन्ती)	
17 मई से 19 मई	2003	तक	इलाहाबाद	
19 मई से 21 मई	2003	तक	वाराणसी, बनारस	
22 मई से 23 मई	2003	तक	फैजाबाद	

तीज त्यौहार

19	*दिसम्बर*	*2002*	*गुरूवार*	*श्री सत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत*
20	*दिसम्बर*	*2002*	*शुक्रवार*	*स्वामी बसंतराम पुण्यतिथि*
23	*दिसम्बर*	*2002*	*सोमवार*	*श्री गणेश चौथ व्रत*
30	*दिसम्बर*	*2002*	*सोमवार*	*सफला एकादशी व्रत*
1	*जनवरी*	*2003*	*बुधवार*	*नववर्ष 2003 शुरू, मंगलमयी शुभकामनाऐं*
2	*जनवरी*	*2003*	*गुरूवार*	*अमावस्या*
4	*जनवरी*	*2003*	*शनिवार*	*चन्द्रदर्शन*
8	*जनवरी*	*2003*	*बुधवार*	*चौथ, सद्गुरू टेऊंराम जन्म दिवस (मासिक)*
13	*जनवरी*	*2003*	*सोमवार*	*लाल लोई, लोहड़ी उत्सव*
14	*जनवरी*	*2003*	*मंगलवार*	*पुत्रदा एकादशी व्रत, मकर संक्रान्ति*
18	*जनवरी*	*2003*	*शनिवार*	*श्री सत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत*
21	*जनवरी*	*2003*	*मंगलवार*	*श्री गणेश चौथ व्रत*
26	*जनवरी*	*2003*	*रविवार*	*गणतन्त्र दिवस*
28	*जनवरी*	*2003*	*मंगलवार*	*षट्तिला एकादशी व्रत*





श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

18 दिसम्बर से 19 दिसम्बर	2002	तक	बड़ौदा	☎ 0265–2523479, 2565094
20 दिसम्बर से 21 दिसम्बर	2002	तक	इन्दौर, उज्जैन	☎ 0731–2468140, 2300140
22 दिसम्बर से 29 दिसम्बर	2002	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
30 दिसम्बर 02 से 6 जनवरी	2003	तक	मुम्बई	☎ 022–26057711, 26057579
07 जनवरी से 10 जनवरी	2003	तक	रायपुर (प्रेम प्रकाश आश्रम वार्षिकोत्सव)	☎ 0771–2424681
11 जनवरी से 13 जनवरी	2003	तक	भाटापारा (माता समझबाई वर्सी)	☎ 07726–220779
14 जनवरी से 16 जनवरी	2003	तक	कोरबा	☎ 07759–280180
17 जनवरी से 18 जनवरी	2003	तक	रायगढ़	☎ 07762–222353
19 जनवरी से 20 जनवरी	2003	तक	धमतरी	☎ 07722–237007, 235009
21 जनवरी	2003		भानुप्रतापपुर	☎ 07850–252274
22 जनवरी	2003		दल्ली राजहरा	☎ 07748–283076
23 जनवरी	2003		राजनांदगांव	☎ 07744–227716
24 जनवरी	2003		बेमेतरा	☎ 07824–222767, 222375
25 जनवरी से 26 जनवरी	2003	तक	दुर्ग	☎ 0788–2328584
27 जनवरी	2003		यात्रा (दुर्ग से प्रातः गोण्डवाना एक्सप्रेस में, भोपाल, ग्वालियर के रास्ते दिल्ली यात्रा)	
28 जनवरी से 31 जनवरी	2003	तक	हरिद्वार	☎ 0133–2460144, 2460815
1 फरवरी	2003		यात्रा, सड़क मार्ग से जयपुर के लिए	
2 फरवरी से 5 फरवरी	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
5 फरवरी	2003		जयपुर से नागपुर के लिये शाम को चेन्नई एक्सप्रेस में यात्रा	
6 फरवरी से 7 फरवरी	2003	तक	कामठी	
8 फरवरी से 10 फरवरी	2003	तक	सिवनी	
11 फरवरी से 12 फरवरी	2003	तक	बालाघाट	
13 फरवरी से 16 फरवरी	2003	तक	गोंदिया, तिरोड़ा	
17 फरवरी	2003		भण्डारा	☎ 07184–258257
18 से 21 फरवरी	2003	तक	नागपुर, अमरावती	
22 फरवरी	2003		यात्रा जयपुर के लिये नागपुर से चेन्नई एक्सप्रेस में	
23 फरवरी से 25 फरवरी	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
26 फरवरी	2003		जयपुर से सड़क मार्ग द्वारा ग्वालियर के लिये यात्रा	
26 फरवरी से 2 मार्च	2003	तक	ग्वालियर (स्वामी गणेशानन्द जयंती)	☎ 0751–2426111
3 मार्च से 4 मार्च	2003	तक	डबरा	
5 मार्च	2003		दतिया	
6 मार्च से 8 मार्च	2003	तक	मुरैना	
9 मार्च से 12 मार्च	2003	तक	आगरा	

नवयुवकों से अपील

विवाह संस्कार

विवाह में कन्या के पिता से द्रव्य लेकर वर का विवाह करना केवल सामाजिक कुप्रथा ही नहीं है, प्रत्युत धर्म–ध्वंसकारी कार्य है। षोडश संस्कारों में विवाह भी उपनयन के समान एक मुख्य संस्कार है। कन्या के निमित्त विवाह ही उसका उपनयन है, जिसमें पति उसका आचार्य है। विवाह–संस्कार के उत्तम रीति से सम्पादन होने से उत्तम संतति उत्पन्न होती है और इस सस्कार को बिगाड़ने से खराब संतति होती है। मनु का वचन है–

अनिन्दितैः स्त्रीविवाहैरनिन्द्या भवति प्रजा।
निन्दितैर्निन्दिता नृणां तस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत्।।
(मनु. ३/४२)

प्रशस्त विवाह के द्वारा उत्पन्न संतान अच्छी होती है। निन्दित विवाह से निन्दित संतान का जन्म होता है, अतएव निन्द्य विवाह न करे। कुमारी कन्या शास्त्र के अनुसार स्वयं श्रीजगन्माता देवी की प्रतिरूपा है, जिसकी पूजा से श्रीभगवती शीघ्र प्रसन्न होती हैं। स्मृति में कन्या को रत्न कहा गया है। पूर्वकाल में कन्या के पिता के पास जाकर वर के पक्षवाले कन्या के विवाह की याचना करते थे और एक या दो जोड़े गाय–बैल कन्या के पिता को देते थे, जो 'आर्ष–विवाह' समझा जाता था। इस आर्ष–विवाह द्वारा कन्या के पिता को प्रसन्न करके कन्या–ग्रहण करने से जो पुत्र उत्पन्न होता है वह पूर्व के तीन पितृ–पूर्वजों तथा बाद के तीन पुत्र–पौत्रादि कुलों को तार देता है (मनु. ३/३८)। इस कारण विवाह में कन्या के पिता से द्रव्य लेने से वह विवाह–संस्कार न होकर वैसी ही खरीद–बिक्री हो जाती है जैसा कि घोड़े–बैल खरीदे जाते हैं। जिस प्रकार द्रव्य देकर कन्या का विवाह करना 'आसुरी विवाह' है (मनु. ३/३१), उसी प्रकार वर के पक्षवाले यदि कन्या के पक्ष से रुपये लेकर विवाह करते हैं तो वह भी 'आसुर–विवाह' है। मनु का वचन है–

इतरेषु तु शिष्टेषु नृशंसानृतवादिनः।
जायन्ते दुर्विवाहेषु ब्रह्मधर्मद्विषः सुताः।। (मनु. ३/४१)

ब्राह्म आदि चार विवाहों के अतिरिक्त आसुर आदि चार हीन विवाहों से जो पुत्र उत्पन्न होते हैं, वे निर्दय, मिथ्यावादी, वेदनिन्दक और धर्म–द्वेषी होते हैं। शास्त्र के अनुसार कन्या–दान में तो कोई खर्च ही नहीं होना चाहिये। मनु का वचन है–

अद्भिरेव द्विजाग्र्याणां कन्यादानं विशिष्यते।
इतरेषां तु वर्णानामितरेतरकाम्यया।। (मनु. ३/३५)

ब्राह्मणों को जल से कन्या–दान करना प्रशस्त है। क्षत्रियादि तीन वर्णों में जल के बिना भी दाता–ग्रहीताके वचन मात्र से कन्या–दान हो सकता है। कन्या–रत्न के, जो साक्षात् देवी हैं, विवाह के निमित्त रुपया माँगना मानो साक्षात् जगन्माता का अपमान करना है। हिन्दू–जाति के वर्तमान अधःपतन के कारणों में एक मुख्य कारण विवाह संस्कार को रुपयों के लेन–देन द्वारा भ्रष्ट कर देना भी है। इस कारण से उत्तम संतति उत्पन्न नहीं होती और इस शक्ति के अपमान के कारण ही हम लोग यथार्थ में शक्ति–हीन हो गये हैं। अतएव धर्म और संस्कार की रक्षा के निमित्त यह परम आवश्यक है कि हम लोग प्रण करें कि विवाह में रुपये की माँग का, जो पाप है, एकदम त्याग कर देंगे और सब प्रकार के व्यर्थ–व्यय का भी त्याग करेंगे तथा धूम–धाम को भी छोड़ेंगे। हमारे अविवाहित नवयुवकों को दृढ़ शपथ करनी चाहिये कि वे घोड़े–बैल के समान विवाह के निमित्त द्रव्य लेकर नहीं बिकेंगे और कन्या–पक्ष से बिना कुछ भी द्रव्य लिये कन्या–रत्न को ग्रहण करेंगे और इस प्रकार विवाह–संस्कार को पुनरुज्जीवित कर धर्म और समाज का कल्याण करेंगे। इस ठहरौनी अथवा तिलक की कुप्रथा की, जो महा अनर्थ का कारण है, सर्वथा इतिश्री कर देंगे।

डाक रजि. ग्वालियर संभाग–161 (R.M.S. Posting date 15th)

भा.शा.रजि. [illegible] 1-11

गीताध्ययन की सार्थकता

एक विद्वान् ब्राह्मण ने एक बार राजा के पास जाकर कहा- 'महाराज' ! मैंने धर्मग्रन्थों का अच्छा अध्ययन किया है। मैं आपको श्रीमद्‌भगवद्‌गीता पढ़ाना चाहता हूँ।' राजा विद्वान से अधिक चतुर था। उसने मन में विचारा-'जिस मनुष्य ने श्रीमद् भगवत गीता का अध्ययन किया होगा वह और भी अधिक आत्मचिन्तन करेगा, राजाओं के दरबार की प्रतिष्ठा और धन के पीछे थोड़े ही पड़ा रहेगा।' ऐसा विचार कर राजा ने ब्राह्मण से कहा- 'महाराज ! आपने स्वयं गीता का पूर्ण अध्ययन नहीं किया है। मैं आपको शिक्षक बनाने का वचन देता हूँ, परंतु आप अभी जाकर गीताका अध्ययन और अच्छी तरह कीजिये।' ब्राह्मण चला गया, परंतु वह बार-बार यही सोचता गया कि 'देखो तो राजा कितना बड़ा मूर्ख है ! वह कहता है कि आपने गीता का पूर्ण अध्ययन नहीं किया और मैं कई वर्षो से उसीका बराबर अध्ययन कर रहा हूँ।' उसने आकर एक बार गीता को फिर पढ़ा और राजा के सामने उपस्थिति हुआ। राजा ने पुनः वही बात दुहरायी और उसे विदा कर दिया। ब्राह्मण को इससे दुःख तो बहुत हुआ, परंतु उसने मन में विचारा कि 'राजा के इस प्रकार कहने का कुछ-न-कुछ मतलब अवश्य है।' वह चुपके से घर चला गया और अपने को कोठरी में बंद करके गीता का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने लगा। धीरे-धीरे गीता के गूढ अर्थ का प्रकाश उसकी बुद्धि पर पड़ने लगा और उसको स्पष्ट मालूम होने लगा कि 'सम्पत्ति, मान, द्रव्य और कीर्तिके लिये दरबार में या किसी दूसरी जगह दौड़ना व्यर्थ है।' उस दिन से वह दिन-रात एक चित्त से ईश्वर की आराधना करने लगा और राजा के पास नहीं गया। कुछ वर्षों के बाद राजा को ब्राह्मण का स्मरण आया और उसकी खोज करता हुआ वह स्वयं उसके घर गया। ब्राह्मण के दिव्य तेज तथा प्रेम को देखकर राजा उसके चरणों पर गिर पड़ा और बोला- 'महाराज ! अब आपने गीता के असली तत्त्व को समझा है; यदि मुझे अब आप अपना चेला बनाना चाहें तो मेरे लिये यह बड़ी प्रसन्नता की बात होगी'-

-श्रीरामकृष्ण परमहंस



सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए।

★ व्यवस्थापक

RH_4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,
अजमेर, राजस्थान

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी व प्रिन्ट लेजर कॉम से सज्जा करवाकर [illegible]कार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ [illegible] से प्रकाशित किया गया। सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 2454183